श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः
श्री
रामप्रकाश-शब्द-सुधाकर
दो भाग
तत्वार्थ दर्शिनी विपर्यय टीका
एवं
हरि ज्ञान—गर्भ चेतावनी सहित
स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"
उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)
कागा रोड़, जोधपुर – ३४२ ००६

राम ॐ राम

मंगल मंत्र

ॐविश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव

प्रार्थना मंत्र

ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥

ब्रह्म गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धी महि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ यजु० ३६/३

एक श्लोकी श्री रामायण-पाठ

आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्वा मृग काञ्चनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम् ॥
बालि निग्रहणं समुद्र तरणं च लङ्का पुरि दाहनम् ।
पश्चात् रावण कुम्भकरण हननं एतद्धि रामायणम् ॥ १ ॥

एक श्लोकी श्री मद्भागवत-पाठ

आदौ देवकी देव गर्भ जननं गोपि गृह वर्द्धनम् ।
माया पूतनं जीव ताप हरणं गोवर्धनो च धारणम् ॥
कंशच्छेद्न कौरवादि हननं कुन्ती सुताः च पालनम् ।
एतद्धि श्री मद्भागवत पुराण कथनं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ॥ २ ॥

एक श्लोकी महाभारत-पाठ

आदौ पाण्डव धृातराष्ट्र जननं लाक्षा गृहे दाहनम् ।
द्यूत श्री हरणं मत्स्या सु वेधनं लीला गौ हरणम् ॥
रणेऽवतीर्णाम् सन्धि क्रिया च वर्द्धनम् ।
पश्चाद् भीष्म् कौरवादि हननं एतद्धि महाभारतम् ।

श्री हरिगुरू राम सच्चिदानन्दाय नमः

श्री अनन्त श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज 'ब्रह्मलीन' के परम शिष्य

श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाश जी महाराज "वैरागी" कृत

श्री

रामप्रकाश-शब्द-सुधाकर

(दो भाग)

सर्व श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज कृत
विपर्यय भजनों की तत्वार्थ दर्शिनी टीका सहित

सनातन धर्मावलम्बन ग्रन्थों का प्राचीन पौराणिक भूगौल, पाखण्ड-खण्डन, गुरू-भक्ति, युक्त नीति-शोद्ध पूरित बोद्ध मय भजन एवं व्यवहारिक, (गृहस्थ) यौगिक, आध्यात्मिक तीनों का ज्ञान संगम गृहस्थोपयोगी हरि ज्ञान गर्भ चेतावनी मय उपदेश काव्य।

प्रकाशक

उत्तम आश्रम, कागा-मार्ग, जोधपुर - ३४२ ००६

वैष्णव सतसंग सभा

प्रकाशक	**स्वामी रामप्रकाशजी महाराज** **उत्तम आश्रम,** कागा मार्ग नागौरी द्वार बाहर, जोधपुर - ३४२ ००६ दूरभाष — (०२९१) ४७०२४
प्रतिरोध	पुनर्प्रकाशनादि सर्वाधिकार रचयिता द्वारा स्वरक्षित् (हमारी अधिकृत पुस्तकें भारत सरकार द्वारा पञ्जिकृत है)
प्रसारित	भारतीय सांस्कृतिक पर्वोत्सव रक्षाबन्धन के पावन ज्ञान - यज्ञ में समाहुति
प्रथमावृति मूल्य २५.००	उत्तमरामाब्द १२६, रामानन्दाब्द ६९५ ईसवी १९९५, वि. स. २०५२, शकाब्द १९१७, कृष्णाब्द ५२०७, सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,०९७
सुविधा	पुस्तक विक्रेताओं को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है ।बैक बिल्टी से या पूरी रकम प्राप्त होने पर ही किताबें भेजी जाती है । पत्र-व्यवहार हिन्दी में, जवाबी पत्र का प्रयोग करें ।
कम्पयूटर	**दि लैटर्स,** ई-५०२, कमला नेहरू नगर, जोधपुर - ९
मुद्रक	**शक्ति चन्द्र/ शतीशचन्द्र शर्मा,** शक्ति प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा - ११० ०३२ दूरभाष — (०११) २२८६३२०

रचयिता का प्रसाद —

दो शब्द

प्रस्तुत **"रामप्रकाश शब्द सुधाकर"** पुस्तिका के सभी भजन जिनका जीवन वैरागी व आध्यात्मिक गुरूकुल में बीता हो, उन्हीं के संकलित विचारोत्कृष भाव काव्य की यात्रा डायरी सन् ७७-८० से चुने हुए हैं, जिन्हें कतिपय कई प्रेमीजन यत्र-तत्र सतसंग संकीर्तन में गाया करते हैं । इन में बहुधा भक्ति ज्ञान जनित बौधिक हृदयोद्गार के शब्द हैं और कई समय-सम्प्रदाय तदरूप पाखण्ड-खण्डन, साधु-चाणक जन्य दर्शनार्थ आक्रोशित पद्य है । संभवत: वह दशा-ज्योति धर्म, विषया (बीसा अनुयायिक) मनमुखीजनों को अकुंश ताड़ित रूप वैदिक गुरू होंगे, जिससे अनेक पथ भ्रमित साधक शुभ दिशा के भावुक पात्र कल्याण भाजन बनेंगे ।

अंत में एक हरि ज्ञान-गर्भ चेतावनी भी दी है जो व्यवहारिक (गृहस्थ) यौगिक, आध्यात्मिक तीनों रूचि से गृहस्थोपयोगी सिद्ध होगी ।

कृतिकार स्वरचित अनेक काव्य पाण्डूलिपि ग्रन्थ प्रकाशनार्थ तैयार पड़े है, जैसे गुणग्राही उदार मना भक्तों का सहयोग मिलता रहेगा, वैसे क्रमानुसार पाठकों के हाथ देते रहने की आकांक्षा करता हूँ, जो ज्ञान यज्ञ का प्रसार पुण्य भाग होगा ।

आज कल धर्म-ग्रन्थों का प्रकाशन भार प्रचार प्रसार प्राय: दु:साध्य बन रहा है, समय गतिं कागज आदि मँहगाई के कारणों से व्यवस्था बनाना भी कठिन हो रहा है, किंतु कुल मिला कर यदि सभी जिज्ञासु साधक सतसंग प्रेमीजनों के शान्ति मनोरंजनों में अनुभव जन्य ज्ञान सार्थक हुआ तो प्रकाशन-प्रबन्ध प्रयास भी सफल रहेगा ।

शब्दाक्षर द्दष्टि दोष असावधित त्रुटि को सुधार कर पठन करने के देव कार्य में ही पाठकों का लाभ निहित है ।

उत्तम आश्रम, जोधपुर-६
रक्षा बन्धन, २०३७

संत रामप्रकाशाचार्य

श्यामानन लेखनी से —

द्वितीयावृति की प्रस्तावना

श्री सतगुरूकी परम कृपा से प्रस्तुत द्वितीय संस्करण में **"रामप्रकाश शब्द सुधाकर"** के प्रथम भाग परिवर्द्धन के साथ द्वितीय भाग का भी प्रकाशन करते हुए परमादरणीय पूज्य पाद गुरूदेव श्री स्वामी! उत्तमराम ही महाराज की विपयर्य जनक पूर्व **"उत्तमराम भजन प्रकाश"** में प्रकाशित सात भजनों की सरल **"उत्तम तत्वार्थ दर्शिनी टीका"** भी पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत की जा रही है ।

प्रथम भाग में भी कई छुटकर नवीन भजनों को स्थान देकर पुस्तिका को सुन्दरता प्रदान की गई है और प्रसिद्ध श्री राम जी के शिष्य लाहौर निवासी **कवि-सन्त हरिसिंह जी** कृत **"उत्तम ज्ञान कटारी"** देकर पाखण्ड-खण्डन एवं वाच्यार्थी ज्ञानियाँ को मार्ग दर्शन दिया है ।

आशा है परिवर्द्धित संस्करण से पाठकों को बौद्धिक लाभ होगा ।

उत्तम आश्रम
(आचार्य पीठ) जोधपुर
०२९१ दूरभाष - ४७०२४

विश्व हितेच्छु
स्वामी रामप्रकाशाचार्य "अच्युत"
गीता जयन्ति वि॰ २०५२

अथ श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर की

मार्ग-दर्शिका विषय-सूची

प्रथम भाग

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक भजन	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठांक
५४	संत भया जगत में देख लो	३६
५५	पन्थ पाखण्ड वाला जान के	३६
५६	मन रे ! दुर्लभ नर तन पायो	३७
५७	मन रे ! लख चौरासी बह आयो	३८
५८	मन रे ! नर तन रतन सुधारा	३८
५९	मेरे सतगुरू परम दयाल है	३९
६०	धन सतगुरु का दीदार है	४०
६१	मोहि एक तुम्हारी आश है	४०
६२	सतगुरू जी के उपकार की	४१
६३	पन्थ पायो परम कल्यान को	४१
६४	सतगुरू जी के उपकार में	४२
६५	गुरू कृपा अभय पद पाय है	४२
६६	मैं सतगुरू उत्तम पाय के	४३
६७	भव को साधन विसराय के	४३
६८	युग चारों का प्रमाण है	४४
६९	तूँ बैठा आप भुलाय के	४५
७०	क्यों भूल रहा निज आप को	४५
७१	कर खबर आप निरवान की	४६
७२	सतगुरू आनन्द रूप है	४६
७३	सतसंग में चालो सखी	४७
७४	हेली ए ! संत शास्त्र गीता कहै	४८

क्रमांक भजन	विषयानुक्रमणिका	पृष्ठांक

छन्द-प्रबन्ध काव्य

द्वितीय भाग सूची

卐

॥श्री हरि गुरू सच्चिदानन्दाय नमः॥

अचलोत्तम आरती

हरदम हरहम होवे आरती, कैसा साज सजाऊँ मैं।
सतगुरू ईश्वर सन्त ब्रह्म हो, कैसे आपको ध्याऊँ मैं। टेर।
चन्द्र-सूर्य ज्योति है जगमग, कैसा दीप दिखाऊँ मैं।
धरा धाम का थाल सजा है, कैसी थाली चाऊँ मैं।१।
सिंधु गंगादिक जल भरे है, झारी कैसी लाऊँ मैं।
पुष्प अपार क्यारियाँ पूरी, कैसा फूल चढ़ाऊँ मैं।२।
केसर विविध चन्दन चढ़ा है, कैसा तिलक चढ़ाऊँ मैं।
फल अनेकों तेरे आगे, कहाँ से लाय धराऊँ मैं।३।
ब्रह्मण्ड में निज आप विराजे, कैसा मन्दिर बनाऊँ मैं।
घट घट व्यापक अन्तर्यामी, कैसा शब्द सुनाऊँ मैं।४।
संत ऋषि मुनि सुर नर गावे, कैसी राग बजाऊँ मैं।
वेद पुराण उपनिषद् कथते, स्तुति कैसी गाऊँ मैं।५।
शेष गणेश धनेश शारदा, गाय थके सरसाऊँ मैं।
हरि हर ब्रह्मा करे आरती, कैसा नाद घुराऊँ मैं।६।
कण कण रमता राम घटो घट, कैसी मूर्ति बनाऊँ मैं।
ब्रह्मण्ड रचना सकल तुम्हारी, कैसो भेद दरसाऊँ मैं।७।
"उत्तमराम" सच्चिदानन्द चेतन, कहां भेंट ले आऊँ मैं।
"रामप्रकाश" शरणागत वन्दन, वार वार बलि जाऊँ मैं।८।

श्री हरि गुरू राम सच्चिदानन्दायनमः

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज के परम शिष्य

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशजी महाराज कृत

श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर

(प्रथम भाग)

मंगलाचरण-दोहा छन्द

सतगुरु उत्तम गणपति, शारद संत सुजान।
शिव हरि गण अवतार को, नित प्रणाम विज्ञान ॥ १ ॥
उत्तमराम सत देव को, बारम्बार प्रणाम।
रामप्रकाश सत चित परम, व्यापक आठोंयाम ॥ २ ॥
ज्ञानी ध्यानी भक्त शुभ, सतगुरु संत महंत।
जन त्रिकाल बन्धन हरण, नित प्रणाम अनंत ॥ ३ ॥
मुक्त करण बन्धन हरण, भरण विश्व सुख संत।
जन त्रिकाल रंजन करण, उत्तम प्रणाम अनंत ॥ ४ ॥
गणपति हरि हर संत गुरु, प्रसन्न होय मोहि देहु।
ऋद्धि सिद्धि संपति लाभ शुभ, ज्ञान गति वर एहु ॥ ५ ॥

गणपति ऋधि सिद्धि सहित में, लाभ शुभ हर गौरि।
"रामप्रकाश" भर दीजिये, नहिं चाहिये कछु औरि ॥ ६ ॥

सोरठा छन्द

सतगुरु तार्‍यो मोहिं, उत्तराम कृपालु ने।
भव को दीन्हो खोहि, ब्रह्मवेता दयालु ने ॥ ७ ॥
सतगुरु परम कृपाल, उत्तम ब्रह्मवेता महा।
पूरण ब्रह्म दयाल, नमो नमः निशि दिन सदा ॥ ८ ॥
उत्तम रामप्रकाश, छाय रहै ब्रह्मण्ड में।
संत गुरु हरिदास, एक रूप लख नमो तिहिं ॥ ९ ॥
सतगुरु उत्तमराम, अजर अमर व्यापक महा।
सतचित आनन्द काम, नमो जु रामप्रकाश तिहि ॥ १० ॥
अनन्त कोटि प्रणाम, पल पल घड़ि घड़ि रात दिन।
समर्थ उत्तमराम, रामप्रकाश उर वास करि ॥ ११ ॥
हरदम हाज़र होय, उत्तमराम उत्तम सदा।
रामप्रकाश उरजोय, हरदम मैं प्रणाम कर ॥ १२ ॥

श्री सतगुरू प्रसाद - महिमा अष्टक प्रारंभ

इन्दव छन्द

आप अगोचर व्यापक पूर्ण, निर्गुण ते सर्गुण वपु धारो।
तारणहार उजागर पाकर, शरण गही अब आप उभारो ॥
हूं गुणहीन पुमान न रंचक, औगुण मूल अनूप धूतारो।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ १ ॥

हूं गुणचोर पापी घनघोर रू, कामी रू क्रोध को मूल अखारो ।
व्यशन विकार सभी तन भीतर, क्या मुखते अरदास उचारो ॥
दोष अपार अगार अगार हुँ, क्या विधि आप ही आप उधारो ।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ २ ॥
निर्लज ऑख हठी मन पामर, साधन एक न होय हमारो ।
योग न याग न भाग अभागजु, ना धन सूर सपूत सुधारो ॥
मोह को मूल रू लोभ सपूल हूं, काम को कूल कपूत अखारो ।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ ३ ॥
हिंसक हूँ मन वाणी कर्म ते, घातक पातक मूल असारो ।
मात पिता बिनु बाँधव हीन हूँ, जाति विहीन हूँ न्याति विसारो ॥
क्या मुख औगुण खोल कहूँ अब, निर्बल थाक गयो मुख म्हारो ।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ ४ ॥
तो प्रसाद वन्दे जग भीतर, भांतिन भांतिन मौद बढ़ारो ।
तो कृपा कर आनन्द मंगल, गावत मंगल ज्ञान सुधारो ॥
भक्त बधावत सों फल पावत, गुरूकृपा पद लौकिक धारो ।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ ५ ॥
तो प्रसाद सुहावन पावन, ढोल घुरावत गावत प्यारो ।
तव महिमा गुनी साज बजे सब, उडे गुलाल गुलाब गुजारो ॥
तव कृपा जन ज्ञान गुणी धन, पावत लावत मान बधारो ।
"उत्तमराम" गुरूवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो ॥ ६ ॥

तेरी शरणागत पाय भयो भल, वन्दन योग सु संत उदारो।
तेरी शरणागत आय भयोवर, तारण तरण सुधारण वारो॥
तेरी शरणागत गोविन्द गायके, आनन्द रूप भयो मतवारो।
"उत्तमराम" गुरुवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो॥७॥
उत्तम गुरु पद गावत पावत, मेटत भेंटत भेंटनवारो।
उत्तम शिष्य सुहावत आवत, पूर्व भाग भला भल सारो॥
उत्तमराम गुरुश्री उत्तम, भाग भला जन सोहि सुधारो।
"उत्तमराम" गुरुवर रक्षक, रामप्रकाश है दास तुम्हारो॥८॥

भजन (१) राग देश धनाश्री पद

सईयों ! गुरु उत्तम प्रमानी ए।
शरणे जाय जिज्ञासू पूरा, निज पहिचानी ए॥टेर॥
नजर निहाल करे गुरु सामर्थ, प्रमा विज्ञानी ए।
पाप रू ताप कलेश मिटावे, आनन्द खानी ए॥ १ ॥
शुद्ध सतोगुण प्रकृति पुण्य ते, देह धरानी ए।
निर्गुण आप सर्गुण हो आये, परम कल्यानी ए॥ २ ॥
महरम मोज महा सुखदायी, सतगुरु सुजानी ए।
आवरण अज्ञान सो भ्रम कटावे, अद्वैत द्धानी ए॥ ३ ॥
"उत्तमराम" ब्रह्मवेता ब्रह्मवत, परम सुज्ञानी ए।
"रामप्रकाश" चरण पद परस्या, अद्वय अबानी ए॥ ४ ॥

(१) दाँये–सर्वोपर अनन्त श्री स्वामी जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य जी महाराज (काशी)
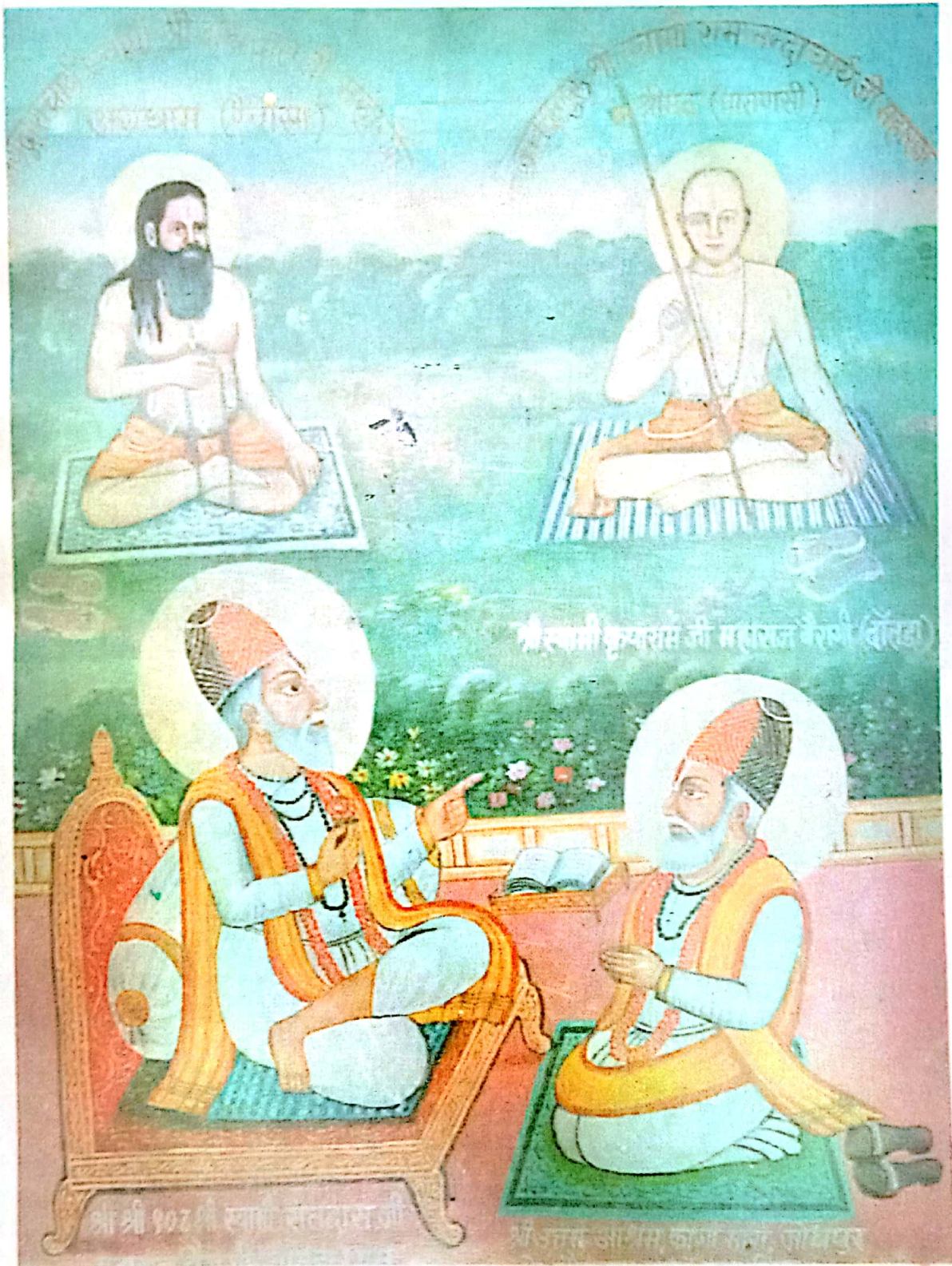
(२) बांये–सर्वश्री स्वामी अग्रदास जी महाराज (रेवासा)

(३) नीचे बांये–श्री श्री १०८ श्री स्वामी सन्तदास जी महाराज (दान्तड़ा

(४) नीचे दांये–श्री स्वामी कृपारामजी महाराज (दान्तड़ा)

गुरू अनन्त श्री रामानन्दाचार्य श्री स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज (काशी)
बीच में – श्री श्री १०८ श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज (अग्रद्वाराचार्य रेवासा)
बांये – श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज (उत्तम आश्रम, जोधपुर)

दर्जनाधिक्य सत्शास्त्रों के रचयिता

– तत्वज्ञश्रीस्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

महन्त–श्री उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागामार्ग जोधपुर-३४२००६

भजन (२) राग आसावरी पद टोडी

गुरुजी ! भव से पार उतारो।

आयो चरण शरण गुरु सामर्थ, मेरी ओर निहारो ॥टेर।
मैं हूं दीन अनाथ अज्ञानी, सतगुरू शिष्य तुम्हारो।
करणी हीन दान व्रत नाहिं, दुगुणि पाप पिटारो ॥ १ ॥
दुर्जन स्वभाव क्रोधी अति पामर, पापी औगुण गारो।
नमक हराम लोभी मद मूर्ख, शरणागत हूँ थारो ॥ २ ॥
जप तप योग क्रिया धन नाहिं, साधन हीन विचारो।
नियम रू ध्यान ज्ञान गुण नाही, भव भव दुर्बल थारो ॥ ३ ॥
दीन दयाल कृपाल अनादू, अपनो विरद संभारो।
पर उपकारी अनंत सुधारो, अब तो मोहि उधारो ॥ ४ ॥
निर्बल के बल धन निर्धन के, अशरण शरण सहारो।
जनम मरण अज्ञान मिटावो, करदो जग से न्यारो ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" गुरु ब्रह्मवेता, उत्तम शील उदारो।
"रामप्रकाश" उत्तम के शरणे, पायो आदू द्वारो ॥ ६ ॥

भजन (३) राग आसावरी पद

धन गुरू ! मैं शरणागत तेरे

दीन दयाल कृपा निधि पूरण, सामर्थ उत्तम मेरे ॥ टेर ॥
ज्ञान ध्यान युगति गति भगति, मुगति कारण हेरे।
मो से दीन अनाथ उद्धारे, धन धन वे सब चेरे ॥ १ ॥
हो ब्रह्मचारी निजानन्द ज्ञानी, योगी अदृष्ट अखेरे।
मोहनि मूरत सोहनि सूरत, काटो भव के फेरे ॥ २ ॥

योग न युगति भोग न भुगति, जप तप हीन बडेरे।
माया जाल चौरासी काटो, भव भव बन्धन केरे ॥ ३ ॥
मैं कर्मी अघ पामर पूरा, लागे भ्रम के घेरे।
अशरण शरण अभय गति दाता, आर्त विनती टेरे ॥ ४ ॥
"उत्तमराम" उत्तम गुरु ज्ञानी, ब्रह्मवेता ब्रह्म डेरे।
"रामप्रकाश" की आर्त अरजी, गुरु द्वार के सेरे ॥ ५ ॥

भजन (४) राग आसावरी पद

मनारे ! धन सतगुरू हमारा।
ब्रह्म श्रौत्रिय ब्रह्म निष्ठ उजागर, ज्ञान रूप करतारा ॥ टेर ॥
निर्मोही निष्काम निष्प्रेही, ज्ञान ध्यान गम धारा।
युगति योग भक्ति पद पूर्ण, दीनन के दातारा ॥ १ ॥
धीरज ज्ञान समर्थ गुण सागर, शरणागत रखवारा।
ध्यान समाधि आगर पद दाता, मोहनि मूर्ति वारा ॥ २ ॥
शील तपी अनूपम योद्धा, वरद अभय प्रद सारा।
परमार्थ पंथ सुधारण कारण, लीन्हा जग अवतारा ॥ ३ ॥
जिसने आतम महरम जाण्या, युक्ति ज्ञान विचारा।
रहस्य बोद्ध चरण पद परस्या, ताका हुआ निस्तारा ॥ ४ ॥
"उत्तमराम" उत्तम गुरु केवल, ब्रह्मज्ञानी मतवारा।
"रामप्रकाश" धन भागी पाये, निर्भय शरण उदारा ॥ ५ ॥

भजन (५) राग आसावरी पद

अब हम ! गुरू कृपा गम पाई ।

ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप अभेदी, मुक्त स्वरूप सदाई ॥ टेर ॥

जप तप क्रिया साधन लागा, नीति नियम निभाई ।

नाना देव अनुष्ठान धारणा, तांत्रिक योग मिलाई ॥ १ ॥

भटकत भाव भेद नही लाधा, भूला भव भ्रमाई ।

सतगुरु बिना कोई नहिं पावे, शास्त्र संत श्रुति गाई ॥ २ ॥

अतरंग धार त्याग बहिरंग को, समझ गुरु शरणाई ।

धर विश्वास श्रद्धा गुरू स्मरण, लौ लगनी लिवलाई ॥ ३ ॥

पन्द्रह हजार वाणी कथ लिख दी, गद्य-पद्य ठहराई ।

शास्त्र अनेक युक्ति मय मुक्ति, गुरूगम अनुभव आई ॥ ४ ॥

"रामप्रकाश" है शब्द विवेकी, झूंठी माने नाई ।

सतगुरु "उत्तमराम" गुरु सामर्थ, पाया घट के माई ॥ ५ ॥

भजन (६) राग आसावरी पद

अब मोहि ! सतगुरु भेद लखाया ।

जीव नाम जाहि को कहिये, निर्णय भेद समझाया ॥ टेर ॥

पाँच ज्ञान-कर्मेन्द्रिय पांचों, पांचों प्राण समाया ।

मन बुद्धि सतरह में शुक्ष्म, चिदाभास मिल भाया ॥ १ ॥

ज्ञान-कर्मेन्द्रिय पांचो प्राणा, अन्तःकरण भलकाया ।

अज्ञान, वासना, अविद्या, कर्म ये, अष्ठपुरी दरसाया ॥ २ ॥

परोक्ष, अपरोक्ष, भ्रान्ति, अज्ञाना, हर्ष शोक विधि लाया ।

अस्त-अभान दो आवर्ण शक्ति, अवस्था सात लगाया ॥ ३ ॥

भजन (८) राग आसावरी पद

साधो भाई ! कृपा चार सुखदाई ।
पूर्व भाग चौरासी टूटी, शास्त्र संत विगताई ॥ टेर ॥
ईश्वर कृपा मानुष तन पाया, शुभ कुल रूप सुहाई ।
सुख संपत्ति सुमति विद्या में, गुण पूर्ण चतुराई ॥ १ ॥
वेद कृपा मति उज्वल स्मृति, ज्ञान कला पण्डिताई ।
नाना युगति भेद बताकर, साधन सर्व सजाई ॥ २ ॥
गुरु कृपा सतगुरु की पूर्ण, युक्ति भक्ति आई ।
भक्ति मुक्ति परमार्थ जाण्या, ध्यान यथार्थ लाई ॥ ३ ॥
आप कृपा सतसंगत सेती, परम पुरूषार्थ पाई ।
कर्म योग उपासन नीति, साधक चित उपाई ॥ ४ ॥
सतगुरु "उत्तमराम" ब्रह्मवेता, उत्तम बात बताई ।
"रामप्रकाश" परमानन्द परस्या, जीवन सफल बनाई ॥ ५ ॥

प्राचीन भौगोलिक विवरण

भजन (९) राग आसावरी पद

साधो भाई ! घट का खोज विचारा ।
सात द्वीप पर्वत सिंधु लेखा, देखा न्यारा न्यारा ॥ टेर ॥
अस्थि में ज़म्बु, शाक मज्जा में, नाड़ी में क्रौञ्च पसारा ।
त्वचा शाल्मलि, कुश मांस में, प्लक्ष रोम विस्तारा ॥ १ ॥
नख में पुष्कर द्वीप जान ले, सात धातु रसवारा ।
मूत्र में क्षार, क्षीर थनवासा, मज्जा घृतोद पुकारा ॥ २ ॥

श्लेष्म सुरा, दधि शोणित में, रस में ईक्षुरस धारा।
कण्ठ लम्बिका नाड़ी में सिंधु, स्वादक मधु सुधारा ॥ ३ ॥
हृदय मेरू कोण मंदराचल, दक्षिण कैलाश उजारा।
वाम कोण हिमाचल पर्वत, ता पर तन थित थारा ॥ ४ ॥
दक्षिण रेखा गन्धमादन जानो, उर्ध निषध मतवारा।
वाम रेखा में रमणक रमिया, पर्वत सात उदारा ॥ ५ ॥
पुराण शास्त्र संत बतावे, गुरु उत्तम ललकारा।
"रामप्रकाश" शोधे घट मुक्ति, पावे गुरु मुख प्यारा ॥ ६ ॥

भजन (१०) राग आसावरी पद

साधोभाई ! नौ ग्रह तन के लागा।
ग्रह बिना जीवन नहीं रहता, जग में नाहिं मागा ॥ टेर ॥
नाभि में शनि, गुरु रक्त में, शुक्र वीर्य में तागा।
बुद्ध हृदय में बोध कराता, मुख में राहु रागा ॥ १ ॥
नैनों में मंगल का वासा, केतु कण्ठ अथागा।
त्रिकुटी पर भृकूँटी में, शीश सोम का जागा ॥ २ ॥
भँवर गुफा में ज्योति प्रकट, रवि दर्शन सुख सागा।
ग्रह गोचर में भव-भव बंधिया, जन्म मरण का दागा ॥ ३ ॥
ब्रह्मरन्ध्र में सतगुरु स्वामी, आप अगोचर आगा।
दुर्मति दोष कटे दर्शन ते, लखता संत सभागा ॥ ४ ॥
सतगुरु स्वामी उत्तम लखाया, उत्तमराम का तागा।
"रामप्रकाश" ग्रह बन्धन काट्या, भ्रम भूत भव भागा ॥ ५ ॥

भजन (११) राग आसावरी पद

साधो भाई ! सात द्वीप भूमि आई ।
शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दर्शाई ॥ टेर ॥
अट्ठारह लाख योजन जम्बू में, भूमि नर बसाई ।
सैंतीस लाख योजन प्लक्ष में, यक्ष सृष्टि कथ गाई ॥ १ ॥
तिहतर लाख योजन शाल्मलि, किन्नर वास कहाई ।
एक सौ पैंतालीस लाख योजन हैं, कुशद्वीप ऋषितांई ॥ २ ॥
दो सौ नवासी लाख योजन है, क्रौञ्चद्वीप दिव्याई ।
छः सौ तेरह लाख योजन है, शाकद्वीप सुख पाई ॥ ३ ॥
बारह सौ पच्चीस लाख योजन, पुष्कर द्वीप हरिराई ।
सतरह कोटि योजन जल है, सागर सात सवाई ॥ ४ ॥
नौ कोटि योजन पर्वत है, सीमा क्षेत्र लखाई ।
कुल कोटि पचास योजन में, भूमि बास कह गाई ॥ ५ ॥
लोक-अलोक पाताल स्वर्ग लो, चौदह लोक या माई ।
"रामप्रकाश" वैराट दर्शन में, सृष्टि ख्याल रचाई ॥ ६ ॥

भजन (१२) राग आसावरी पद-१

साधो भाई ! जम्बू द्वीप कथ गाई ।
शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने,' निर्णय कर दरशाई ॥ टेर ॥
इलावृत, हरिवर्ष, किम्पुरुष ये, भरत, केतुमाल सुहाई ।
भद्रासव, कुरु, रम्यक, इलावृत नौखण्ड भूमि बसाई ॥ १ ॥
स्वर्णप्रस्थ रु चन्द्रप्रस्थ वो, आवर्तन लंकाराई ।
मन्दहरिण रमणक सिंहल पांचजन्य, उपद्वीप अठवाई ॥ २ ॥

मदिराचल हिमाचल मेरू, अर्बुद कैलाश सुहाई।
बद्री आदि दस पर्वत यामे, जम्बू द्वीप के भाई॥ ३॥
सरयु गंगा कावेरी यमुना, धन्या मंदाकिनी आई।
कन्याकुमारी सरस्वति नदियाँ, भारत स्रोत अथाई॥ ४॥
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, चारों वर्ण कहाई।
वैदिक व्यवस्था समाज रचना, गुण कर्म अधिकाई॥ ५॥
प्रियव्रत पुत्र अग्निध्र राजा, जम्बू द्वीप सुखवाई।
"रामप्रकाश" चूड़ामणि राजा, धर्म प्रसाद सदाई॥ ६॥

भजन (१३) राग आसावरी पद-२

साधो भाई ! प्लक्ष द्वीप कथ गाई।
शास्त्र-सार पुराण बखाने, निर्णय कर दरशाई॥ टेर॥
शिव, यवस, सुभद्र खण्ड है, शान्त, क्षेम सुखदाई।
अमृत, अभय मिल सात खण्ड यह, भूमि विभाग बताई॥ १॥
मणिकूट, वज्रकूट, सुपर्णा, इन्द्रसेन, मेघ मालाई।
ज्योतिष्मानः हरिण्यष्ठीव है, पर्वत सात या माई॥ २॥
अरुणा, नृम्णा, अङ्गिरसी ये, सावित्री, सुप्रभाता पाई।
ऋतम्भरा और सत्यम्भरा लो, नदि सात सुखवाई॥ ३॥
हंस, पतंग, उर्ध्वायन जानो, सत्यांग, कर्म सुहाई।
चार वर्ण सामाजिक रचना, व्यवस्था अलौकिक आई॥ ४॥
प्रियव्रत पुत्र इध्मजिह्वा ने, प्लक्ष द्वीप बसाई।
"रामप्रकाश" चक्रवर्ती राजा, पुण्य प्रताप सदाई॥ ५॥

भजन (१४) राग आसावरी पद-३

साधो भाई ! शाल्मलि द्वीप कथ गाई ।

शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दर्शाई ॥ टेर ॥

सुरोचन, सोमनस्य रु रमणक, देव वर्ष, नाम गणाई ।

पारिभद्र, आप्यायन, अविज्ञाता, सात खण्ड है भाई ॥ १ ॥

स्वरस, शतश्रृङ्ग वामदेव है, कुन्द मुकुन्द कहाई ।

पुष्प वर्ष, सहस्त्र श्रुति मिल, पर्वत सात धराई ॥ २ ॥

अनुमति, सिनीवालि, सरस्वती है, कुहु, रजनी लौ लाई ।

नन्दा, राका, सात नदी है, प्रसिद्ध तीर्थ सदाई ॥ ३ ॥

श्रुतधर, वीर्यधर और वसुन्धर, इषन्धर पुण्य कमाई ।

चार वर्ण में पावन व्यवस्था, रचना समाज बनाई ॥ ४ ॥

प्रियव्रत पुत्र यज्ञबाहू से, शाल्मलि द्वीप यों थाई ।

"रामप्रकाश" चक्रवर्ती आदि, पुण्य राज बसाई ॥ ५ ॥

भजन (१५) राग आसावरी पद-४

साधो भाई ! कुश द्वीप कथ गाई ।

शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने निर्णय कर दरशाई ॥ टेर ॥

वसु, वसुदान, द्ध्रढ़ रुचि जानो, नाभि गुप्त नाम कहाई ।

स्तुत्यव्रत, विविक्त, वामदेव, खण्ड सात यह भाई ॥ १ ॥

चक्र, चतुशृङ्ग कपिल, द्रविण ओ, चित्रकूट पदपाई ।

देवानीक, ऊधर्वरोमा सातों, पर्वत नाम धराई ॥ २ ॥

रसकुल्या, मधुकुल्या ये ही, मित्रविन्दा नदियाई ।

श्रुतविन्दा, देवगर्भा, मंत्रमाला, घृतच्युता सप्त लाई ॥ ३ ॥

कुशल, कोविद, अभियुक्त है, कुलक वर्ण चव ठाई।
वेद व्यवस्था समाज सुरचना, धर्मक कर्म कमाई ॥ ४ ॥
प्रियव्रत पुत्र हिरण्यरेता ने, कुश द्वीप धर्मराई।
"रामप्रकाश" भागवत भाखे, चक्रवर्ती सुखदाई ॥ ५ ॥

भजन (१६) राग आसावरी पद-५

साधो भाई ! क्रोञ्च द्वीप कथ गाई।
शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दरशाई ॥ टेर ॥
आम, मधुरूहु, मेघपृष्ट, सुधामा, भ्राजिक विभाग बसाई।
लोहितार्ण, वनस्पति सातों, खण्ड भाग करवाई ॥ १ ॥
शुल्क, वर्द्धमान, उपवाहन, भोजन, नन्द, नन्दन सुखदाई।
सर्वतोभद्र, पर्वत यह सातों, खण्ड विभाग बताई ॥ २ ॥
अमृतौघा, अभया, आर्यका, तीर्थवती, शुक्ला माई।
पवित्रवती, वृति रूपवती है, सात नदी बह भाई ॥ ३ ॥
पुरुष, क्रषभ, द्रविण अरु देवक, चारों वर्ण सदाई।
रचना सुन्दर समाज सुव्यवस्था, धार्मिक बसे सुहाई ॥ ४ ॥
प्रियव्रत पुत्र धृतपृष्ट से, क्रोंच द्वीप यों थाई।
"रामप्रकाश" मानव सृष्टि में, आदि राज बनाई ॥ ५ ॥

भजन (१७) राग आसावरी पद-६

साधो भाई ! शाक द्वीप कथ गाई।
शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दरशाई ॥ टेर ॥
पुरोजव, मनोजव, धुम्रनीक है, चित्ररेफ लख भाई।
विश्वधार, पवमान, बहुरूपा, सातों खण्ड बसाई ॥ १ ॥

ईशान, उरुश्रृङ्ग बलभद्र है, शतकेसर वृद्धताई ।
सहस्त्रोत, देवपाल, महानस, पर्वत सात बताई ॥ २ ॥
अनवा, आयुर्दा,उभय स्पृष्टि है, अपराजिता बहलाई ।
सहस्त्रश्रुति पञ्चपदी, निजधृति ये, सात नदि सुखदाई ॥ ३ ॥
ऋतव्रत, सत्यव्रत, और दानव्रत, अनुव्रत नाम धराई ।
चार वर्ण में वैदिक व्यवस्था, रचना समाज बनाई ॥ ४ ॥
प्रियव्रत पुत्र मेधातिथी की, शाक द्वीप महिमाई ।
"रामप्रकाश" भागवत भाखे, पंचम स्कन्ध सुहाई ॥ ५ ॥

भजन (१८) राग आसावरी पद-७

साधों भाई ! पुष्कर द्वीप कथ गाई ।
शास्त्र-युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दरशाई ॥टेर ॥
रमणक, धातकि दोय खण्ड है, ध्रुव साकेत कहाई ।
लोकालोक का पर्वत एक है, दोय भाग ठहराई ॥ १ ॥
सरयु, गंगा नदि दोय पर, राज करे रघुराई ।
प्रियव्रत पुत्र वीतिहोत्र ने, पुष्कर द्वीप बसाई ॥ २ ॥
वैष्णव ज्ञानी बसे सुखद से, अच्युत गौत्र पाई ।
रामस्नेही उत्तम ब्रह्मवेता, हरि में जाय समाई ॥ ३ ॥
"उत्तमराम" जसधारी उत्तम, गाडी ज्ञान चलाई ।
"रामप्रकाश" निर्भय का डंका, पाय अभय पद भाई ॥ ४ ॥

भजन (१९) राग आसावरी पद

साधो भाई ! भूमि विभाग कथ गाई ।
शास्त्र युक्ति पुराण बखाने, निर्णय कर दरशाई ॥ टेर ॥

शक्ति मूर्ति चक्रवर्ती राजा, प्रियव्रत विभाग कराई।
सात पुत्र को द्वीप राज यों, बाँट्यो प्रताप बसाई॥ १ ॥
राजा अग्निध्र जम्बू द्वीप में, नव खण्ड भूमि बंटाई।
इध्मजिह्वा ने प्लक्ष द्वीप में, सातों खण्ड बनाई॥ २ ॥
यज्ञबाहू ने शाल्मलि द्वीप में, खण्ड सात किये भाई।
हिरण्यरेता ने कुश द्वीप में, खण्ड सात करवाई॥ ३ ॥
धृतपृष्ट ने क्रोंच द्वीप में, पुत्र सात खण्ड लाई।
मेधातिथि ने शाक द्वीप में, सात खण्ड बंटवाई॥ ४ ॥
वीतिहोत्र ने पुष्कर द्वीप में, दोय खण्ड विगताई।
द्वीप ने खण्ड विखण्ड प्रखण्ड कर, वंशज राज सुहाई॥ ५ ॥
सात द्वीप में खण्ड छैंयालिस, भूमि विभाग बताई।
"रामप्रकाश" भूलो मत भैया, साख इतिहास लिखाई॥ ६ ॥

भजन (२०) राग आसावरी पद

साधोभाई ! पुराण इतिहास बतावे।
सातद्वीप में सात सिन्धु है, छैयालिस खण्ड सुहावे॥ टेर ॥
पचास करोड़ योजन पृथ्वी में, तरुवर कोटि तेरावे।
नव कोटि योजन पर्वत है, सतरह सागर के गावे॥ १ ॥
ग्यारह करोड़ योजन में सृष्ठि, दानव देव बसावे।
मानव किन्नर यक्ष गान्धर्व मिल, नाना भेद रचावे॥ २ ॥
जम्बू द्वीप में है लवणोदक, प्लक्ष में मदिरा बहावे।
कुश द्वीप में मधु सिन्धु है, शाल्मलि ईक्षु रस पावे॥ ३ ॥

क्रोञ्च द्वीप में घृत सिन्धु है, शाक द्वीप दधि लावे ।
पुष्कर द्वीप में क्षीर सागर है, ग्रन्थ प्रमाण फरमावे ॥ ४ ॥
ईश्वर तन वैराट के माहि, ब्रह्मण्ड कोटि लखावे ।
रोम रोम में सृष्टि अनन्तों, ज्ञानी जन विगतावे ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" गुरु ब्रह्मवेता, उत्तम ज्ञान सुझावे ।
"रामप्रकाश" लखि हरि महिमा, सुन सुन के हरषावे ॥ ६ ॥

भजन (२१) राग आसावरी पद

साधो भाई ! प्राण गमन जब आवे ।
कर्म विपाक तजे यह देही, शुक्ष्म तन गमन करावे ॥ टेर ॥
लिंग द्वार ते प्राण जु निकले, नवलख योंनि पावे ।
गुदा द्वार से प्राण पठायो, एकादश कीट लखावे ॥ १ ॥
नाक ते प्राण पशु बन भोगे, तीस लाख भुगतावे ।
श्रवण से गये देव यक्ष मानव, चार लाख में लावे ॥ २ ॥
मुख ते तजे स्थावर होवे, बीस लाख लिव गावे ।
चक्षु गोलक प्राण गये ते, दश लख पक्षी धावे ॥ ३ ॥
दशवें ते निज अमरलोक में, योगी मुक्ति पावे ।
ज्ञानी ज्ञान अग्नि मय मुक्ति, समुचित कर्म जलावे ॥ ४ ॥
"उत्तमराम" की उत्तम कृपा, उत्तम माहि समावे ।
"रामप्रकाश" चौरासी टूटी, जीवन मुक्ति निरदावे ॥ ५ ॥

भजन (२२) राग आसावरी पद

साधो भाई ! करो विचार प्रमाना ।
चौदह लोक में एक लोक का, प्रकट सार लखाना ॥ टेर ॥

नौ करोड़ इकावन लख योजन, मान सरोवर माना।
आठ करोड़ उनचालीस लाख पर, स्वर्ण भूमि बखाना ॥ १ ॥
सतरह कोटि योजन सागर है, जल महिमा कह नाना।
नौ कोटि योजन पर्वत में, द्वीप सन्धि कहलाना ॥ २ ॥
चौबीस कोटि योजन भूमि, जन धन कृषि जाना।
पचास कोटि योजन थल जानो, महिमा भौतिक थाना ॥ ३ ॥
छतीस कोटि योजन भूमि में, सूर्य प्रकाश पुराना।
चौदह कोटि योजन महिमा, मणि ज्योति बिखराना ॥ ४ ॥
सात द्वीप में खण्ड छैंयालीस, एक लोक का गाना।
ईश्वर वैराट शरीर रोम में, भूलोक परवाना ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" गुरु सार लखाई, परम यथार्थ पाना।
"रामप्रकाश" सब अद्‌भुत महिमा, शास्त्र संत विगताना ॥ ६ ॥

भजन (२३) राग आसवरी पद

साधो भाई ! लौक चौदह तन माई।
पुरान ग्रन्थ संत भाखे योही, निश्चय या विधि पाई ॥ टेर ॥
पाँव नीचे तल, पावों वितल पर, जानु सुतल महिमाई।
साथल महातल, मूल तलातल, कटि पाताल सुहाई ॥ १ ॥
गुह्य प्रदेश रसातल कहते, सात नीचे के गाई।
तन वैराट थाट है इसमें, ब्रह्मण्ड पिण्ड में आई ॥ २ ॥
नाभि में भू, भुव उदर में, हृदय में सुर लाई।
कण्ठ महर, मुख जन लोक है, गुरु गम युक्ति याई ॥ ३ ॥

मस्तिष्क में है तप लोक जो, कहते यों मुनि राई।
ब्रह्मरन्ध्र में सत लोक है, सात ऊपर के चाई ॥ ४ ॥
सतगुरु "उत्तमराम" समझाया, भिन्न भिन्न भेद बताई।
"रामप्रकाश" यह ज्ञान संतन का, सहजे लख लो भाई ॥ ५ ॥

भजन (२४) राग आसावरी पद

साधो भाई ! देख अचरज मोहि आवे।
बिन मर्याद भोगे चौरासी, शास्त्र संत बतावे ॥ टेर ॥
भेष पहन भूला कई भव में, मन फूला बहलावे।
सांगी सांग में मुक्ति माने, ज्ञान बिना दुःख पावे ॥ १ ॥
भगवां बांध घरो घर डोले, सेवक शिष्य बनावे।
गृहस्थ त्यागी का भेद न जाने, बातों में विलमावे ॥ २ ॥
बन्धा जाय बन्धे को कहता, मुक्ति कैसे थावे।
गृहस्थ गुरु चेला गृहस्थीं, कौन दया दरसावे ॥ ३ ॥
बिन आचार वर्णाश्रम युक्ति, ब्रह्मज्ञान फरमावे।
भगवां धारे गृह सँवारे, तपस्या तेज घटावे ॥ ४ ॥
सविता तेज हरे तप आयु, सम्पति धर्म हटावे।
"रामप्रकाश" त्यागी जन ज्ञानी, गृह भेद विगतावे ॥ ५ ॥

भजन (२५) राग आसावरी पद

मन मेरा ! दम की गम सुधारा।
स्वासो स्वास सोहं गति सुमिरण, ओम राम उर धारा ॥ टेर ॥
नाडि झटक के चार सैकण्ड में, स्वासा एक विचारा।
एक मिनिट में साठ सैकण्ड हो, पन्द्रह स्वास उचारा ॥ १ ॥

साठ मिनिट में एक घण्टा हो, नौ सौ स्वास हमारा।
तीन घण्टे के एक पहर में, सताईस सौ का चारा॥ २॥
चार पहर की दम समावो, अठ शत दश हजारा।
इक्कीस हजार छः सौ की स्वासा, निशि दिन बीच तुम्हारा॥ ३॥
हरदम सार हार मत मनवा, शम दम युक्ति संवारा।
"उत्तमराम" प्रकाश परम पद, पावो मोक्ष दुवारा॥ ४॥

भजन (२६) राग आसावरी पद

साधो भाई ! परम फकीरी पाना।
सतगुरु उत्तम युक्ति कर साधन, फकर गति निरवाना॥ टेर॥
कोई कहै मैं जट्टा बढ़ावों, रीछ सिंह दिखलाना।
कोई कहै मैं मुण्ढित चुण्डित, भेड ऊँठ कहा जाना॥ १॥
कोई कहै मैं पंच स्नानी, मच्छी नाका माना।
कोई कहै मैं भस्म रमाऊँ, गधा मुक्ति समाना॥ २॥
कोई कहै मैं मोनी बाबा, गूँगा सहजे स्याना।
कोई कहै मैं वक्ता पण्डित, मेंढक वकील विज्ञाना॥ ३॥
कोई कहै मैं शाक अहारी, वन पशु सदा सुजाना।
कोई कहै मैं गुफा निवासी, मूषक अहि प्रमाना॥ ४॥
कोई कहै मैं दूध अहारी, बाल बच्छ पद छाना।
कोई कहै मैं आसन द्ढ हूं, अजगर नित स्थाना॥ ५॥
"उत्तमराम" सतगुरु ब्रह्मवेता, ब्रह्मज्ञान समझाना।
"रामप्रकाश" युक्ति कर निर्भय, सहजे सदा कल्याना॥ ६॥

भजन (२७) राग आसावरी पद

साधो भाई ! मैं फकर मतवाला ।

सतगुरु शरणा जीवत मरणा, भव रो तरणे वाला ॥ टेर ॥

आसन बाँधूं मौन न साधूं, सदा रहूँ निज हाला ।

नैन न मून्धू कान न रूँधूँ, गुरु गम मस्त सवाला ॥ १ ॥

पंच केशी न बाल बढाऊँ, तिलक छाप नहि माला ।

मुण्डित चुण्डितं नहिं भ्रम राखूँ, नहिं पाखंड का चाला ॥ २ ॥

वन मठ मन्दिर गुफा न तापूँ, अपनी मौज सुखाला ।

शाक दूध अन्न बन्धन टूटा, व्रत उपवास हवाला ॥ ३ ॥

भस्म रमा कर पन्थ न भाखूं, टूटा भ्रम का ताला ।

अविद्या भ्रान्ति आवर्ण छेद्या, जन्म मरण का जाला ॥ ४ ॥

"उत्तमराम" मिलिया गुरु उत्तम, भव का बन्धन टाला ।

"रामप्रकाश" निर्भय पद पाया, एक अखण्ड उज्वाला ॥ ५ ॥

भजन (२८) राग छन्द भैरवी पद

निज भक्ति ज्ञान बढाय के, सुन गणपति अर्ज हमारी ॥ टेर ॥

ज्ञानी गुणीजन गुण कथ गावे, ऋषि मुनि सब देव मनावे ।

गुणवर देख के मोहि सुहावे, दे ऋद्धि सिद्धि सुख दाय के ।

कर ममता दूर विडारी ॥ १ ॥ निर्गुण सर्गुण का भेद न जानू ।

जप तप अर्चन मूल न मानू, रहणी करणी ज्ञान न छानू ।

दे सारा भेद बताय के, हर दुर्मति दुष्ट संहारी ॥ २ ॥

वेद पुराण संत-मत गीता, साधन हीन क्रिया से रीता ।

निर्बल तन मन क्या गुण जीता, कर कृपा सु मोद सुहाय के ।

क्या महिमा कहुं पुकारी ॥ ३ ॥ रामप्रकाश यह अर्ज सुनावे ।
सतगुरु शरणे तोहि मनावे, भक्ति मार्ग लाग उमावे ।
उर धार भरोसों ध्याय के, रख लजिया विरद संभारी ॥ ४ ॥

भजन (२९) राग छन्द भैरवी पद

निज भक्ति दे गुण दान में, मैं हरिजी शरण तुम्हारी ॥ टेर ॥
व्यापक विश्व अनंत अनामी, पारब्रह्म प्रभु अन्तर्यामी ।
सकल चराचर के तुम स्वामी, नहिं आवे महिमा गान में ।
संत वेद नेति कहि हारी ॥ १ ॥ पशु पक्षी नर नारी प्यारा ।
भक्त अनेकों आप उधारा, गुण लीला को गावत हारा ।
ले अर्जी मेरी ध्यान में, तुम जानत हो विधि सारी ॥ २ ॥
जप तप यज्ञ योग से हीना, ज्ञान ध्यान भक्ति से खीना ।
साधन शक्ति रति न चीना, है भक्त उद्धारण बान में ।
सब थाकी समझ हमारी ॥ ३ ॥ रामप्रकाश सदा गुण गावे ।
शरणे आवे सो फल पावे, यती सती सब मौन मनावे ।
नहिं आवे महिमा गान में, मैं वार वार बलिहारी ॥ ४ ॥

भजन (३०) राग छन्द भैरवी पद पारव

धन सतगुरु ज्ञान जहाज हो, भवपार उतारण हारा ॥ टेर ॥
साधन धार शरण जो आता, परमानन्द फल पूरण पाता ।
परम निजानन्द मांहि समाता, दुःख मूल अज्ञान का भाज हो ।
निज निरखे निर्गुण न्यारा ॥ १ ॥ धन महिमा सतगुरु तुम्हारी ।
मति गति थाकी समझ हमारी, सुर नर मुनि गुण वेद उचारी ।
श्री उत्तमराम महाराज हो, मैं वार वार बलिहारा ॥ २ ॥

आत्म बल मुझ मुगति दीजे, ज्ञान ध्यान भक्ति गम कीजे ।
शरण आपनी मुझ को लीजे, शुभ सारा पूरण काज हो ।
गुण हरदम नाम उचारा, ॥ ३ ॥ अपने जन को तुरंत उभारो ।
विरद आपना देख संभारो, रामप्रकाश सदा है थारो ।
निज अपना अंश समाज हो, तो काज सुधारो सारा ॥ ४ ॥

भजन (३१) राग छन्द भैरवी पद पारवा

गणपति गण ईश महान हो, मैं आया शरण तुम्हारी ॥ टेर ॥
प्रकृति गणगुण तो आधीना, परम अखण्ड अगोचर चीना ।
अनंत अपार साक्षी गुण तीना, नित प्रेरक एक विज्ञान हो ।
सब द्वंद दोष दुःख हारी ॥ १ ॥ तो सुमरे बिन काम न होता ।
तो कृपा बिन खावे गोता, भवसागर में भव भव रोता ।
करुणामय कृपा निधान हो, क्या महिमा कहूं विहारी ॥ २ ॥
रसा-स्वाद, विक्षेप विड़ारो, लय, काषाय विघ्न चव हारो ।
आत्म चिंतन हेतु हमारो, क्षय मूल प्रमाद अज्ञान हो ।
नित जय जय होय हमारी ॥ ३ ॥ तोही रामप्रकाश मनावे ।
सुर नर मुनि गण तुझको ध्यावे, मन इच्छित फल सोई पावे ।
ऋद्धि सिद्धि के लाभ शुभान हो, सब ज्ञान ध्यान गुण धारी ॥ ४ ॥

भजन (३२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मैं परमानन्द परसाय के, धन अन्तर वेद पढाया ॥ टेर ॥
मात पिता कुल खोज गमाया, गुरु का महरम पंथ चलाया ।
स्वासो श्वास एक धुन ध्याया, गुरु गम की मस्ती लाय के ।
सब संशय शोक विलाया ॥ १ ॥ हरदम सोहं माला फिरती ।

ओम नाम में अटकी सुरती, रमता राम संग मन की ब्रिरती।
शुभ साधन संग अटकाय के, गुण सतगुरु का मैं गाया ॥ २ ॥
उत्तम गुरु का मैं हूँ चेरा, धर्मराय क्या करसी मेरा।
निर्भय नगर में मेरा डेरा, ब्रह्मज्ञान फकीरी पाय के।
नहीं भगवाँ वस्त्र रंगाया ॥ ३ ॥ हरिराम हरि रूप सदाई।
जीयाराम सुखराम समाई, अचलराम उत्तम गति पाई।
"उत्तमराम" संत आय के, गुण "रामप्रकाश" समाया ॥ ४ ॥

भजन (३३) राग छन्द भैरवी पद

नित उत्तम गुरु गुण गाय के, निज निर्भय होय सुजाना ॥ टेर ॥
सतगुरु परब्रह्म आप अकर्ता, जग कर्ता युगति भव भर्ता।
निर्गुण सर्गुण पूर्ण हर्ता, गुरु उत्तम हमारा आयके।
भव बन्धन काटे नाना ॥ १ ॥ सतगुरु उत्तम परम अनामी।
सतगुरु अचल अन्तर्यामी, ब्रह्मवेता उत्तम गुरु स्वामी।
दे परमानन्द परसायके, हर द्वैत सकल अज्ञाना ॥ २ ॥
ममता त्वंता अहंता काटी, भवसागर की मेटी घाटी।
गुरु गम से पढ़िया ब्रह्मपाटी, सब आवर्ण शक्ति ढायके।
निज फकर भया मस्ताना ॥ ३ ॥ सतगुरु उत्तमराम का चेरा।
चौरासी का काट्या फेरा, धर्मराज कहा करसी मेरा।
कह "रामप्रकाश" निज पायके, पद पाया अभय कल्याना ॥ ४ ॥

भजन (३४) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मैं पूर्ण फकीरी पायके, नित भया ज्ञान मतवाला ॥ टेर ॥
उत्तम सतगुरु ज्ञानी पाया, भ्रम कर्म का मूल विलाया।

मैं तूँ ममता जाल मिटाया, उर साधन सुमति सजायके।
तज द्वैत जगत की चाला ॥ १ ॥ उत्तम गुरु का निर्भय ज्ञाना।
पाया महरम हो मस्ताना, निज का निज भया कल्याना।
सब अविद्या द्वैत भगायके, लख चौरासी भव टाला ॥ २ ॥
संत सदा सिरताज हमारे, उत्तम लक्षण दर्शन प्यारे।
भवसागर का भेद उखारे, सब माया जाल हटाय के।
भय तोड़ भ्रम का ताला ॥ ३ ॥ उत्तमराम उत्तम ब्रह्मवेता।
ज्ञान ध्यान भक्ति गुण देता, रामप्रकाश जिज्ञासु लेता।
वर पूर्व भाग जगाय के, निज रटता सोहं माला ॥ ४ ॥

भजन (३५) राग छन्द भैरवी पद पाखण्ड खण्डन

नहिं साच लखे कोई जानके, जग मच गया घोर अंधारा ॥ टेर ॥
मांस मद्य मैथुन रत रहते, मंत्र मुद्रा पंचम को लहते।
मदिरा को तीर्थ वो कहते, सब कल्पित करे बखान के।
कह झूंठ प्रमाण उचारा ॥ १ ॥ मदिरा पात्र को पद्मा भाखे।
नाम मांस का सुधा प्रभाखे, व्यास प्याज को नियमित राखे।
क्या मति भ्रष्ट हुई आनके, सब उल्टा अर्थ विचारा ॥ २ ॥
लहसुन को शुकदेव उचारे, मदिराकार दीक्षित कर धारे।
वैश्या सेवी प्रयागी सारे, चण्डालिन संग काशी मान के।
वह भोगे भड़वा सारा ॥ ३ ॥ भैरवी चक्र रत विप्र बतावे।
अति व्यभिचारिणी योगिनी गावे, व्यभिचारी को योगी लखावे।
वीरज को रतन बखान के, मिल मण्डली करता सारा ॥ ४ ॥

वमन उलट भक्षण जो करता, भैरवी चक्र आचार्ज भरता।
योनि में जिह्वा जप धरता, मति उलटी भई जानके।
सब भ्रष्ट विचार आचारा ॥ ५ ॥ निर्भय संत का बाजत डंका।
पाखण्डी मन माने शंका, रामप्रकाश गुरु ज्ञान निशंका।
यह कहता सची तान के, सब खोल भेद कहुं सारा ॥ ६ ॥

भजन (३६) राग छन्द भैरवी पारवा पाखण्ड खण्डन

हा बड़े शरम की बात है, कर पाखण्ड नर्क सिधावे ॥ टेर ॥
मन मुख भेष बणावे थापी, कपड़ा रंग गुरु बणज्ञा आपी।
गुरु मर्याद न जाणे पापी, धन चेला चेली कर लात है।
जग महिमा खूब बढ़ावे ॥ १ ॥ पाट थाप कर पन्थ चलावे।
आदू धर्म का नाम धरावे, कर परदा में जोत जगावे।
कर मिल्या मस्ताना घात है, शठ बीसा धर्म संभावे ॥ २ ॥
तिलक छाप कर पाट बैठाई, आज्ञा पाकर कौल सधाई।
बंधा-पालत अधर्म संभाई, वो विषय कमावे रात है।
नहीं बहिन माता शरमावे ॥ ३ ॥ अधर सधर को बीरज लावे।
प्रसादी कर मौद मनावे, शर्म गमा कर यमपुर जावे।
तज "रामप्रकाश" कुघात है, कह साची बात सुणावे ॥ ४ ॥

भजन (३७) राग छन्द भैरवी पद पारवा पूर्वोक्त

हा बड़े गजब की बात है, शठ पोल में ढोल बजावे ॥ टेर ॥
बड़ा धर्म निजारु कहता, पाखण्ड कुकर्म रस्ते बहता।
हाथ खुरज इसारा लहता, कर अनर्थ वाणी गात है।
विषया रत रात जगावे ॥ १ ॥ बहिन भाणजी मामी काकी।

चौली पकड़ कर रखे न बाकी, कर परदा पोषे पद ताकी।
दे माला फेरा मात है, वो बैठी पाट सजावे ॥ २ ॥
गुरु अभयागत विरला आवे, पांच सात को पोषण लावे।
जबरी देवी जोत जगावे, रज अधर-सधर को लात है।
वह माणक दाण चुकावे ॥ ३ ॥ भोली जगत मरम नहीं जाणे।
मोडा मुस्टण्डा मौजां माणे, सैली बांध पग डोरा ताणे।
धिक पाखण्ड गोता खात है, कथ "रामप्रकाश" सुणावे ॥ ४ ॥

भजन (३८) राग छन्द भैरवी पद पारवा

हा बड़ी कुरीति लाय के, सठ पाखण्ड पोल जमाई ॥ टेर ॥
आदू धर्म निजारु गावे, दन्तकथा गढ़ खूब सुनावे।
दशा पाट बीसा गुण लावे, जोड़ी जोड़ मिलायके।
कर आसन ध्यान लगाई ॥ १ ॥ बंधा आठ पाले नर नारी।
चचा पपा बोलन धारी, करे पारसी आदरकारी।
भर प्याला माणक पायके, वो पीये मूत रुचि लाई ॥ २ ॥
जग आचार विचार गमावे, वर्ण-आश्रम को खोज विलावे।
धर्म कर्म को मूल उडावे, हरि संत का मान गमाय के।
खल ईर्षा-मोद मनाई ॥ ३ ॥ वाणी गावे मूड बखावे।
अर्थ-भाव सो मन नहीं भावे, भोली जगत मरम नहीं पावे।
कह "रामप्रकाश" जचाय के, शठ बाधा जमपुर जाई ॥ ४ ॥

भजन (३९) राग छन्द भैरवी पद पारवा

जग पाखण्ड माहि फंसायके, नहीं लखे रीति गुण पावे ॥ टेर ॥

गुरु गम भक्ति भेद न पावे, साची बात दाय नहीं आवे।
मन माने सो पन्थ चलावे, सत भक्ति को विसराय के।
मिल मूरख मोद मनावे ॥ १ ॥ चौड़े धर्मी छाने पापी।
अपने मति की करता थापी, नर नारी कर मैथुन खा पी।
पंच मकर मांस मिलायके, ले मुद्रा मदिरा लावे ॥ २ ॥
सूते माता जागे नारी, सधवा पूनम ग्यारस कुँवारी।
विधवा अमावस आवे नारी, ले पाट जमावे आय के।
जब बीज चँद्रावलि आवे ॥ ३ ॥ पांचम पूनम, ग्यारस टाले।
बीज सातम आठम पाले, भेष पहन कई आवे आले।
कई सैली डोरा दायके, तज "रामप्रकाश" सुणावे ॥ ४ ॥

भजन (४०) राग छन्द भैरवी पद पारवा

जग मच रहा घोर अन्याय है, नहिं न्याय नजर में आवे ॥ टेर ॥
साचे की पारख नहीं करता, हरि गुरु के धर्म न डरता।
ईर्षा-द्वेष मत्सर में मरता, कर पाखण्ड दंभ जचाय है।
नहीं सीधे पन्थ सिधावे ॥ १ ॥ कौली साधे पाट जमावे।
नर-नारी मिल चौली लावे, साधे भोग रू योग बतावे।
यह श्वान धर्म संभाय है, रञ्च दुनिया मरम न पावे ॥ २ ॥
बाई भाई मुख से कहता, धर्म निजारु सैज सुख सहता।
अधर सधर बीरज को लहता, वो कर चरणामृत पाय है।
दे धौखा मुक्त द्धावे ॥ ३ ॥ दशां बीसा नर्क सिधाई।
समझ ज्ञान कर चौड़े गाई, भली मानो या भूण्डी भाई।
नहीं फँसता मन समझाय के, कथ "रामप्रकाश" सुनावे ॥ ४ ॥

भजन (४१) राग छन्द भैरवी पद पारवा

कर लेवो सतसंग आण के, सब साची कह दूँ भाया ॥ टेर ॥
गुरु मर्यादा रीति न जाणे, अपने मन की उलटी ताणे ।
मतवादी पन्थ अपना आणे, गुरु धाम नीति नहिं जाण के ।
मन मान्या भेख बणाया ॥ १ ॥ कपड़ा रंग कर मन नहीं रंगा ।
भूखा भूत पीढी धर नंगा, गुरु तज गुरु-कर चख चख चंगा ।
नहिं निश्चय होय अजाण के, खल बातों ब्रह्म बताया ॥ २ ॥
बाणी गावे राग उचारे, लोक रिझावे न्याय न धारे ।
वाचक ज्ञानी शब्द न सारे, खल भोग नर्क चौ खाण के ।
सब जग को खूब भ्रमाया ॥ ३ ॥ उत्तमराम गुरु भेद बताया ।
समझ विचार उर देख जचाया, तज ऐसे साधु को भाया ।
सत मुक्ति मौजां माण के, कह "रामप्रकाश" सुणाया ॥ ४ ॥

भजन (४२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

बिन साधन ज्ञान विचार है, वो कैसे मुक्ति पावे ॥ टेर ॥
सतगुरु शरण साधन ना लावे, सत संगत युक्ति नहीं आवे ।
तब तक ब्रह्म ज्ञान नहिं पावे, ला भिक्षा खावे धार है ।
वो बेच चून धन लावे ॥ १ ॥ महापुरूषों की होड़ चलावे ।
मतवादी पन्थ चाल उपावे, कपड़ा रंग कर भेष बनावे ।
मन रंगा न साधन सार के, कथ वाचक ज्ञान जमावे ॥ २ ॥
पाट थरप कर रात जगावे, छाने बैठ प्रसादी पावे ।
डाभ पूतला स्वर्ग पठावे, सब झूँठन कौली जार है ।
वो छिपकर ज्योति जगावे ॥ ३ ॥ घर घर बैठे गपशप करता ।

सन्ध्या स्मरण ध्यान न धरता, चन्दे चिट्ठे से कारज सरता।
बिन रहणी नरक सिधार है, कथ "रामप्रकाश" सुनावे ॥ ४ ॥

भजन (४३) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सब पाखण्डी भय खाय के, वह सीधा यमपुर जाता ॥ टेर ॥
गुरु बेमुख नुगरा हो चाले, मतवादी मन इच्छा माले।
गुरु मर्यादा रीति न झाले, मन मान्या भेष बनाय के।
कर कपड़ा गैरु-राता ॥ १ ॥ जीवत साधु सेवा नहीं कीनी।
मरे-गुरु मान सम्पत्ति लीनी, महन्त बण्या खुद चादर लीनी।
ठग सूना साँग बणाय के, वो माँग भीख भर लाता ॥ २ ॥
जो कोई साची बात सुणावे, मूरख मण्डली लड़ने जावे।
साधन बिन मुक्ति नहिं पावे, भल ईर्षा द्वेष बढ़ाय के।
वह मन मुख सांग जमाता ॥ ३ ॥ आँधों की आँधी जग माने।
शास्त्र नीति रखदी छाने, साधु रीति नीति नहिं जाने।
सब कहदूँ साच सुनाय के, मन "रामप्रकाश" मनाता ॥ ४ ॥

भजन (४४) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मतवादी भूला आय के, यम मूँडा करसी काला ॥ टेर ॥
सांग पहन कर बणज्ञा मोटा, गुरु मर्याद साधन का टोटा।
बाहर सीधा भीतर खोटा, मन मानी मुक्ति ठाय के।
ठग संत बण्या जग ठाला ॥ १ ॥ वो यूँ करसी देशी पूजा।
मेरा चेला मने न दूजा, भोपा-भूत बुजावे बूजा।
भजन राग सुणावे गायके, मनमुख से फेरे माला ॥ २ ॥

क्रोध करे मन जलता ऐसा, ऑख डरावे जैसे भैंसा।
साची कहते डर है कैसा, सुण लीजे मन चित लायके।
भव कैसा होवे ढाला॥ ३॥ ब्रह्मज्ञानी का बजे नगारा।
पाखण्डी दल हिलता सारा, संत शास्त्र सच वेद पुकारा।
कह "रामप्रकाश" सुणाय के, संग छोड़ झूँठ का चाला॥ ४॥

भजन (४५) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सब सुणलो साची आण के, कहूं पोल खोल के ख्याला॥ टेर॥
बीसा पन्थी विषिया राता, धर्म-निजारु राता-माता।
आदू पन्थ अनीति गाता, व्यभिचार कमावे जाण के।
कर नाना विधि का चाला॥ १॥ कूण्डा पन्थी थाप्यो कूण्डो।
पाट थरप कर झाल्यो झूण्डो, भव सागर में नाव न डूण्डो।
मन मानी मुक्ति माण के, पी मूत भया मतवाला॥ २॥
साच धर्म गुरु रीति न भावे, माँस दारु मद माता थावे।
बैठ संगत में भजन सुणावे, नहीं देश-काल की काण के।
बिन अर्थ अरडावे आला॥ ३॥ हाथ-पांव में डोरा बाँधे।
सैली राखे भगवाँ कान्धे, साची बात न खोजे लाधे।
कह "रामप्रकाश" सुजाण के, पट ऊजल मन में काला॥ ४॥

भजन (४६) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मैं मस्त भया निज हाल में, झख मारो पाखण्ड सारा॥ टेर॥
गुरु मर्यादा रती न जाणे, उलटी बातों घातों आणे।
मांग लाय कर मौजां माणे, नहिं प्रेम नियम तन चाल में।
भया सीख साखी मतवारा। १। भेष बदल कर सांग बनाया।

भँगवा पहन्या छा ली माया, ज्ञान-पन्थ की रीति भुलाया।
दुःख पावे तीनों काल में, संत शास्त्र सबे पुकारा ॥ २ ॥
सांगी सांग बणाया सूना, मोटा होय बढाया पूना।
आदू धर्म बतावे जूना, यम नमक भरेगो खाल में।
दण्ड भोग चौरासी धारा ॥ ३ ॥ छल बल करता बोले खारा।
शुद्ध नहिं आचार विचारा, रामप्रकाश गुरु ज्ञान संभारा।
नहिं फँसता माया जाल में, निज मौन गही ततसारा ॥ ४ ॥

भजन (४७) राग छन्द भैरवी पद पारवा

नर पाखण्ड नेह बढाय के शठ भव में वह बह जाता ॥ टेर ॥
जप तप तीर्थ व्रत न कीन्हा, सेवा सतगुरु दान न दीन्हा।
साधन ज्ञान आतम नहीं चीन्हा, नहिं तुलसी-पीपल पायके।
नहिं ज्ञानी संत बधाता ॥ १ ॥ गीता पाठ रामायण नांही।
साधु हुआ पर समझ्या कांही, आगी पाछी मन की चाही।
सब भूल भरी उर लायके, गुरु मर्यादा नहिं पाता ॥ २ ॥
दर दर फिरता घर घर चरता, खोटी करता माया भरता।
पर धन हरता यूं ही मरता, पर नारी हेत लगाय के।
नहिं सांग पहन शरमाता ॥ ३ ॥ उत्तमराम गुरु सार लखाई।
साची जाण साधन संग पाई, रामप्रकाश यूं कहता गाई।
जग कहता लखता जायके, नहिं साची भैर सुनाता ॥ ४ ॥

भजन (४८) राग छन्द भैरवी पद पारवा

धिक पाखण्ड हेत लगाय के, ठग फिरे जगत में हारा ॥ टेर ॥

साची सतगुरु सेंव न कीन्ही, साघन रमझ समझ नहि चीन्ही ।
मनमुख उलटी मति को लीन्ही, खुद अंधा भया है आय के ।
भ्रम और भूलावे सारा ॥ १ ॥ जुमा देवे युक्ति न जाने ।
आतम ज्ञान की बात न माने, पन्थ वाद की रखता छाने ।
बहु माया जाल रचाय के, कर प्रपञ्च मूल पसारा ॥ २ ॥
करे चूरमा छाने खावे, चुनभे वाणी जोड़ मिलावे ।
पिंग़ल-बोध युक्ति नहिं आवे, बहु करता बात बनाय के ।
नहिं रीति मर्याद विचारा ॥ ३ ॥ उत्तमराम सत गुरु बड़भागी ।
पाखण्ड मूल मिटाया सागी, आतम ज्ञान लख भया वैरागी ।
सत "रामप्रकाश" लखाय के, सब कहता संत सुधारा ॥ ४ ॥

भजन (४९) राग छन्द भैरवी पद पारवा

ठग फिरे जगत में ठायके, नहिं रीति मर्यादा जानी ॥ टेर ॥
राम नाम हृदय नहीं राखे, कपटी झूँठी मीठी भाखे ।
जाय संगत में बखड़ी पाखे, मनमानी बात जंचाय के ।
नहिं युक्ति बात पिछानी ॥ १ ॥ हरि भक्तों से ठेचर करता ।
शब्द अर्थ को भेद न धरता, साधन-युक्ति उर नहिं चरता ।
शठ सांगी सांग बनाय के, मन नेक मर्याद न मानी ॥ २ ॥
होड करे हंसों की बुगला, भजन गाय जग घेरे दुगलां ।
साख बणावे साखी चुग ला, नित अड़े संतों से आय के ।
नित भरसी दोजुग खानी ॥ ३ ॥ उत्तमराम गुरु साख सुनाई ।
पाखण्डों की मूँडूँ माई, पाखण्डी की चाल मिटाई ।
कह "रामप्रकाश" सुनाय के, उर साची युक्ति आनी ॥ ४ ॥

भजन (५०) राग छन्द भैरवी पद पारवा

जग भूल भ्रम में आयके, नहिं साची बात पिछाने ॥ टेर ॥
घुघु रूप से गुरु कर लीन्हा, चमचेड़ों बागल सम भीना।
ज्ञान सूरज उजियास न चीन्हा, शठ सांग देख भरमाय के।
नहिं पारख ज्ञान को माने ॥ १ ॥ नाटक चेटक बहुते करता।
सिध बाजे मन स्वार्थ धरता, इन्द्रजाल से काज न सरता।
कर बातों छल बल लायके, नहिं युक्ति एक न जाने ॥ २ ॥
आटो माँग कर बेचे जाई, उगराणी कर मांगण जाई।
रात जगावे पैसा ताँई, नहिं गुरु मर्यादा भायके।
मन मानी रीति जँचाने ॥ ३ ॥ संत वाणी को सीखे गावे।
उलटा सीधा अर्थ बतावे, संत देख कर शर्म न आवे।
यह कलियुग माया लायके, कथ "रामप्रकाश" बखाने ॥ ४ ॥

भजन (५१) राग छन्द भैरवी पद पारवा

नहिं ज्ञान वैराग पिछाण के, संत रीति मर्याद मिटानी ॥ टेर ॥
भजन सीख कर चौड़े गावे, बैठ संगत में आँख मिलावे।
बिरहणी पिव की जोर सुणावे, मन मानी युक्ति जाणके।
शठ उलटा अर्थ कटानी ॥ १ ॥ शास्त्र वाणी वेद पढ़ाई।
आगी पाछी पढे सदाई, सांग पहन कर भूला भाई।
नहिं युक्ति भक्ति छाण के, शठ भव में बहु भटकानी ॥ २ ॥
गुरु मर्यादा रीत न जाणी, हरि भक्तों से उलटी ताणी।
अंत मूरखा भोगे हाणी, चौरासी को दाण के।
नहिं नेक मर्याद न मानी ॥ ३ ॥ पल पल सूना सांग बनावे।

हरि गुरु संत मन नहीं भावे, ईर्षा द्वेष में नित जलपावे ।
कह "रामप्रकाश" सुजाण के, सब पाखण्ड खोज हटानी ॥ ४ ॥

भजन (५२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

पन्थवादी जाल बिछाय के, शठ सूनी जगत भुलावे ॥ टेर ॥
पाट थरप कर ऊँठ्या खावे, पन्थापन्थी बात जमावे ।
झूँठा खोज प्रमाण बतावे, कर मंत्र टूणा ठाय के ।
सब झूँठ मांहि भरमावे ॥ १ ॥ बैनड़ बाई कहता जावे ।
चेल्याँ से नहीं चुकता खावे, संत सेवा उपदेश बतावे ।
पन्थ दशा-बीसा दाय के, कह बड़ा धर्म दरसावे ॥ २ ॥
विषय भोग में मुक्ति माने, मूत पीये अरु युगत बखाने ।
कर्म भर्म में भक्ति जाने, धिक सीधा नर्क सिधाय के ।
नर नर्क कुण्ड भुगतावे ॥ ३ ॥ उत्तमराम गुरु साची दाखी ।
रामप्रकाश ना मन में राखी, जगत रीति को है ज्यूँ भाखी ।
सब पाखण्ड मूल मिटाय के, शुद्ध युक्ति मन में भावे ॥ ४ ॥

भजन (५३) राग छन्द भैरवी पद पारवा

नहिं साची माने कोय रे, जग उलटी को नित माने ॥ टेर ॥
सिद्ध बाजे अरु करे ठगाई, मौनी होकर दंभ रचाई ।
कन्द फूल फल भोजन पाई, नहिं युक्ति भक्ति दोय रे ।
कर पाखण्ड फैल जमाने ॥ १ ॥ भेष पहन कर बाणी गावे ।
संत गुरु से द्वेष बढ़ावे, भोली दुनिया को भरमावे ।
नहिं मन मर्यादा जोय रे, कछु जगत भेद ना जाने ॥ २ ॥

बाणी कथ कर ग्रन्थ छपावे, अक्षर मात्रा ज्ञान न आवे।
छन्द भेद गति रीति न भावे, आ कवि मिले जो लोय रे।
दुम मौन भाव मन आने। ३। मनसुख सांग बण्या सन्यासी।
ऐसा पाखण्डी नरकों जासी, जीवत भुगते मूओं चौरासी।
कह "रामप्रकाश" यूँ तोय रे, सुन मानव भेद पिछाने॥४॥

भजन (५४) राग छन्द भैरवी पद पारवा

संत भया जगत में देख लो, कई सांग पहन कर भाई॥टेर॥
गृहस्थी होय न करी कमाई, नारी रूठी माई भाई।
भेष पहन कर त्याग बताई, बात वेदान्ती से खा लो।
कर भगवां भ्रम बचाई॥१॥ पहले तो घर भूखों मरता।
ठाट बाट रस आनन्द चरता, लोभ विषयारत घर घर फिरता।
कर राज-पंचायत भेख लो, सब बचता धन सदाई॥२॥
गुरु सेवा की रीति न जाणी, चेला मूंडण लागो साणी।
साधन मर्याद न उर में आणी, लक्षण पूरे पेख लो।
नहीं समझ व्यवहार चलाई॥३॥ परमार्थ-व्यवहार न जाणे।
मन माने ज्यूँ बातों आणे, मूरख उलटी मन की ताणे।
कह "रामप्रकाश" सो रेखलो, नित साची कहत बजाई॥४॥

भजन (५५) राग छन्द भैरवी पद पारवा

पंथ पाखण्ड वाला जान के, दो धूड़ सदाई धोरा॥टेर॥
नीच नारी को पाट बैठावे, मांस मदिरा ले पूजा थावे।
देवी कह कर भोग लगावे, मन मौजां माणे माणके।
ठग मिले छलिया रू छोरा॥१॥ वेद विरूद्ध मंत्र मन बोले।

योनि जिभ्या लावे भोले, बहन भाणजी भ्रात न तोले।
मनमानी उलटी ताणके, मद मौद मस्तवा कोरा ॥ २ ॥
मन चाहों का सम्बन्ध मिलावे, नशाबाज को पूज्य बतावे।
खाया पिया उल्टी गिरावे, भैरवी प्रसाद बखाण के।
कह बड़ा धर्म का धोरा ॥ ३ ॥ उत्तमराम का डंका बाजे।
पाखण्डी का हृदय लाजे, कूरा कर्मी उठ कर भाजे।
कह "रामप्रकाश" सुजाण के, यह निर्भय डंका मोरा ॥ ४ ॥

भजन (५६) राग आसावरी पद

मन रे ! दुर्लभ नर तन पायो।
प्रकृति जाल भवसागर घूम्यो, जन्म मरण में आयो ॥ टेर ॥
जलथर थलचर नभचर नाना, योनि विविध भुगतायो।
अण्डज पिण्डज जरायुज अद्भुत, चार खानि बहवायो ॥ १ ॥
नवलख जल के जन्तु गाये, दशलख पक्षी उड़ायो।
ग्यारह लाख सो भृंग कीटादिक, सूक्ष्म स्थल तन तायो ॥ २ ॥
बीस लाख स्थावर जड़ है, वृक्ष लता अन्न गायो।
तीस लाख चौपाये पशु के, रूप धरण कहलायो ॥ ३ ॥
चार लाख नर वानर दो पग, सोयो पीयो अरु खायो।
मोह प्रमाद भ्रम वश भूलो, घटि यन्त्र चकरायो ॥ ४ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल कर्म करि, त्रिगुण जाल विलमायो।
दृश्य अदृश्य मर्कट वत बंध्यो, मायिक जगत लुभायो ॥ ५ ॥
सतगुरु शरण साधन की पंगत, पूर्व भाग भल भायो।
"रामप्रकाश" परमार्थ जानो, मुक्ति स्वरूप समायो ॥ ६ ॥

भजन (५७) राग आसावरी पद

मन रे ! लख चौरासी बह आयो ।
स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक ते, भ्रमत मनुष तन पायो ॥ टेर ॥
जल जन्तु मेंडक मकरादि, नवलख रूप धरायो ।
पक्षी विविध मखी ते अनड़, दश लख योनि जायो ॥ १ ॥
कीट-भृंग चिऊण्टी सर्पादि, ग्यारह लाख तपायो ।
जड़ स्थावर वृक्ष लतादिक, बीस लाख कहवायो ॥ २ ॥
गज गौ खर पशु चौपाये, तीस लाख तन तायो ।
अण्डज पिण्डज जरायुज उदभिद, चार खानि भटकायो ॥ ३ ॥
मुनि सुर गान्धर्व किन्नर राक्षस यक्ष, दानव मानव थायो ।
भूत प्रेत पिशाच निशाचर, चार लाख में गायो ॥ ४ ॥
सात्विक राजस तामस कर्म करि, घटियंत्र बहकायो ।
कर्म विकर्म अकर्म प्रबल वश, विविध भांति दरशायो ॥ ५ ॥
सत संगत साधन की कृपा, सतगुरु उत्तम बतायो ।
"रामप्रकाश" प्रसाद गुरु गम, भव को मूल मिटायो ॥ ६ ॥

भजन (५८) राग आसावरी पद

मन रे ! नर तन रतन सुधारा ।
लख चौरासी भटकत भटकत, पाया मुक्ति दुवारा ॥ टेर ॥
सात लाख है जीव पृथ्वी के, सात लाख जल वारा ।
सात लाख अग्नि के जन्तु, सात लाख पवनारा ॥ १ ॥
दस लाख प्रत्येक वनस्पति, जैन मत अनुसारा ।
चौदह लाख साधारण लतादिक, विविध योनि धारा ॥ २ ॥

दो लाख दो इन्द्रिय लटादि, भुगते कर्म विस्तारा।
दो लाख ते इन्द्रिय चिऊण्टीयादि, जीभ नाक तनतारा ॥ ३ ॥
दो लाख चौ इन्द्रिय मच्छरादि, ऑख सहित विचारा।
चार लाख नारकीय तिर्यंकादि, नाना योनि प्रस्तारा ॥ ४ ॥
चार लाख सुर गन्धर्व यक्षादि, किन्नर देही दारा।
चार लाख तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, नाना भांति आचारा ॥ ५ ॥
चौदह लाख मानव की जाति, भूत प्रेतादि लारा।
बिन संतसंग हरि बिन स्मरण, कैसे पावे पारा ॥ ६ ॥
मत मतान्तर यूँ सब गावे, जाणे गुरु मुख प्यारा।
"रामप्रकाश" शरण सतगुरु की, पाया ज्ञान ततसारा ॥ ७ ॥

भजन (५९) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मेरे सतगुरु परम दयाल है, भव मूल मिटावण हारा ॥ टेर ॥
ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप विख्याता, अर्थ यथार्थ खोल लखाता।
ज्ञान विज्ञान बुद्धि के दाता, सतगुरु जी नजर निहाल है।
महा महिमा अपरम्पारा ॥ १ ॥ राव रंक श्रद्धा कर आवे।
धर विश्वास साधन उर लावे, सत सोंहम् का शब्द सुनावे।
सतगुरुजी आप कृपाल है, सब सुर नर वेद पुकारा ॥ २ ॥
काल जाल भ्रम दोष मिटावे, विषय विकार असार हटावे।
युक्ति भक्ति नियम दृढावे, गुरु काटे भव जंजाल है।
दे मोक्ष स्वरूप विचारा ॥ ३ ॥ सुखराम की गुरु गम छानी।
अचलराम पूर्ण मन मानी, उत्तमराम सत हृदय आनी।
निज अनन्तानन्द अकाल है, नित "रामप्रकाश" उजारा ॥ ४ ॥

भजन (६०) राग छन्द भैरवी पद पारवा

धन सतगुरु का दीदार है, कोई परसें सो पद पावे ॥ टेर ॥
सौम्य सुरति नजर निहाला, माधुरि मूरति परम कृपाला।
अकल कीरति दीनदयाला, ब्रह्म वेता वेद विचार है।
धन ज्ञान ध्यान दरशावे ॥ १ ॥ अशरण शरण सदा सुख दाता।
निर्धन के धन आनन्द साता, निर्बल के बल मौद बढाता।
सत आनन्द रूप अविकार है, धन भ्रम जंजाल मिटावे ॥ २ ॥
इन्द्रियजीत महा ब्रह्मचारी, धैर्य संतोष परम व्रत धारी।
लखता नाहीं मूढ अनारी, गुरु सामर्थ परम उदार है।
धन जाने-मुक्ति समावे ॥ ३ ॥ उत्तमराम सतगुरु गुरु ज्ञानी।
शब्द स्वरूप युक्ति उर आनी, रामप्रकाश फकीरी जानी।
निज पाया परमा सार है, धन शिष्य गुरु-उर लावे ॥ ४ ॥

भजन (६१) राग छन्द भैरवी पर पारवा

मोहि एक तुम्हारी आश है, सुन सतगुरु अर्ज हमारी ॥ टेर ॥
अशरण शरण भक्त भयभंजन, कष्ट निवारक शिष्य मनरंजन।
ज्ञान शलाका बुद्धि दे अंजन, मोरे देव निरंजन खास है।
धन उत्तमराम गुरु धारी ॥ १ ॥ नजर निहाल संकट को टारे।
आप गरीब निवाज हमारे, महिमा ऋषि मुनि संत पुकारे।
ब्रह्मवेता ब्रह्म अविनाश है, यों शास्त्र संत पुकारी ॥ २ ॥
विश्वभरण हरण दुःखमूला, सर्गुण निर्गुण हरि हर कूला।
दृश्य दृष्टा मूल रू तूला, सब तुम्ही एक उजास है।
धन सतगुरू कुदरत थारी । ३ ॥ श्रद्धा धार आप को चीन्हा।

अनंत भक्तों को शरणे लीन्हा, भव से पार मुक्त उन कीन्हा ।
अब आया "रामप्रकाश" है, सतगुरुजी शरण तुम्हारी ॥ ४ ॥

भजन (६२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सतगुरुजी के उपकार की, क्या विगत कहूँ मैं भाई ॥ टेर ॥
जो सतगुरु कृपा नहीं करता, जगत जाल में रोता मरता ।
भांति भांति के बहुदुःख भरता, गति छूटी सब संसार की ।
सत सुमिरण सार संभाई ॥ १ ॥ माया काज में अरता लरता ।
विषय-भोग रस माया चरता, यमलोक से युग युग डरता ।
गल फांसी जग व्यवहार की, सब टूटी मोह चतुराई ॥ २ ॥
मस्त फकर का पाया लटका, भ्रम कर्म का फोड़्या मटका ।
सतगुरु शब्द मन माहीं अटका, निज सुरता सोंहम् विचारकी ।
मन पवना निज घर जाई ॥ ३ ॥ गुरु ज्ञानी उत्तम का शरणा ।
ज्ञान पाय जग जीवत मरणा, यम का लेखा कबहूँ न भरणा ।
गुरु युगति ले ततसार की, संत "रामप्रकाश" सुनाई ॥ ४ ॥

भजन (६३) राग छन्द भैरवी पद पारवा

पन्थ पायो परम कल्यान को, धन महिमा गुरु तुम्हारी ॥ टेर ॥
सतगुरु का उपकार न होता, लख चौरासी खाता गोता ।
भव भव में दुःख माही रोता, नहीं लखता आतम ज्ञान को ।
मैं भ्रमत फिरत अनारी ॥ १ ॥ माता पिता धन लड़का नारी ।
जग में करता म्हारी थारी, ऊमर खोता वृथा सारी ।
पच मरता जग की शान को, गुरु कृपा निर्भय भारी ॥ २ ॥

सतगुरु कृपा भ्रम नसाया, आतमज्ञान उदय हो आया।
मिटगी मूला तूला माया, जिन खोया स्व-अभिमान को।
नहीं गरज गुलामी धारी ॥ ३ ॥ ज्ञानी उत्तम सतगुरु पाया।
"रामप्रकाश" निजानन्द थाया, मस्त फकीरी आनन्द लाया।
निज चीन्हा परम विज्ञान को, सब द्वंद दोष दुःख हारी ॥ ४ ॥

भजन (६४) राग छन्द भैरवी पद पारवा

सतगुरु जी के उपकार में, क्या भेंट धरूँ मैं लाई ॥ टेर ॥
सतगुरु सत शब्द नहीं कहता, लख चौरासी रस्ते बहता।
भव सागर दुःख नाना सहता, बहु जन्म मरण की धार में।
बहु युग युग में भटकाई ॥ १ ॥ गुरु कृपा शुभ मंगल गावे।
जहाँ तहाँ बहु मौद बधावे, भक्त जिज्ञासू आनन्द लावे।
सब गूँज उठे जयकार में, विधि भांति अनेक सजाई ॥ २ ॥
त्रिलोकी में माया सारी, सतगुरुजी की रचना भारी।
देख देख मैं हूँ बलिहारी, धरूँ शीश चरण आधार में।
तन मन को भेंट चढाई ॥ ३ ॥ उत्तमराम उत्तम गुरु ज्ञानी।
गुरु कृपा सत युगति जानी, रामप्रकाश हृदय में आनी।
पद पाया निज विस्तार में, सत सोहं सोहम् गाई ॥ ४ ॥

भजन (६५) राग छन्द भैरवी पद पारवा

गुरु कृपा अभय पद पाय है, धन धन वे मौज फकीरी ॥ टेर ॥
कबहूँक भूखा प्यासा रहता, शीत उष्ण दुःख नाना सहता।
हर्ष शोक मन नाही चहता, नित मस्त मौज सुखदाय है।
नहीं दिल में कछु दिलगीरी ॥ १ ॥ कोईक मंगल वंदन करता।

कोईक बहु बधावा धरता, महिमा मौद दण्डवत भरता।
कोई बहु निन्दा फैलाय है, क्या अजब पाई जागीरी ॥ २ ॥
कबहूँ नाना शाल दुशाला, षट् रस भोजन बहुविधि आला।
कबहूँ लीर मेला पट काला, जो होय दिगम्बर जाय है।
कछु शर्म नहीं लजधीरी ॥ ३ ॥ ब्रह्मवेता उत्तम गुरु ज्ञानी।
ज्ञान युक्ति साधन से जानी, सतसंगत कर उर में आनी।
संत "रामप्रकाश" मनाय है, झक मारे लाख अमीरी ॥ ४ ॥

भजन (६६) राग छन्द भैरवी पद पारवा

मैं उत्तम सतगुरु पायके, भया मस्त फकर मतवाला ॥ टेर ॥
साधन सहित गुरु का शरणा, भवसागर से सहजे तरणा।
पाय मनुष्य तन कारज करणा, निज निर्भय पद में जाय के।
हो वैरागी निरवाला ॥ १ ॥ गरज गुलामी नहीं है नेरी।
चारों दिशा जागीरी मेरी, मिट गई अविद्या मेरी तेरी।
निज एक हरि दरसायके, पद पाया परम विशाला ॥ २ ॥
राजा राणा चाहै जोई, नेता वेता होवे सोई।
किन से काज न मेरा कोई, नित हरि गुरु को ध्याय के।
निज सोहं में घर घाला ॥ ३ ॥ उत्तमराम उत्तम ब्रह्मवेता।
"रामप्रकाश" चरण में चेता, सब को निर्भय प्रकट केता।
लो शरण गुरु की जाय के, सब कटे कर्म का जाला ॥ ४ ॥

भजन (६७) राग छन्द भैरवी पद पारवा

भव को साधन विसराय के, सुमिरण नेह लगाया ॥ टेर ॥

साधन सहित गुरु शरणे आया, सोहं शब्द का नाद सुणाया।
हरदम स्वासो स्वासा ध्याया, मन पवना एक मिलाय के।
निज सोहं सुरत समाया ॥ १ ॥ इडा पिंगला सुषुमण जानी।
अर्ध उर्ध की युक्ति आनी, त्रिकूटी में त्राटक तानी।
निज अखण्ड ज्योति लिवलाय के, अनहद का नाद घुराया ॥ २ ॥
सोहम् हंसो हंसो सोहंम्, रणुकार गरजे नित ओहम्।
आप भुलाया आपा कोहम्, सब दुर्मति द्वन्द हटाय के।
निज परख्या प्रेम सवाया ॥ ३ ॥ उत्तमराम योगेश्वर सूरा।
ता शरणे सुख पाया नूरा, रामप्रकाश सदा भरपूरा।
शुद्ध परमात्म दरशाय के, निज बूंद में सिंधु समाया ॥ ४ ॥

भजन (६८) राग छन्द भैरवी पद पारवा

युग चारों का प्रमाण है, वर्षाविधि सुनले भाई ॥ टेर ॥
सतरह लाख अट्ठाईस हजारा, सतयुग वर्ष जान ले प्यारा।
कच्छ मच्छ वराह नृसिंह अवतारा, कार्तिक सुदि नवमी जाण है।
तिथि शुभ युगादि गाई ॥ १ ॥ बारह लाख छान्नबे हजारा।
त्रेतायुग तीन अवतारा, वामन परसु राम विचारा।
वैशाख अक्षय तीजाण है, शुभ तिथि युगादि सुहाई ॥ २ ॥
आठ लाख चौसठ हजारा, वर्ष द्वापुर के जान आचारा।
श्रीकृष्ण रू बुद्ध अवतारा, माघ अमावस छाण है।
तिथि क्रम युगादि लखाई ॥ ३ ॥ चार लाख बतीस हजारा।
कलियुग वर्ष जान लो सारा, कल्कि एक अवतार उजारा।
भादव वदि तेरस ताण है। युग शुभ तिथि आदि आई ॥ ४ ॥

सत्य दया तप दान ये चारों, धर्मपद लख युग में धारो।
हरि भजन कर जनम सुधारो, सब मिटती खैंचाताण है।
सुखराम भजन महिमाई ॥ ५ ॥ उत्तमराम संत देता हेला।
"रामप्रकाश" कहै सुण चेला, नर तन पायो बाँधो बेला।
हरि भक्ति से कल्याण है, श्रीराम भजो सुखदाई ॥ ६ ॥

भजन (६९) राग छन्द भैरवी पद पारवा

तूँ बैठा आप भुलाय के, निज ब्रह्म रूप है भाया ॥ टेर ॥
जीव नहीं तूँ ब्रह्म आप है, सोंह अपना निज जाप है।
निज रूप भुलाना महापाप है, नित ताते जनम धराय के।
लख चौरासी भटकाया ॥ १ ॥ सिंह आपणा रूप भुलाना।
बकरा मान के आप भ्रमाना, सूआ ज्यों नलकी लटकाना।
निज कपि ज्यों मुठी ग्रहाय के, निज अपना बन्धन ठाया ॥ २ ॥
मृग तृष्णा जल स्वप्ने नाहीं, स्वप्ने देख जंजाल भुलाही।
रज्जु में सर्प होत है काही, निज चांदी सीप दिखाय के।
भ्रम रूप जगत दिखलाया ॥ ३ ॥ सतगुरु "उत्तमराम" को ध्यावो।
"रामप्रकाश" सहज ही पावो, संशय-भ्रान्ति दूर हटावो।
सतसंगत में परखाय के, निज जानो अचल अजाया ॥ ४ ॥

भजन (७०) राग छन्द भैरवी पद पारवा

क्यों भूल रहा निज आपको, तूँ आप ब्रह्म अविकारी ॥टेर ॥
सत चेतन है स्वयं प्रकाशी, अचल अखण्ड आप अविनाशी।
आतम आनन्द परम हुलासी, सब काट पुण्य अरु पाप को।
लख एक रूप ब्रह्मचारी ॥ १ ॥ अजर अमर है एक अनामी।

अनन्त अमाप आप घननामी, अस्ति भाति प्रिय अन्तर्यामी।
क्यों भुगते अविद्या ताप को, यह माया विवृत धारी ॥ २ ॥
आप भूल के भ्रम भुलाया, संशय भ्रान्ति अज्ञान लुभाया।
आवर्ण माही यों अलुझाया, ज्यों मकड़ी तार संताप को।
सब प्रपञ्च खोज विडारी ॥ ३ ॥ उत्तमराम गुरु उत्तम प्यारा।
"रामप्रकाश" स्वरूप तुम्हारा, गुरु-शिष्य है नाम हमारा।
तूं है सो मैं सोंहम् जाप को, द्वन्द भेद सभी को टारी ॥ ४ ॥

भजन (७१) राग छन्द भैरवी पद पारवा

कर खबर आप निरवान की, निज सोहंम् एक अजाया ॥ टेर ॥
जीव नहीं तूं चेतन नूरा, घट मठ व्यापक आप हजूरा।
अजर अमर आतम भरपूरा, शुद्ध मान बात यह ज्ञान की।
तूं अविद्या से विलगाया ॥ १ ॥ आप सर्वज्ञ सदा अजाया।
मान अल्पज्ञ भ्रम भुलाया, शुद्ध चेतन सो जीव कहाया।
यह बात महा अज्ञान की, जल कीचड़ ज्यों विलमाया ॥ २ ॥
सबका द्दष्टा चेतन साखी, सन्त शास्त्र वेदान्तों भाखी।
प्रकट बात गुप्त नहीं राखी, निज साधन से निज छान की।
लख द्दष्टा एक द्धाया ॥ ३ ॥ जन्म मरण मुझ में नहीं भासे।
चेतन "रामप्रकाश" प्रकाशे, हर्ष शोक नहीं होवे नासे।
यह निष्ठा परम कल्यान की, रट सोहम् आप अमाया ॥ ४ ॥

भजन (७२) राग सहेली पट मञ्जरी पद हेली

सतगुरु आनन्द रूप है, महिमा अपरम्पार ॥ टेर ॥

ईश्वर तन वैराट में, कोटिक ब्रह्मण्ड धार।
प्रति ब्रह्मण्ड ब्रह्मनबसे, भिन्न-भिन्न वेद विचार ॥ १ ॥
प्रति ब्रह्म मुख सरस्वति, कोटिक बसे अचार।
नित नया गुण गावती, गुरु गुण छेह न पार ॥ २ ॥
शेष नाग मुख सहस्त्र में, जिभ्या दोय हजार।
प्रति मुख कोटिक शारदा, गुरु गुण नाम उचार ॥ ३ ॥
"उत्तमराम" सतगुरु गति, ब्रह्मवित परम उदार।
"रामप्रकाश" गावत थके, ऋषि मुनि संत अपार ॥ ४ ॥

भजन (७३) राग सहेली पट मञ्जरी पद हैली

सतसंग में चालो सखी, सज सौलह श्रृँगार ॥ टेर ॥
जप,तप, सतसंग, नियम, व्रत, यज्ञ, तीर्थ, विधि धार।
सेवा, मर्यादा, अर्चना, पूजा, पाठ, आचार ॥ १ ॥
संत शरणा, गुरु चरण रज, याग विविध प्रसार।
बहिरंग कृतिम साधना, सोलह यही प्रकार ॥ २ ॥
विवेक, वैराग्य, शम, श्रद्धा, दम, उपराम चित सार।
तितिक्षा, क्षमा, अस्तेय रू, सत्य, संतोष, विचार ॥ ३ ॥
अहिंसा, अपरिग्रह, श्रवण कर, मनन, वेदान्त प्रस्तार।
अकृतिम अतंरग धारणा, पावे साक्षात्कार ॥ ४ ॥
ब्रह्म विषयणि बुद्धि में, विद्या जगे अपार।
अन्तःकरण वृति सखी, ता संग सभी सुधार ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" ज्ञानी गुरु, कृपा करी सुचार।
"रामप्रकाश" शरणे भया, परस्यो सिरजणहार ॥ ६ ॥

निष्कामी निष्प्रह गति, त्याग परम वृत धार।
"रामप्रकाश" ज्ञानी महा, प्रभु मय आनन्द कार ॥ ५ ॥

भजन (७६) राग कव्वाली, पद

कहा बतावें इस दुनिया की, चालें बड़ी निराली है।
चाहै जो कह बात बनाते, बिना काम मतवाली है ॥ टेर ॥
मौन रखे तो कहते हैं सब, मूरख ढौंग बुद्धि बाली है।
जो बोले तो कह बतलावे, बाबा बड़ा वाचाली है ॥ १ ॥
व्रत लगे तो कहन लगे है, निकमा कर्म कंगाली है।
भोजन करे तो कहते हैं वे, स्वाद भोजनी जाली है ॥ २ ॥
प्रेम रखें तो कहै स्वार्थी, लगे भीड़ कोतवाली है।
जो न रखते प्रेम किसी से, कहै समझ बिन हाली है ॥ ३ ॥
जो मांगे तो कहने लागे, बाबा बड़ा सवाली है।
कछु न मांगे मस्त रहे तो, घमण्डी कहत गर्वाली है ॥ ४ ॥
साधन भजन पूजन नहीं समझे, अपने हाल बेहाली है।
सन्तों को मजबूर करत है, बिन मतलब बेस्वाली है ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" गुरु पंथ बताया, ज्ञान रहन संभाली है।
"रामप्रकाश" वैरागी कहता, लगी ज्ञान धुन ताली है ॥ ६ ॥

भजन (७७) राग कव्वाली पद

समय बड़ा बलवान जगत में, समझे गुरु मुख प्यारा है।
बिन समझे सब गोता खावे, समझे होय निस्तारा है ॥ टेर ॥
घड़ी बन्द हो स्वास बन्द हो, चाहे बन्द दरबारा है।
समय नहीं पल एक बन्द हो, चलता रहे चलारा है ॥ १ ॥

चाँद रूके चाहै सूरज रूक जा, चाहै रूको लख तारा है।
हरि हर ब्रह्मा कीड़ी कु जर, हो नित मिटत हजारा है॥ २ ॥
एक स्वास की कीमत समझे, पल-पल हो हुशियारा है।
लगा रहे हरि भजन काम में, जीवन सो धनकारा है॥ ३ ॥
आज बालापन कल तरूणःपन, होवे वृद्ध चलवारा है।
गया समय फिर लौट न आवे, आवे-जावे संसारा है॥ ४ ॥
बीत गया सो बीत गया वह, हाथ न आय दुबारा है।
करणी करले करना चाहै, होजा भव से पारा है॥ ५ ॥
"उत्तमराम" कह कर ले प्राणी, गुरु मुख से उपकारा है।
"रामप्रकाश" गुरु शरण राम की, पावो राम दुबारा है॥ ६ ॥

भजन (७८) राग कव्वाली, प्रभाती पद

शौच करे अशौच निवारण, समझे गुरु मुख बहोते है।
संत दर्शन सतसंग हरि कीतंन, करते ही मल खोते है॥ टेर ॥
जन्म मरण के सूतक घर में, विविध रूप से होते है।
काम क्रोध के सूतक तन में, क्षण-क्षण में ले गोते है॥ १ ॥
मोह लोभ तृष्णा के सूतक, तन मन में ये छोते है।
इन्द्रिय अशुद्धि सूतक रहते, तनधारी संग नोते है॥ २ ॥
नाना अशुद्धि रूप अविद्या, सब को भव डुबोते है।
जो करता संत सेवा हरि-जप, वो तर जाय कठोते है॥ ३ ॥
सब पतितों को पावन मंत्र है, सतसंग से मन जोते है।
सर्व अशौच शुद्धि कर तन मन, ज्ञान जल से धोते है॥ ४ ॥

"उत्तमराम" पावन अति पावन, पावन को संग ढोते है ।
"रामप्रकाश" पतित के पावन, अचल गुरु के पोते है ॥ ५ ॥

भजन (७९) राग कव्वाली, ताल कहरवा पद

झटका कईक आवे जीवन में, कायर सहन नहीं करते है ।
झटका सहन करे नर पूरा, सफल पुरूषार्थ भरते है ॥ टेर ॥
झटका जीवन मरण का लागे, सभी जीव यों चरते है ।
झटका नारी पिता पुत्र का, जगत जाल में मरते है ॥ १ ॥
झटका घाट में लगे थाट में, जग व्यवहार में धरते है ।
झटका भवन राज घाटे में, महा व्यापार में हरते है ॥ २ ॥
झटका छोटा झटका मोटा, झटके जग में झरते है ।
झटका मारे झटका तारे, झटके सहते नर ते है ॥ ३ ॥
झटका लागे माया मांही, जनम मरण भव परते है ।
झटका कोईक हरिजन सहता, भव सागर से तरते है ॥ ४ ॥
झटका शाह सुल्तान भोगिया, दासी वचन संभरते है ।
झटका राज भृत-हरि त्यागया, पिंगला चरित्र बरते है ॥ ५ ॥
झटका लागा गोपीचन्द को, माता वचन उचरते है ।
झटका अच्छा बुरा जगत में, माया खेल विहरते है ॥ ६ ॥
"उत्तमराम" सतगुरु भर दिया, झटका शब्द संचरते है ।
"रामप्रकाश" झटके में झटका, पूरण ज्ञान वितरते है ॥ ७ ॥

भजन (८०) राग कव्वाली, ताल कहरवा पद

खटका सदा लगा ही रहता, जग के भीतर सारा है ।
खटका तारे खटका मारे, किया विवेक विचारा है ॥ टेर ॥

खटका जीवन मरण का नित ही, खटके में संसारा है।
खटका नित मरने का लागा, वैद्य हकीम निहारा है ॥ १ ॥
खटका पिता पुत्र धन नारी, विविध भांति विस्तारा है।
खटका मरण संकट का नित ही, नाश भागे भयवारा है ॥ २ ॥
खटका छोटा खटका मोटा, खटका ही व्यवहारा है।
खटका सारा माया रूप है, खटके में व्यापारा है ॥ ३ ॥
खटका नाश संशय भ्रम कहिये, पल क्षण का चमकारा है।
खटके में सब कार्य होत है, योग संयोग आचारा है ॥ ४ ॥
बेखटके नित हरि गुरु स्वामी, सो सब का आधारा है।
साधु संत साधक सब खटके, भीतर साधन सारा है ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" खटका को जाण्या, खटका भव असारा है।
"रामप्रकाश" खटके का जीवन, खटके में भव पारा है ॥ ६ ॥

भजन (८१) राग कव्वाली, प्रभाती ताल पद

भटक रहा नर जीवन क्षेत्र में, भटके सब संसारा है।
भटका जग में पल-पल मांहि, सुधरे कोईक प्यारा है ॥ टेर ॥
माया काज भटके कोई प्राणी, अपने ही आचारा है।
सुत नारी प्रणय हित भटके, त्रिगुण भाव विचारा है ॥ १ ॥
राज साज घर कारण भटके, अविद्या के विचारा है।
पैसे कारण भटके सब ही, लालच तृष्णा लारा है ॥ २ ॥
व्यर्थ क्षण खोवे सो भटका, प्रपंच खूब पसारा है।
भटक भटक कर खोया जीवन, आनागमन भव धारा है ॥ ३ ॥

भटका भटक कई सुधरया पूरा, पाया हरि का द्वारा है।
सिद्ध भये पण्डित संत ज्ञानी, खूब किया प्रचारा है॥ ४ ॥
भटक भटक में अन्तर सारा, जाणे जाणण हारा है।
भटके शुभ में लाभ कमावे, अशुभ भटक भटकारा है॥ ५ ॥
भटक सन्तन के शरण गुरु गम, माया मोक्ष इतबारा है।
"रामप्रकाश" गुरु शरणे भटका, भया जीवन निस्तारा है।

भजन (८२) राग कव्वाली

शब्द सदा सामर्थ जगत में, शब्द रूप संसारा है।
शब्द बिना संशय नहीं टूटे, शब्द उद्धारण वारा है॥ टेर ॥
शब्द ही आता शब्द ही जाता, शब्द किया विस्तारा है।
शब्द ही शुक्ष्म और स्थूला, कारण भाव आधारा है॥ १ ॥
सर्गुण निर्गुण भाव शब्द के, शब्द किया प्रस्तारा है।
शब्द जगत का रूप कहावे, शब्द ही जाल पसारा है॥ २ ॥
शब्द उधारे शब्द ही मारे, शब्द करे निस्तारा है।
शब्द ही तारे शब्द डुबावे, शब्द ही परम आचारा है॥ ३ ॥
शब्द सुने व्यवहार जगत के, शब्द करे व्यवहारा है।
शब्द बिना त्रिगुण नहीं भासे, सभी शब्द व्यापारा है॥ ४ ॥
शब्द सुने भव धार बहावे, डूबे भव की धारा है।
शब्द सुधारे शब्द बिगारे, शब्द बड़ा व्यवहारा है॥ ५ ॥
शब्द ही जड़-चेतन स्वरूपा, शब्द जगत आकारा है।
शब्द सुने भव मूल कटावे, मिटे त्रिगुण अंधियारा है॥ ६ ॥

शब्द से संत अनंत उधरिया, गुरु जन मुख शब्द विचारा है।
"रामप्रकाश" शब्द का महरम, समझाया शब्द उचारा है ॥ ७ ॥

भजन (८३) राग कव्वाली ताल कहरवा पद

काल अप्रबल समर्थ है जग, परम महा बलकारी है।
काल स्वरूप अनन्त अजाया, सर्गुण निर्गुण धारी है ॥ टेर ॥
काल उपावे काल खपावे, काल करत व्यवहारी है।
काल बनावे काल मिटावे, काल बड़ा व्यापारी है ॥ १ ॥
काल बिना सब भे विलावे, काल करे विस्तारी है।
काल नाम है समय रूप का, त्रिगुण भाव पसारी है ॥ २ ॥
भूत भविष्य वर्तमान सो, मृत्यु काल आधारी है।
पल-पल क्षण-क्षण काल विलावे, होय काल अनुसारी है ॥ ३ ॥
हरि हर ब्रह्मा देव रू दानव, सृष्टि में देहधारी है।
मानव अथवा जन्तु मात्र सो, सब ही काल अहारी हैं ॥ ४ ॥
काल जगत संहारक पूरा, काल कर्म तैयारी है।
काल जीत कर संत अनंतो, पाया प्रेम सुखियारी है ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" अकाल अयोनी, ताका भजन ततसारी है।
"रामप्रकाश" निरंजन जप के, जीता काल युद्ध भारी है ॥ ६ ॥

भजन (८४) राग कव्वाली ताल कहरवा पद

पन्थ अनेक जग मांहि जाहिर, अपने अपने रस्ते है।
भोली दुनिया जा जा देखे, कोई महंगे कोई सस्ते है ॥ टेर ॥
कोई राजस कोई तामस पूरे, कोईक सात्विक कस्ते है।
कोई पूजे यक्ष भेरू खेतला, देवी देव बहु अस्ते है ॥ १ ॥

कोई लागे है भूत जगाने, कूकण रूकण खस्ते है।
कोई लागे भिन्न विविध रूप से, अपने साधन गस्ते है ॥ २ ॥
कोई तोड़े जंजीर जोर तन, तिलक माल के छस्ते है।
तड़क भड़क विधि सांग साज के, सम्मोहन के जस्ते है ॥ ३ ॥
भीड़ लगी जग भागी जावे, चमत्कार के चस्ते है।
भेड़ चाल संसार देख के, आस्तिक जन नित हस्ते है ॥ ४ ॥
नये नये पन्थ जगत में चाले, बिन सिद्धान्त के पस्ते है।
चेला रूठे पन्त नया हो, बात उसी को भुस्ते है ॥ ५ ॥
धर्म सनातन वेद प्रमाणित, गुरु गम सब को ठस्ते है।
रामानन्द प्रसाद सदा है, राम शब्द बल डस्ते है ॥ ६ ॥
"उत्तमराम" निज राह दिखाई, तज पाखण्ड के पस्ते है।
"रामप्रकाश" मस्ताना गुरु गम, अपनी मौज में लस्ते है ॥ ७ ॥

भजन (८५) राग कव्वाली ताल कहरवा पद

भूख बड़ी विकराल जगत में, सब के अंग में लागी है।
यमराज की बहन भाणजी, रूप अरूप अलागी है ॥ टेर ॥
जीव जन्तु नर नारी तन धर, सब के उर में आगी है।
सुर नर दानव यक्ष भूतआ, तीन लोक में जागी है ॥ १ ॥
प्रेत किन्नर गान्धर्व पशु आदि, सब के संगत सागी है।
पवन घास जल मट्टी मेवा, भोजन से ही भागी है ॥ २ ॥
त्यागी रागी राजा प्रजा, छोटे मोटे खागी है।
नौकर भिखारी सेठ शाहू सो, भूख भूख कर छागी है ॥ ३ ॥

भूख के खातिर भई दासता, भूख के कारण अभागी है।
परतन्त्रता भूख ने लाई, विश्व सारा अनुरागी है॥ ४॥
"उत्तमराम" कर उदर पूर्ति, मिथ्या जगत को त्यागी है।
"रामप्रकाश" पाया पद सामर्थ, रामचरण रति लागी है॥ ५॥

भजन (८६) राग कव्वाली ताल कहरवा पद

संयम ही जीवन का साधन, ज्योति का उज्वाला है।
संयम बिना कोई भी व्यक्ति, पाता नहीं मशाला है॥ टेर॥
संयम हो वस्त्र पहनन में, शोभित संयम वाला है।
संयम हो भोजन के करने, रोगहीन सुख आला है॥ १॥
संयम जीवन के प्रति क्षण में, आनन्द दे मतवाला है।
संयम साधन मूल समझ ले, भव का काटे जाला है॥ २॥
संयम मंत्र सिद्धि का दाता, साधन का रखवाला है।
संयम तन मन धन का रक्षक, जीवन ज्योति की माला है॥ ३॥
संयम रखे पावे पद पूरण, धर्म स्वरूप संभाला है।
संयम ते साधु का जीवन, व्रत उपवास विशाला है॥ ४॥
संयम तो गृहस्थी का जीवन, सर्व दुःखों को टाला है।
संयम व्यय अर्थ में वरते, सो सामाजिक वरमाला है॥ ५॥
"उत्तमराम" संयम कर पाया, परमार्थ पद पाला है।
"रामप्रकाश" संयम ही साधन, जासे करे भ्रम काला है॥ ६॥

भजन (८७) राग कव्वाली ताल कहरवा पद

अंत सभी का आता है, जग में जो चीज दिखाती है।
अंत नाम अरू रूप सर्व्र का, एक अनंत अजाती है॥ टेर॥

अंत काल मृत्यु सम जानो, समय टाईम बतलाती है।
नाम अनेक अंत के भाखे, सर्वस्व विलय की क्रांति है ॥ १ ॥
गल जाती है सड़ जाती है, या मृत्यु को पा जाती है।
सुल जाती है घुल जाती है, या ढह कर के गिर जाती है ॥ २ ॥
होना मिटना उदय अस्त में, जन्म मरण करवाती है।
अन्त नाम से विश्व परिवर्तन, प्रकृति खेल खिलाती है ॥ ३ ॥
अन्त अनेक रूप से होता, विश्व वस्तु दरशाती है।
प्राणी मात्र अवस्था पाते, अन्त नाम परखाती है ॥ ४ ॥
"उत्तमराम" अनन्त सुमरय, पाई अनन्त की शांति है।
"रामप्रकाश" में अंत माया का, नाम रूप का घाती है ॥ ५ ॥

भजन (८८) राग कव्वाली ताल प्रभाती पद

महा दुर्लभ है जीवन बिताना, समझदार को घाटा है।
कायर कपूत निखटू जन का, जीवन होय नित खाटा है ॥ टेर ॥
बुद्धिमान चिंतातुंर रहता, उद्यम श्रम दिन काटा है।
निकम्मे पड़े घूमते व्यर्थ, झूँठी पतल चाटा है ॥ १ ॥
पुरूषार्थी मेहनत कर पावे, गटर मटर कर टाटा है।
पाय क्लेश माया मद माते, मौज मस्ती का ठाटा है ॥ २ ॥
नशे पते में पड़े निखटू, सब का पावे डाटा है।
व्यसन जुआ में जाय तमासे, बिखर जाय सब थाटा है ॥ ३ ॥
मंद बुद्धि उपजे नहीं शुद्धि, भया चितंन पर दाटा है।
आलस में जीवन को खोते, पशु बराबर नाटा है ॥ ४ ॥

हानि लाभ चक्कर में चिंता, दौड़ धूप कर पाटा है।
परिजन पालन दाल रोटी में, ऐसा जीवन फाटा है॥ ५॥
"उत्तमराम" हर्ष शोक मिटाया, डाला सब पर भाटा है।
"रामप्रकाश" उत्तम के शरणे, निर्भय निशंक पद लाटा है॥ ६॥

भजन (८९) राग कव्वाली ताल

गरज भरी जन जीवन जग में, गरज रखे सो पावे है।
गरज बिना पशु जीवन जीना, गरज बिना पछुतावे है॥ टेर॥
गरज काम करवावे सारा, गरज जगत अलुझावे है।
गरज करावे सेवा नीची, गरजी हो मंगतावे है॥ १॥
गरज पेट के खातिर करता, गरज हीनता लावे है।
गरज पैसे स्वार्थ से करता, गरज विदेश फिरावे है॥ २॥
गरज करावे पशु चाकरी, ओछी अकल उपावे है।
गरज हानि और लाभ देत हैं, गरज जीना सिखलावे है॥ ३॥
गरज बिना संत हरि का सेवक, कुल कुटुम्ब छिटकावे है।
गरज गुलामी दूर निवारी, राम नाम गुण गावे है॥ ४॥
गरज छोड़ संसार भाव की, भवसागर तर जावे है।
गरज एक रख राम नाम की, अमर इतिहास बनावे है॥ ५॥
गरज गुरु कृपा की राखी, उत्तमराम निरदावे है।
"रामप्रकाश" फकर गुरु शरणे, सारी गरज मिटावे है॥ ६॥

भजन (९०) राग कव्वाली ताल

उत्तम को सब चाहे जग में, उत्तम सब का प्यारा है।
उत्तम बिना जग में नहीं कोई, वोही प्राण आधारा है॥ टेर॥

उत्तम को शुभ दानव मानव, सुर गन्धर्व गुण धारा है।
उत्तम ऋषि मुनि संत चाहते, उत्तम का दीदारा है॥ १ ॥
सर्गुण निर्गुण उत्तम सोई, उत्तम त्रिगुण व्यवहारा है।
जप तप व्रत पूजा सब उत्तम, उत्तम यज्ञ उदारा है॥ २ ॥
वेद पुराण षट् शास्त्र गीता, उत्तम स्वास्थ्य पुकारा है।
उत्तम पुरुष जिज्ञासु पाठक, मुमुक्षु ज्ञानी विचारा है॥ ३ ॥
उत्तम सत्य शिव सुन्दर उत्तम, उत्तम जग व्यापारा है।
योग क्षेम उत्तम का आश्रय, प्रकृति उत्तम प्रस्तारा है॥ ४ ॥
जा पर गुरु उत्तम हरि राजी, उत्तम बसे सुख सारा है।
उत्तम रूठे कभी न तूठे, उत्तम ऊठे घर बारा है॥ ५ ॥
उत्तम राजी सुर नर साजी, उत्तम त्रिलोक मंझारा है।
उत्तम बिन कोई देव न उत्तम, उत्तम परम अवतारा है॥ ६ ॥
उत्तम साधन हरि गरु उत्तम, उत्तम मोक्ष मग चारा है।
उत्तम कर पुरुषार्थ उत्तम, उत्तम भ्रम भव डारा है॥ ७ ॥
उत्तम को उत्तम ही चाहे, उत्तम आवर्ण को टारा है।
उत्तम को चाहे नहीं मध्यम, उत्तम भाग्य बिन कारा है॥ ८ ॥
उत्तम सुमिरे उत्तम पावे, उत्तम उत्तम गुरु द्वारा है।
उत्तम राम का अनुचर बालक, सतगुरु का उपकारा है॥ ९ ॥
उत्तम गुरु उत्तम हो चेला, उत्तम वेद विस्तारा है।
उत्तम बिन जग और न भासे, पावे उत्तम निस्तारा है॥ १० ॥

"उत्तमराम" उत्तम सतवक्ता, उत्तम शब्द उचारा है।
"रामप्रकाश" उत्तम के शरणे, पाया उत्तम दीदारा है ॥ ११ ॥

भजन (९१) राग लावणी तर्ज प्रभाती पद

मानव जिससे लेता उसका, करना पड़त चुकारा है।
प्रकृति का न्याय अटल है, टरे न रंच लिगारा है ॥ टेर ॥
वायु से है प्राण प्रसारण, स्थूल शुक्ष्म प्रस्तारा है।
तेज सदा तन मन का प्रेरक, या बिन शव सम सारा है ॥ १ ॥
जल से तन सदा रह ताजा, हरित द्रव सुख वारा है।
पृथ्वी सर्वाधार शरीरी, परम शुक्ष्म विस्तारा है ॥ २ ॥
चन्द्र सदा तन ब्रह्मण्ड मांही, दे अमृत की धारा है।
ताप त्रय जो अन्तर बाहिर, करे शान्ति वरतारा है ॥ ३ ॥
सूर्य करे मल शोषन ज्योति, पिण्ड ब्रह्मण्ड परिवारा है।
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा, एक परस्पर प्यारा है ॥ ४ ॥
कर्म करे सो भोगन हेतु, सुखी दुःखी भण्डारा है।
पिता होकर कोई आता है, तब करता सुखकाला है ॥ ५ ॥
पुत्र बने कोई भाई बन के, विविध सम्बन्ध उदारा है।
बेटा बेटी लेन देन के, सुविधा दुविधा चारा है ॥ ६ ॥
कोई लेता है कोई देता है, यहाँ होता सब निपटारा है।
"रामप्रकाश" भोग को भोगे, पुरुषार्थ अनुसारा है ॥ ७ ॥

भजन (९२) राग लावणी तर्ज प्रभाती पद

फकर जनों की चाल निराली, नीति नियम निभाते है।
बेपरवाह मस्ताने साधु, अपने हाल चलाते है ॥ टेर ॥

गुरु गम हरि हम हरि हम गुरु गम, साधन सो नित गाते है।
प्रारब्ध के भोग समझ के, तन व्यवहार संभाते है॥ १ ॥
गरज गुलामी किस की नाही, जो मिलता सो पाते है।
देवी देव नहीं भूत भोमिया, आन देव नहीं ध्याते है॥ २ ॥
काया माया नाशवान सो, युक्ति हेतु पसाते है।
भुक्ति मुक्ति साधन सेवा, गुरु गम से ही लाते है॥ ३ ॥
ऐसा वैसा कभी न करते, अपनी मौज मनाते है।
क्या है ?कब है ? कैसा है ? यह, शंका नहीं फंसाते है॥ ४ ॥
हरष शोक कारण मन जीते, शास्त्र वेद सुमाते है।
शुभ मार्ग सन्देश बताते, परमार्थ पथ जाते है॥ ५ ॥
अन्न पट जल जगदीश मानते, उनके भेजे आते है।
जैसा मिले तैसे में राजी, भोजन भोग लगाते है॥ ६ ॥
उत्तम गुरु की मूर्ति मन में, उत्तम मंत्र विललाते है।
"रामप्रकाश" फिकर कर फाका, फकर फकीरी गाते है॥ ७ ॥

भजन (९३) राग लावणी तर्ज कव्वाली पद

धन धन मस्त फकीरी पाई, पहन फकीरी चोला है।
गुरु कृपा अलमस्ती आई, लिया सन्तन का ओला है॥ टेर ॥
चोले कईक पाकर त्यागे, चौरासी लख घोला है।
सर्व्र गुणों का पाया नहीं तब, चित में भया विनोला है॥ १ ॥
लम्बा छोटा मोटा होता, चद्दर—चोला पोला है।
पहनूं ओढूं चाहै बिछाऊँ, सभी काम में सोला है॥ २ ॥

नक्षत्र तिथि ग्रह करण योग से, चोला बना अमोला है।
परम पचांग हाथ पाँव सिर सो, भेद गुरु गम खोला है ॥ ३ ॥
परा अपरा के मांही बुनिया, त्रिगुण तत्व तन गोला है।
उपनिषद माला गुण कर से, गुरु गुण पाया झोला है ॥ ४ ॥
राधा कृष्ण मय चोला है यह, सीताराम से तोला है।
ब्रह्म आप है मुक्ति स्वरूप सो, अष्ठोत्तर से धोला है ॥ ५ ॥
ज्ञान विज्ञान युक्ति जग भुक्ति, गुरु मुक्ति से बोला है।
उक्ति युक्ति के सब गुण पूर्ण, लखे नाहीं जग भोला है ॥ ६ ॥
लख कर पावे सत समावे, बिना लखे बहु रोला है।
"रामप्रकाश" उत्तम गुरु धोया, ताप पाप कर होला है ॥ ७ ॥

भजन (९४) राग लावणी तर्ज कहरवा पद

जग के प्राणी आप मुसाफिर, यात्रा करके जाते है।
कई आते कई जाते जग में, कार व्यवहार चलाते है ॥ टेर ॥
दुःखिया सुखिया राव रंक जो, नित हिसाब चुकाते है।
देने को कोई आता है यहाँ, लेने को कोई आते है ॥ १ ॥
अपनी अपनी मांगत लेके, जग में तन धर ध्याते है।
कर्म भोगने योनि पाकर, अपना कर्म निभाते है ॥ २ ॥
टिकट कटा कर जाता है, कोई बिना टिकट मर जाते है।
टिकट कहीं का पहुँचे कहीं पर, बिना बुद्धि भटकाते है ॥ ३ ॥
किस श्रेणी का टिकट लिया अरू, किस श्रेणी में धाते है।
गलत जगह पर यात्रा करके, चौरासी भरमाते है ॥ ४ ॥

कहाँ से आया कहाँ को जाना, इसका पता न पाते है।
कहाँ कमाया कहाँ खर्चना ? धोखे में अलुझाते है ॥ ५ ॥
मार्ग दर्शक "उत्तम" गुरु हो, गोते सभी विलाते है।
"रामप्रकाश" सुखद हो घूमे, अपने माँहि समाते है ॥ ६ ॥

भजन (९५) राग लावणी तर्ज प्रभाती पद

चश्का जिन को लगता हैं वो, टारे से नहीं टरता है।
भला बुरा संस्कार कर्मों का, जीवन में नित भरता है ॥ टेर ॥
चश्का काम का लागा जिनको, मात पिता कुल हरता है।
तमो प्रवृति प्रपंच में हो,. तन मन धन ले मरता है ॥१ ॥
चश्का नशा व्यशन का लागा, गांजा भंग रस करता है।
दारू मांस हिंसा में सारा, जीवन खोकर जरता है ॥ २ ॥
चश्का जग व्यवहार लगे तो, पंचायत का परता है।
विषय रस पूरा पावे कूरा, खो जावे सब घरता है ॥ ३ ॥
चश्का हरि भक्ति का लागे, जग के भोग विसरता है।
राज ताज कुल परिजन तजता, भव सागर से डरता है ॥ ४ ॥
मोह मुकुर के महल विराजे, श्वान चश्का गति बरता है।
गुरु गम तिलक समता को समझे, पावे जीवन अमरता है ॥ ५ ॥
"उत्तमराम" गुरु कृपा पाई, चश्का भक्ति चरता है।
"रामप्रकाश" गुरु गम जीवन, भव सागर वो तरता है ॥ ६ ॥

भजन (९६) राग लावणी तर्ज प्रभाती पद

धर्मशाला का मेला जग यह, महा प्रबल व्यवहारा है।
अनन्त जीवों का होय समागम, मिल रहे संस्कारा है ॥ टेर ॥

कोई आता है कोई जाता है, कोई करता बहुत पसारा है।
करत हिसाब कर्मों का पूरा, पास दूर कर प्यारा है ॥ १ ॥
अपने सम्बन्ध स्थापित करते, होय रूप परिवारा है।
लूटे खोसे खावे कोईक, करे कमाई सारा है ॥ २ ॥
बिना समय उठ भोर सिधावे, पिता पुत्र बंधु दारा है।
दिवस रात का नहीं ठिकाना, प्रतिक्षण में मतवारा है ॥ ३ ॥
जितने हो संस्कार राशन में, भोगे भोग विचारा है।
चिट्ठी पाई सन्देशा आया, फिर नहीं समय गुजारा है ॥ ४ ॥
जैसी जगह मिले वहाँ वैसा, प्राणी करत विहारा है।
कमरा हो अलमारी बारी, खुला मैदान तन द्वारा है ॥ ५ ॥
चौरासी लख लम्बी चौड़ी, कौन त्रिकोण आचारा है।
चौकोणी योनि बहु भीतर, खेल बड़ा विस्तारा है ॥ ६ ॥
आना जाना जारी यहाँ पर, आदि से संसारा है।
"रामप्रकाश" बन्धन अरू मुक्ति, यहाँ से मिलता द्वारा है ॥ ७ ॥

भजन (९७) राग कव्वाली तर्ज प्रभाती पद

जग हटवाड़ा अजब बना है, मिले सौदागर सारे है।
महंगे सस्ते मोल बिकाते, कई हल्के कई भारे है ॥ टेर ॥
इच्छावत पुरूषार्थ करके, पावे मीठे खारे है।
कर्म कमावे सोई पावे, अपने पराये धारे है ॥ १ ॥
चतुर चौगुना माल खरीदे, भाति भाति विस्तारे है।
मूरख मूल गमावे अपना, कई जन्म के हारे है ॥ २ ॥

यश धर्म कीर्ति पुण्य आदि, विविध कर्म के कारे है।
पाप पुण्य सुख दुःख का कारण, मन बुद्धि कर्तव्य बारे है ॥ ३ ॥
चौरासी को कोई खरीदे, सौदागर मतवारे है।
कोईक देवलोक का भागी, व्यापारी शुद्ध चारे है ॥ ४ ॥
पाँचों मुक्ति गुरु की युक्ति, भुक्ति भोग भोगारे है।
कर्म जाल का होय चुकारा, अपने कर्म चुकारे है ॥ ५ ॥
देने वाले देते है तब, लेने वाले ले जारे है।
सोकर जाते सब ले जाते, बड़े विचित्र व्यवहारे है ॥ ६ ॥
"उत्तमराम" यह देख अचम्भा, लगे गुरु के द्वारे है।
"रामप्रकाश" नहीं मूल ठगाया, मिले गुरु मतवारे है ॥ ७ ॥

भजन (९८) राग कव्वाली ताल ३

देखत है सब तन धर प्राणी, देखन के ढंग न्यारे है।
देखत देखत पाते है कोई, देखत मूल विडारे है ॥ टेर ॥
चर्म द्रष्टि से देखत है कोई, वर्ण जाति धर्म धारे है।
दिव्य द्रष्टि से कोई कोई देखत, पावन नीति विस्तारे है ॥ १ ॥
समद्रष्टि से ज्ञानी देखत, आतम स्वरूप संभारे है।
जैसी द्रष्टि से देखत भाव को, तैसी सृष्टि विचारे है ॥ २ ॥
पाप-पुण्य को देखत है कोई, वर्णाश्रम निस्तारे है।
रंग रूप को देखत है सब, करणी के भिन्न वारे है ॥ ३ ॥
तन से कोई देखत है जग, इन्द्रिय कारज प्रस्तारे है।
मन से देखत ज्ञानी जन सो, देखत देखत व्यवहारे है ॥ ४ ॥

ममत्व द्रष्टि से कोई जन देखत, जन्म मरण अनुसारे है।
अपना पराया सब जन देखत, महा प्रपंच जग जारे है ॥ ५ ॥
पापी देखत धर्मी देखत, ज्ञानी अज्ञानी कारे है।
कामी क्रोधी मीत रू वेरी, लोभी प्रमादी डारे है ॥ ६ ॥
देखत व्यसनी हिंसक सब ही, देखत भव के ढारे है।
देखत जिज्ञासु सेवक पूरा, देखत गुरु जन तारे है ॥ ७ ॥
"उत्तमराम" देखत है सब को, भेद भाव जग टारे है।
"रामप्रकाश" देखत ही देखत, भव के भेद को हारे है ॥ ८ ॥

भजन (९९) राग कव्वाली ताल ३

चढ़े कसौटी परख होत है, परखे परखण हारा है।
साच झूँठ पहिचान बिना सब, धोखा खाय विचारा है ॥ टेर ॥
सोना पीतल रंग बराबर, कीमत कौन हजारा है।
छेदन घर्षण तापन क्रिया ते, कनक कसौटी वारा है ॥ १ ॥
काकर शाकर पांत्थर देखो, रंग फिटकरी खारा है।
चखे बिना नहीं स्वाद लखावे, यह परखे मतिवारा है ॥ २ ॥
तूम्बा और तरबूज देख लो, हंस बुगला रंग डारा है।
कोयल कौआ काले दोनों, रंगत पंगत टारा है ॥ ३ ॥
नट भट कामड़ कवि चारण सो, कविता करे अपारा है।
संत वाणी किमि होय बराबर, गति मति निस्तारा है ॥ ४ ॥
नट भेषी रंग कपड़ा भगवां, गृहस्थी साद संवारा है।
त्याग विवेक वैराग संतन को, अनुपम अलग आचारा है ॥ ५ ॥

वाचक बातों सीख साधन बिन, ज्ञानी करे ललकारा है ।
परम यथार्थ पायत लक्ष्यार्थ, विरला संत सचियारा है ॥ ६ ॥
"उत्तमराम" सतगुरु करि पारख, भाख्या कर विस्तारा है ।
"रामप्रकाश" लख्या कर निश्चय, सत चेतन इकसारा है ॥ ७ ॥

भजन (१००) राग गजल तर्ज कव्वाली पद

गणपति विघ्न विनाशक को हम, सर्गुण रूप से ध्याते है ।
बुद्धि सागर है गण नायक स्वामी, तिन को शीश नमाते है ॥ टेर ॥
शंकर सुत सो गौरी नन्दन, ज्ञान ध्यान मद माते है ।
मूषक वाहन परम सुहावन, तर्क-वितर्क बढ़ाते है ॥ १ ॥
ऋद्धि सिद्धि नारी सेवाकारी, तिन के संग सुहाते है ।
शुभ लाभ दो पूत सपूता, हर्षद चँवर झुलाते है ॥ २ ॥
देव सेनापति कार्तिक स्वामी, अग्रज सो मनचाते है ।
गज को वदन मदन के नासक, नर का चौला भाते है ॥ ३ ॥
स्वर्ण सिंहासन आप विराजे, वरद अभय कर छाते है ।
प्रकृति गण गुण हाजिर, सब ही शीश झुकाते है ॥ ४ ॥
मोदक प्रिय विविध रूप से, आसन आय लगाते है ।
मणि माणक गल हार सुहावन, कनक बाजु बन्द हाते है ॥ ५ ॥
ठुमक ठुमक चलना मन भावत, भक्तों के घर जाते है ।
वज्र अंकुश मुरछल कर सोहत, साधन अनुपम लाते है ॥ ६ ॥
प्रथम पूजा होत तुम्हारी, संकट शमन करवाते है ।
दुष्ट दमन सब विघ्न विडारत, सम्पति भण्डार भराते है ॥ ७ ॥

"उत्तमराम" गुरु गुण ज्ञाता, भक्त चाह मन पाते है।
"रामप्रकाश" गणेश मनावत, गुरु विधि से गुण गाते है ॥ ८ ॥

भजन (१०१) राग गजल पद

शारद सुमति दायक माता, समता शील उजागर हो।
बुद्धि बोद्ध विकाशक हो वर, ज्ञान विवेक की आगर हो ॥ टेर ॥
शारद हो हंस वाहन धारी, विद्या रूप प्रभाकर हो।
सरस्वति मयूर सुहावत भारी, वाहन के वत पाकर हो ॥ १ ॥
तुम ही लक्ष्मी तुम ही सीता, गौरी दुर्गा विभाकर हो।
ब्रह्माणी तुम रमा अम्बिका, विविध स्वरूप की नागर हो ॥ २ ॥
मणि माणक गल हार सुहावत, कनक तार संग साथर हो।
करधनि मुद्रिका छड़े कड़े कर, भूषण विविध सुधाकर हो ॥ ३ ॥
सुन्दर वस्त्र नाना विधि भावत, वरद हाथ सुहातर हो।
कर वीणा कण्ठ कोकिल सुन्दर वाणी रूप सदाकर हो ॥ ४ ॥

भजन (१०२) राग गजल तर्ज कव्वाली पद

सतगुरु पंच क्लेश विनाशक, शरण आप की आये है।
परमानन्द स्वरूप ज्ञान से, भ्रान्ति दोष को ढाये है ॥ टेर ॥
सर्व सिद्धि प्रद गण गुण दाता, गणपति रूप सुहाये है।
सतगुरु वरद अभय प्रद स्वामी, समर्थ परम मन भाये है ॥ १ ॥
अज्ञान तिमिर को दूर भगाते, बोद्ध प्रकाश फैलाये है।
ज्ञान कमल को विकसित करके, जीवन अमर बनाये है ॥ २ ॥
सतगुरु ब्रह्मा विष्णु सतगुरु, शंकर स्वरूप बताये है।
परब्रह्म निर्गुण सतगुरु सर्गुण, शोभा धाम जग छाये है ॥ ३ ॥

ब्रह्मचारी गुरु अन्तर्यामी, गुप्त गोपाल कहाये है।
गोविन्द स्वरूप गोपति आप हो, अगम धाम पहुँचाये है ॥ ४ ॥
परम योग शक्ति भक्ति से, गौरि-सूर्य कहलाये है।
त्रिगुण स्वरूप बन्धु पितु माता, रक्षक राज गुरु पाये है ॥ ५ ॥
जगत उपावत पालत ब्रह्मण्ड, प्रलय ताण्डव रचाये है।
विविध रूप में आप विराजे, सोहं स्वरूप से ध्याये है ॥ ६ ॥
अविद्या अस्मिता राग द्वेष को, अभिनिवेश नसाये है।
ज्ञान गरिमा भक्ति शक्ति ते, मुक्ति मांहि मिलाये है ॥ ७ ॥
"उत्तमराम" सतगुरु ब्रह्मवेता, ब्रह्म श्रौत्रिय युक्ति लाये है।
"रामप्रकाश" शरणागत जीवन, सतगुरु के गुण गाये है ॥ ८ ॥

भजन (१०३) राग गजल तर्ज ताल ३

सामर्थ सतगुरु स्वामी हमारा, पूर्ण हरि अवतारा है।
समय स्वरूप विविध हो आते, विश्व सिरजन हारा है ॥ टेर ॥
परम परमार्थ रूप यथार्थ, ज्ञान ध्यान दातारा है।
पंच क्लेश निवारक सतगुरु, हरि हर वेद पुकारा है ॥ १ ॥
भक्ति युक्ति मुक्ति दाता, ब्रह्मवेता निरधारा है।
शिव सनकादि नारद शारद, गावत कहत अपारा है ॥ २ ॥
पूर्ण प्रभा प्रत्यक्ष संवादी, ज्ञान-स्वरूप उदारा है।
अभय वरद कर शिष्य उद्धारे, इन्द्रिय जीत विचारा है ॥ ३ ॥
ब्रह्मवेता ब्रह्म श्रौत्रिय ज्ञानी, अच्युत अग्र श्री द्वारा है।
ध्यानी योगी वेद रूप सो, शास्त्रज्ञ तत्व उचारा है ॥ ४ ॥

गणपति भास्कर और निशाकर, ज्योति पुत्र आधारा है।
उत्तम के बिन सब ही मध्यम, रमताराम मल जारा है॥ ५ ॥
"उत्तमराम" उत्तम गुरु सामर्थ, अचलराम गुण धारा है।
"रामप्रकाश" साष्टाङ्ग दण्डवत, विविध प्रणाम हजारा है॥ ६ ॥

भजन (१०४) राग आरती पद

सतगुरु स्वामी सदा आपकी, होवे आरती अविनाशी।
रग-रग पग-पग आप विराजो, साक्षी हरदम सुख राशी॥ टेर ॥
ज्योति जले शशि भानु सदाई, पिण्ड ब्रह्मण्ड में प्रकाशी।
गन्ध गुलाल उड़े नित धूमिल, व्यापक विश्व सो छासी॥ १ ॥
मन में तन में रमता नित ही, स्वासा माहि सो आसी।
सब कुछ अर्पित सदा आपका, दुमर्ति दूरी हट जासी॥ २ ॥
जब जब सोऊँ दण्डवत तुझको, सदा होत है अवकाशी।
ऊठत बैठत नमस्कार नित, हरदम क्रिया पढ़ पासी॥ ३ ॥
जो जो पाऊँ भोग लगाऊँ, सो प्रसाद शुभ अभिलाषी।
जल वरतूँ सो जल की झारी, सामर्थ पूर्ण मन भासी॥ ४ ॥
जो जब बोलूँ नाम तुम्हारो, परमानन्द ही झलकासी।
व्यापक आप स्वामी शुभ मेरे, तेरे आसरे सब गासी॥ ५ ॥
जो जब करूँ धरूँ सो पूजा, वाचन मन्त्र सो फरमासी।
"उत्तम रामप्रकाश" शरण में, हरदम देखे गुरु काशी॥ ६ ॥

भाव स्वभाव फल अष्टक

कोऊक आवत शीश नमावत, भाव बढावत मौद बढावे ।
महिमा मंगल गावत भावत, चावत चाह घनी उर लावे ।
भोजन भाव नाना रस पूर्ण, नेम रु प्रेम सहित जिमावे ।
"रामप्रकाश" सु संत निर्लेप ते, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ १ ॥
कोऊ बुलावत प्रेम सुहावत, ढोल घुरावत रेज बिछावे ।
भाव गुलाल अबीर उडावत, थाल सजा कर आरती लावे ॥
तुरि बजावत माल नचावत, नाचत राचत प्रेम सुहावे ।
"रामप्रकाश" सु संत निर्लेप ते, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ २ ॥
कोऊक सो जयकार बुलावत, प्रेम उमावत नेम निभावे ।
फूलनहार विधि विधि लावत, केसर चन्दन पाँव लगावे ॥
लेत चरणामृत कृपा सुपातर, सो प्रसाद अनुपम खावे ।
"रामप्रकाश" सु संत निर्लेप ते, आपनो भाव तैसों फल पावे ॥ ३ ॥
कोऊ उपदेश सुने मन लाकर, चाकर होय अनूप सुहावे ।
कथा करावत प्रेम लगावत, सतसंग नेम सदा उर लावे ॥
भ्रम मिटे भव खेद कटे सब, कर्म कटे वर मोक्ष सिधावे ।
"रामप्रकाश" सु संत निर्लेप ते, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ ४ ॥
कोऊक हो गुणहीन कुपातर, निन्दक होय कुनिन्दा फैलावे ।
कृतघ्नी गुण चोर कु होय के, देवत कष्ट हृदय हरषावे ॥
गुरु का माल पचावत पामर, मोद करे बहु बात चलावे ।
"रामप्रकाश" न सन्त गने कछु, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ ५ ॥

मात पिता गुरु को निज ठागत, लागत लोभ लबार लजावे ।
संत गुरु नहिं भावत चावत, शास्त्र नीति हिये नहिं आवे ॥
लेवो हि लूटनो भाव बस्यो मन, कोऊ कहै पर हिये ना भावे ।
"रामप्रकाश" न संत गने कछु, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ ६ ॥
मानुष रूप गुरु पहिचानत, गुनि पुनि अवगुनि रेख खँचावे ।
चींचड़ क्षीर न परख परे इमि, दीपक तले अँधेर रहावे ॥
स्वर्ग-नरक हाँसि ही मानत, पामर पूर कपूत कहावे ।
"रामप्रकाश" न संत गने कछु, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ ७ ॥
धूर उडावत निन्दा फैलावत, दूर रहावत औगुण गावे ।
दर्शन सों दुःख दोष उपावत, गुरु को ज्ञान न लेस लगावे ॥
जेहिं विधि ध्यावत तेहिं विधि पावत, ईश-प्रकृति न्याय चुकावे ।
"रामप्रकाश" न संत गने कछु, आपनो भाव तैसो फल पावे ॥ ८ ॥

त्रिभङ्गी छन्द (उपदेश)

सतगुरु का शरणा, धीरज धरणा, सोहं सुमरणा, ले जरणा ।
शुभ कारज करणा, जीवत मरणा, भव से तरणा, मल हरणा ॥
नित होयअकरणा, निर्भय फिरणा, भव ना भरणा, पद चरणा ।
गुरु उत्तम ध्यावे, राम मनावे, आनन्द पावे, दुःख जावे ॥ ९ ॥
सतगुरु हमारा, पूरण प्यारा, चेतन धारा, सचियारा ॥
नित निर्गुण न्यारा, विश्व मँझारा, एक अपारा, सुखियारा ।
गुरु सत अविकारा, सर्गुण सारा, ओम उचारा, सुविचारा ॥
गुरु उत्तम ध्यावे, राम मनावे, आनन्द पावे, दुःख जावे ॥ १० ॥

सतगुरु जी स्वामी, अन्तर्यामी, सदा नमामी, घननामी।
गुरु सदा अकामी, आप अनामी, निज अभिरामी, निष्कामी॥
मैं गुरु अनुगामी, कछु न खामी, सो सुखधामी, परनामी।
गुरु उत्तम ध्यावे, राम मनावे, आनन्द पावे, दुःख जावे॥ ११ ॥
भेंट मिली इस काज पर, सो तो हरि के काज।
धर्म लाज शुभ लागसी, सतगुरु राखे लाज।
सतगुरु राखे लाज, शुभ मारग आडी आसी।
राम आश्रम काम में, धर्म-यश दोनों पासी॥
मुक्त हाथ निष्काम से, दीयो सु मिलसी थेंट।
"रामप्रकाश" साची कहै, याही सतगुरु भेंट॥ १२ ॥
सत कमाई लागसी, सत्य धर्म के काम।
सज्जन नेक लगावसी, दान भेंट शुभ ठाम॥
दान-भेंट शुभ ठाम, सुपात्र संत सु पावे।
संत वाणी छप जावसी, कबूतर-चिंटी चुगावे॥
प्याऊ मन्दिर बणावसी, धर्मशाला विद्या के गत।
"रामप्रकाश" दानी धनी, करे कमाई सत॥ १३ ॥
खण उण्डी गाढूँ नहिं, ब्याज न फेरुँ दाम।
तेरा भेज्या लागसी, तेरे लेखे राम॥
तेरे लेखे राम, रच भण्डार लुटाऊँ।
संत भक्त अतिथी सुखी, साहित्य ग्रन्थ छपाऊँ॥

संतदास प्रणालि को, नीति सहित यह पण।
"रामप्रकाश" शुभ मार्ग ते, रखूँ न संग्रह खण ॥ १४ ॥
आई ऋद्धि रोकूं नहिं, परमार्थ के भाय।
पाल बाँध राखूँ नहिं, ईश्वर अर्थ लुटाय ॥
ईश्वर अर्थ लुटाय, धर्म प्रचार चलाऊँ।
कीड़ी नगरे, पक्षी चुगे, अतिथि संत जिमाऊँ ॥
गुरु-धर्म प्रणालि को, कीर्तन करणो काम।
"रामप्रकाश" शुभ मार्ग दे, ऋधि जो आई दाम ॥ १५ ॥
वीर मात सूरा जणे, भक्ता संत सुजान।
दानवीर दाता जणे, गुणी देत गुणवान ॥
गुणी देत गुणवान, पापनि पाप उपावे।
चोर चुगलिया वो जणे, धर्म का माल पचावे ॥
गुरु संत मर्याद को, कुल को दागे कीर।
जन्म-गमावे अवगुणी, वो पापों का वीर ॥ १६ ॥
कूर मात कूरा जणे, अवगुण दोषी लाय।
धर्म कर्म जाने नहिं, माल पराया खाय ॥
माल पराया खाय, झूँठी बात जमावे।
निगुणी माता का जणिया, अपनो वंश गमावे ॥
गुण धर्म जाने नहीं, कृतघ्नी मति धूर।
जन्म गमावे अवगुणी, पापी पूरण कूर ॥ १७ ॥

अंग छहों है वेद के, विश्व ज्योति सुख ज्ञान।
मुख व्याकरण छंद चरण है, निरूक्त लखों सु कान॥
निरूक्त लखो सु कान, कल्प कला कर जानो।
चक्षु ज्योतिष त्रिस्कन्ध है, शिक्षा घ्राण बखानो॥
जग व्यवहार सुधार में, लखे पण्डित बुद्धि संग।
"रामप्रकाश" यूं शास्त्र कह, छहों वेद के अंग॥ ३८॥
दोहा- श्री धर्म वैराग्य यश, सर्व ऐश्वर्य अरु ज्ञान।
षट् भग धारे ते बने, पुरुषोत्तम भगवान॥ ३९॥
विद्या अविद्या जन्म मरण, विश्व उत्पति निर्वान।
षट् भग धारे ते बने, ज्ञानी श्री भगवान॥ ४०॥

श्री हरि ज्ञान-गर्भ चेतावनी

दोहा छन्द

उत्तम सतगुरु संत को, अनन्त कोटि प्रणाम।
हरि हर गणपति शक्ति शुभ, रामप्रकाश नमाम॥ १॥
सतगुरु हरि हर संत को, रामप्रकाश प्रणाम।
अघ हारण तारण तरण, परमानन्द सुख धाम॥ २॥
"उत्तमराम" उत्तम गुरु, ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप।
काट चौरासी बन्ध को, मेट्यो भव तम कूप॥ ३॥
जनम जनम बन्धन बन्ध्यो, लख चौरासी माहि।
योनि योनि भटकत फिरय, पायो मनुष तन साहि॥ ४॥

व्यवहारिक तन में घणो, माया को अनुरूप।
परमार्थ पायो नहि, रामप्रकाश स्वरूप ॥ ५ ॥
सतगुरु बिन चेते नहीं, अज्ञानी बहु जीव।
वार वार पावे नहि मनुष जनम में पीव ॥ ६ ॥
नर तन चोखो पायके, जाण्यो नहिं औसाण।
मानुष जनम विरथा गयो, ईश्वर कृपा खाण ॥ ७ ॥

चौपाई छन्द

ॐ गुरु सत धुंधुंकारा, राम शब्द पसर्या ततसारा।
आदि अन्त मध पहले भाया, एक अनादि असंग रहाया ॥ ८ ॥
असंग युगों पहले की माया, आप अलोगत एक अथाया।
परम पुरुषार्थ पूर्ण पाई, संस्फुर फुरणा मांहि समाई ॥ ९ ॥
इच्छा प्रमाद महतत माया, जगत मूल का बीज सुहाया।
तुरिया साक्षी अर्ध बिन्दु पूरा, सेतो साक्षी सब का भरपूरा ॥ १० ॥
अकार रजो, उकार समाया, तमो मकार मात्रा माया।
ब्रह्मा उत्पत्ति विष्णु पाले, शिव संहार प्रकृति माले ॥ ११ ॥
तीनों गुण ओ३म् की माया, सतो रजो तम होय समाया।
ज्ञान इन्द्रिय देव लखाया, अन्तःकरण सतो उपजाया ॥ १२ ॥
कर्म इन्द्रिय प्राण पसारा, दशों रजोगुण का प्रस्तारा।
पाँच तत्व सुक्ष्म पंचभूता, भया तमोगुण का अवधूता ॥ १३ ॥
समद्रष्टि दिव्य-चर्म झूला, तीन देव हो भव में भूला।
क्षण पल घड़ी पहर दिन रातों, चारों युग की होई बातों ॥ १४ ॥

प्रथम पुरुष फिर नारी माया, प्रथम गर्भ फिर स्वास समाया ।
प्रथम माता फिर पिता समाना, प्रथम नाद फिर बिंदु बखाना ॥ १५ ॥
निर्गुण सर्गुण शब्द पसारा, शब्द बिना नहीं गुंज विचारा ।
ज्ञान ध्यान गुण योग संसारा, शब्द रूप का बहु विस्तारा ॥ १६ ॥
प्रथम श़ब्द गुरु पाछे सुरता, प्रथम स्थिर माया गुण फिरता ।
प्रथम ज्ञान पाछे गुण ध्याना, प्रथम योग फिर भोग प्रमाना ॥ १७ ॥
प्रथम परम पुरुष निज सोई, प्रमेय प्रमाण प्रमाता जोई ।
प्रथम शुक्ष्म पीछे स्थूला, व्यष्टि समष्ठि नाना झूला ॥ १८ ॥
प्रथम गुरु फिर हुआ चेला, प्रथम मन फिर माया खेला ।
प्रथम भक्ति फिर शक्ति गावे, भक्ति युक्ति मुक्ति समावे ॥ १९ ॥
प्रथम चन्द्र फिर सूरज ज्योति, प्रथम स्वाति सीप ते मोती ।
प्रथम पवन फिर पाणी आया, सब संतों ऐसे फरमाया ॥ २० ॥
प्रथम ईश सतोगुणी माया, पाछे तमोगुणी जीव उपाया ।
प्रथम ईश जीव हो योगी, पाछे माया भोग रु भोगी ॥ २१ ॥
महामाया प्रकृति छाई, गर्भ स्थापक आप गोसांई ।
सता अध्यात्म वैदिक रीति, सृष्टि पौराणिक नाना प्रीति ॥ २२ ॥
गृहस्थ धर्म धारे सती सूरा, कोक रति बिन रीत गंडूरा ।
प्रजनन शक्ति जाने सोई, देव मनुष विधि पावे कोई ॥ २३ ॥
बिना विधि गृहस्थ का भोगी, पावे दुःख जगत का रोगी ।
रजो दर्शन सेती दिन तीना, जीव नारकीय आवे हीना ॥ २४ ॥

संध्या पर्व श्राद्ध को टाले, मंगलवार तिथि को पाले।
तेरस तिथि चार तज भाई, ऋषि-मुनि विधि वेद बताई ॥ २५ ॥
पांच सात नौ ग्यारह जानो, पन्द्रह तिथि कन्या की मानो।
छः आठ दश बारह माना, तिथि सौलहवीं पुत्र परमाना ॥ २६ ॥
गृह-धर्म की नीति धारे, शुद्ध व्यवहार में प्रीति सारे।
नारी रज उदर गत आश्रय, गर्भ-फूल माया गति साश्रय ॥ २७ ॥
पुरुष वीर्य-बिन्दु गत आवे, रज-भूमि में बीज समावे।
अनन्त कीटाणु कोटिक मरता, संस्कारी हो भागिक धरता ॥ २८ ॥
एक रात में कल कल पाता, स्वेत लाल आग वत भाता।
पाँच रात में बुल बुला पानी, दश दिन ते बेर सम मानी ॥ २९ ॥
पन्द्रह दिन में लाली लावे, प्रथम मास निर्मल रस गावे।
अन्नमय कोश विस्तार बढावे, चारों कोश ता माहि समावे ॥ ३० ॥
पहले शीश अङ्ग में अंका, हानि लाभ क्रिया संग पंका।
कर्म-ज्ञान अन्तःकरण प्राना, कर्म काम-वासना अज्ञाना ॥ ३१ ॥
भ्रान्ति परोक्ष अपरोक्ष अज्ञाना, हर्ष शोक का द्वंद्वज माना।
आवर्ण शक्ति दोनों जोई, अवस्था सप्त चिदाभास की होई ॥ ३२ ॥
पहले मास का यों ही लेखा, देख अदेख कर्म की रेखा।
दूजे मास खीर वह पाके, भुजा पांव अंग पूरा आके ॥ ३३ ॥
तीजे माह मांस का गोला, रोम हड्डी नख मानुष चोला।
चर्म अङ्ग लिङ्ग इन्द्रिय द्वारा, होय भास यह देह विकारा ॥ ३४ ॥

चौथे मास रक्त का चोला, त्वचा मांस रुधिर का पोला।
सातों धातु बढ़ती जावे, रज बीरज संग भेद बढ़ावे ॥ ३५ ॥
जैसा अन्न माता जो खावे, वैसा तन मन अंकुर भावे।
जैसा करे सुने व्यवहारा, वैसा हो बालक संस्कारा ॥ ३६ ॥
पांचवे मांस पञ्च हड्डी वासा, भूख प्यास की होवे आशा।
छठे मास में ज्योति प्रकाशा, हिलना डुलना घूमना खासा ॥ ३७ ॥
कोमल अङ्ग दुःख अनुभव करता, उदर जन्तु काटे रर मरता।
माता नमक मिर्च जो खावे, ताता ठण्डा जैसा पावे ॥ ३८ ॥
मुर्च्छित होवे पल पल चेता, अङ्ग खाज तप जावे तेता।
लख चौरासी कुण्ड ही छोटा, नर्क प्रमुख प्रत्यक्ष में मोटा ॥ ३९ ॥
सातवें मास सप्त धातु काया, ज्ञान तन्तु तन मांहि समाया।
करे प्रार्थना ईश्वर सेती, हे प्रभु ! दीनबन्धु कर हेती ॥ ४० ॥
नाना योनि बहु दुःख पायो, गर्भवास सब ठाँ पछुतायो।
भग ते भोग विपति से आला, बाहर करो हे ! दीनदयाला ॥ ४१ ॥
करे वन्दना वारम्वारी, औधें शीश पावे दुःख भारी।
आठवें मास अष्ठ कमल उपाया, कला कलाक्षर देव सजाया। ४२ ।
नौमे मास नौ नाड़ी द्वारा, बहत्तर कोठा न्यारा न्यारा।
दशवें मास कँवल बिलमाया, फल पाका तब फूल बिलाया ॥ ४३ ॥
काया गढ अनुपम भाया, इसका महरम विरले पाया।
भूला जीव भुगते चौरासी, गुरु गम सोजी विरला पासी ॥ ४४ ॥

नौ सौ नदी अठहतर नाला, हाड चाम का नरतन आला।
साढे तीन करोड़ का लेखा, देह रोमावलि की यह रेखा ॥ ४५ ॥
वायु उन्नचास देह में आया, प्रमुख पांचों प्राण समाया।
प्राण उदयान रु व्यान समाना, वायु अपान कर्म कर नाना ॥ ४६ ॥
एक भृकुटा, तीन त्रिकूटी, तीन त्रिवेणी, एक त्रिकूटी।
युक्त बंक रु मुक्ता बंका, बंकनाल का मार्ग निशंका ॥ ४७ ॥
सात शुन्य में भँवरा सारी, देखे अचरज योगी भारी।
इडा पिंगला सुषुमण रेखा, चन्द्र सूर्य का मार्ग लेखा ॥ ४८ ॥
बावन अक्षर का विस्तारा, घट मांहि चेतन उजियारा।
सात शुन्य चेतन रखवाला, यौगिक तन का रहस्य उजाला ॥ ४९ ॥
योग शुन्य पर ओम उचारा, सांख्य शुन्य पे चेतन धारा।
सृष्टि शुन्य पर परमा ज्योति, परम शुन्य पर अक्षय मोती ॥ ५० ॥
ईश्वर सता कुटस्थ समाया, जीव ब्रह्म चारों इकजाया।
खेल अध्यात्म तन में रमता, ज्ञानी गुरु गम पावे समता ॥ ५१ ॥
सात द्वीप सप्त सागर यामे, पर्वत सातों नौ ग्रह तामे।
खण्ड छैयालिख यामे कहिये, ब्रह्मण्ड सो पिंड माहि लहिये ॥ ५२ ॥
चौदह लोक दशों दिशि देखो, तीन शरीर भाग को पेखो।
तीन अवस्था वृति नाना, गुण अनुरूप स्वभाव बखाना ॥ ५३ ॥
परम विचित्र स्वरूप बनाया, माया खेल अनोखा ठाया।
मन्दिर माहि मन्दिर शक्ति, अनन्त ज्योति की पूरण भक्ति ॥ ५४ ॥

व्यवहारिक तन अबे विचारो, जिनसे सारो जाल पसारो ।
दश मास में नरतन पूरा, साधे समझे भोगे सूरा ॥ ५५ ॥
जौ हाड कण हाड बतावे, विश्वा-नरसिंह हाड समावे ।
बीस अंगुल की हडी होती, इक्कीस मेरु में दरशे ज्योति ॥ ५६ ॥
कण्ठ तालुवा विधि विधि नाना, क़ह कर महिमा क्या दरसाना ।
बारह अंगुल फीफरा पाया, पीता अंगुल चार बताया ॥ ५७ ॥
आठ अंगुल अंग लिंग कहाया, चार अंगुल भग नारी लाया ।
सोलह पासली अंगुल बीसा, अंगुल कलेजा आठ रु तीसा ॥ ५८ ॥
अंगुल चार ललाट लखाया, तीन अंगुल का नाक लगाया ।
चार अंगुल कान सुभ सोई, नासा द्वारा दोय संजोई ॥ ५९ ॥
सवा पाव कण भेजी लाया, सहस्त्र कण-दल विचार पजाया ।
हाथ इक्कीस आंत है भाई, दांत बत्तीस मुख मांहि उगाई ॥ ६० ॥
हृदय एक मन वासा धारी, दोय बुकिया हिम्मत भारी ।
चार माता पितु तीन कहावे, सात धातु का देह रचावे ॥ ६१ ॥
सौ पल रुधिर मूल है भाई, मांस हजार पल कहलाई ।
दश पल मेद, मज्जा पल बारा, त्वचा सतर अंश उचारा ॥ ६२ ॥
महारुधिर पल तीन बताया, मात पिता का अंश लखाया ।
दश पल रज तुम जानो भाई, वीर्य बीस पल भेद लखाई ॥ ६३ ॥
सात धातु की यह है काया, तामे बोलत ईश्वर माया ।
पितु पचास पल मूल बखाना, कफ पचीस पल देह समाना ॥ ६४ ॥

अस्थि तीन सौ साठ कहाई, नौ सौ नाड़ी उप नाड़ी गाई।
व्यवहारिक यौगिक ये देहा, परमार्थ मिल रचे सनेहा ॥ ६५ ॥
घटत बढत प्रकृति सन्देहा, माया मूल का येही छेहा।
श्वास प्रश्वास उश्वास का खंभा, तीन काल पर ठाढ आरभां ।६६ ।
गर्भ माहि दोरो दुःख पायो, जठराग्नि झाल तपायो।
कवल वचन प्रभु आगे कीन्हा, मान श्री हरि बाहर लीन्हा ॥ ६७ ॥

दोहा-

माता के गर्भवास में, पांव ऊपर तल शीस।
श्वास श्वास में कल्प दुःख, साक्षी श्री जगदीस ॥ ६८ ॥
मुख दांत लिंग नाभि लख, ऑख कान दो सार।
गुदा नासा दो-नख गनोख बारह मल के द्वार ॥ ६९ ॥
सात लाख शिरकेश है, नख बीस ले जान।
दश नाड़ी बाजे दशों, गुरु गम ले पहिचान ॥ ७० ॥

चौपाई छन्द

पवन प्रसूती प्रसंग पाया, जीव जगत में बाहिर आया।
सता पोटली जल की झोली, माँस पिण्ड मय दूध रसोली ॥ ७१ ॥
प्रारब्ध फल होवत सारा, जग व्यवहार अनन्त पसारा।
हाथों ऊपर दाई झेल्या, बाल साद कर रोय खेल्या ॥ ७२ ॥
जगत जाल में आवत रोया, सो ऊमरभर रोया खोया।
बाहिर हवा लगत पछुताया, माया जाल में कँवल भूलाया ॥ ७३ ॥
भूला ईश्वर देखी माया, हाय हाय कर यहाँ भ्रमाया।
नहा धोवा कर उज्वल कीन्हा, मल मुत्र तन रहिया भीना ॥ ७४ ॥

सात धातु रस मल में लपटा, झिल्ली काटकर बाहर दपटा।
नाभि नाल काटकर चीन्हा, थाल बजाकर डंका दीन्हा ॥ ७५ ॥
नहाय धोवा कर चाव दिखाया, हाय हाय कर व्यापी माया।
धाय माय सब लाड दिखावे, सूर्य पूजा कर नाम रखावे ॥ ७६ ॥
बहिन भतीजी मामी भूआ, नाम अनेकों रिस्ता हुआ।
टोपी झँगुलिया पायल बाली, हाथ कड़ोली बहु विधि डाली। ७७।
बंटे बधाई घर घर तांही, माता प्रसन्न हुई चित मांही।
पिता कहे अंश-वंश हमारो, गाय बजाय मनावे सारो ॥ ७८ ॥
कुटुम्ब कबीलों प्रेम झुलावे, पालनिये हालरियो हुलरावे।
रोता पीता खाता हंसता, बाल्यकाल में रहता मसता ॥ ७९ ॥
शिशिर अवस्था जब हि आई, गौद खेलावे माई भाई।
हंगे मूते मेला मांही, राजी होय धोय सब सांही ॥ ८० ॥
देवी देवता आन मनावे, मात पिता कर हेत बुलावे।
नमक मिर्च उतारे वारी, नजर टौकार फैंट दे टारी ॥ ८१ ॥
ठुमक ठुमक कर चालन लागा, मोह जाल का पड़िया तागा।
दशों वर्ष तक रहियो दोरो, बीस वर्ष में मानियो सोरो ॥ ८२ ॥
तीस वर्ष में तनको तीखो, वर्ष चालीसों चीखो फीखो।
वर्ष पचासों तन सो पाको, वर्ष साठ में मन से थाको ॥ ८३ ॥
वर्ष सतर में अंग रंग सुलियो, वर्ष अस्सी में डेरो डुलियो।
कपड़ों थकों नबे में नागो, वर्ष सौ में यहाँ से भागो ॥ ८४ ॥

दोहा-

हाय हाय कर यों गयो, गर्भ जनम जग मांहि।
सतगुरु शरणे ना गयो, सतसंगत करि नाहि॥ ८५॥
गर्भ चेतावनि ज्ञान की, पढ़ सुण चेते कोय।
"रामप्रकाश" गुरु यों कहयो, बहुरि जनम नहिं होय॥ ८६॥
देख्या इण संसार में, जनम गमावणहार।
होय कपूत जग उचरिया, माता मारी भार॥ ८७॥
हरि भजो सतसंग करो, सतगुरु शरण सुधार।
"रामप्रकाश" उर में धरो, मनुष जनम निस्तार॥ ८८॥

इति श्री हरि ज्ञान-गर्भ चेतावनी समाप्त।

अथ श्री मानव जीवन चेतावनी

दोहा छन्द

पूर्व पुण्य प्रताप से, ईश्वर कृपा पाय।
मानुष तन प्रकृति दियो, अब तो सफल बनाय॥ १॥

चौपाई छन्द

जनम लियो जब जग में आई, मात पिता घर बॅट्टी बधाई।
पौगण्ठ आयु बाल संग खेले, चक्री लट्टू हाथों मेले॥ २॥
बारह वर्ष में चिंता नाही, पठन लिखन काम चित मांही।
आच्छा पहने खावे पीवे, मित्रों संग ठाठ से जीवे॥ ३॥
भूलो फिरे पिता संग डोले, ठट्टा करे मस्करी बोले।
नाना भूषन चौखा पावे, सुन्दर कपड़ा ठाठ सुहावे॥ ४॥

मात पिता सुख दूना होवे, बार बार मुखड़े को जोवे।
सगपण सारे साज सजाई, करे बधाई होय सगाई ॥ ५ ॥
सगा सम्बन्धी चोखा मिलिया, बेटा सुपातर सुन्दर छलिया।
पन्द्रह वर्ष को भयो हजूरो, होय किशोरपणा में पूरो ॥ ६ ॥
दौड़-दौड़ कमाई करता, फूल्या हर्ष मांहि यों फिरता।
उलटी सुलटी बातों ठावे, करे मश्करी रस्ते जावे ॥ ७ ॥
चौराहे पर बैठे मसता, चलती नारि से बोले हंसता।
मन भावे सो करता वोही, लालच लोभ चरय मन मांही ॥ ८ ॥
भयो पच्चीस वर्ष को भाई, कियो विवाह घर नारी लाई।
मात पिता ने हर्ष मनाया, ढोल बजा बेटा परणाया ॥ ९ ॥
लेना देना सब व्यवहारा, रीति करी रिवाज सुधारा।
चार मास में पलटय आछो, तरुणाई रंग गाढो राछो ॥ १० ॥
वर्ष तीस मगरूरी छाई, मात पिता से करे लड़ाई।
सासु ससुरा साल्याँ भावे, उनके काज दोड़ियो जावे ॥ ११ ॥
मात पिता बहिन नहिं भाई, होय अपूठो सब के ताई।
नारी संग बैठे उठ डोले, नारि कहै सो साची बोले ॥ १२ ॥
स्त्री कहै निशंक सो करता, लोभ लालच छल माहि मरता।
नारि की चिंता मन राखे, हाथ हथेली साथे भाखे ॥ १३ ॥
वर्ष पैंतीस तीखी तरुणाई, गाल बजावे गौखे माई।
मात पिता गुरुजन मोटा, सबसे बोले चाले खोटा ॥ १४ ॥

उदर राखकर मोटो कीन्हो, देऊँ किरायो औगुण लीन्हो।
ऊँचो बोले टेढो चाले, खोटे मस्ते मस्तो माले ॥ १५ ॥
मात पिता धन बेंचा लेता, धर्म दान कोडी नहीं देता।
गुरु सम्बन्धी बन्धु भाई, सब से लूटा लूट मचाई ॥ १६ ॥
माता से निशि दिन ही लड़ता, नारी साथे चीठी घड़ता।
मात पिता से तोड़ी प्रीति, काम क्रोध की धारी नीति ॥ १७ ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा, पांच विषय इन्द्रिय सुख बंधा।
मोह-माया संग गाढा झूला, अब तो भजन राम का भूला ॥ १८ ॥
कुब्द कपट छल छाई माया, बेटी बेटा में आ अलुझाया।
भयो जवानी में है गैलो, छाया निरखे मूर्ख छैलो ॥ १९ ॥
बाल सँवारे पाग झुकावे, फैशनदार नाना पट लावे।
ऑख्यों में सुरमो है सारो, शब्द सुणे नहिं सीख पुकारो ॥ २० ॥
गाँजा भाँग तमाखू पीता, पान छूतरा पीकर जीता।
दारू अमल धतूरा लेता, दुर्व्यशन में धन को देता ॥ २१ ॥
हुक्का जुआ यारी प्यारी, घर की नारी लागे खारी।
होय कपूत तो वंश लजावे, होय सपूत तो माया कमावे ॥ २२ ॥
जीवन यूँ ही बितायो सारो, गुरु बिन बीतो यूँ ही जमारो।
भक्ति हीन ज्ञान बिन अंधा, नीति बिना है टेढा कंधा ॥ २३ ॥
बन्धु भाई बहु धन म्हारे, नारी सुत सुता बहु लारे।
घणो कमाऊँ ना किण सारे, सब ही फिरता लारे म्हारे ॥ २४ ॥
बड़ी हवेली मेरे मोटी, किस के नहीं बराबर ओटी।
म्हारी थारी कर ऊमर बीती, प्रोढ़ भयो नहीं जाणी नीति ॥ २५ ॥

खाय कमाय सोयो अरु खोयो, होय पूँजीपति माया मोयो ।
झगड़त माया में अलुझायो, हाय हाय कर जन्म गमायो ॥ २६ ॥
करे पंचायत पंचों मांही, आगी पाछी झूंठी ठांही ।
पांच सात मिल घातों घड़ता, बैठ पंचायत साम्हा अड़ता ॥ २७ ॥
लरता चरता यूँ ही मरता, साच हृदय में कबहुं न धरता ।
थाकन लागो तन को डेरो, चिंता चाहना तेरो मेरो ॥ २८ ॥
बेटा बहु कान ना राखे, चालत बैठत उलटी दाखे ।
झूँठी साख भरी नित प्यारा, घर का बेटा होया न्यारा ॥ २९ ॥
अंग अंग पीड़ सवाई लागी, रोम रोम में पीड़ा जागी ।
हाथ पाँव शिर धूजण लागा, आंखों से कम सूझे आगा ॥ ३० ॥
पेट पीड़ अब सुनता नाहीं, ऊँचा बोले गुणता माही ।
कर कर बातों याद पुरानी, मन पछुतावे आवे प्रानी ॥ ३१ ॥
सतसंग हरि भजन नहीं भावे, थोथी बातों जीभ हलावे ।
दांत पड़्या मुख बोल न आवे, आंख्यों झरे गीड़ गरलावे ॥ ३२ ॥
लार परे मुख तन शुद्धि नाहीं, प्रारब्ध भोग किया फल पाही ।
जनम अमोलक यूँ ही खोयो, काम पुरुषार्थ कछु न होयो ॥ ३३ ॥

दोहा—

पामर विषयी जगत में, यूँ ही आवे जाय ।
माता मारे भार भू, जन्म पशु सम थाय ॥ ३४ ॥
आवे जावे वार बहु, लख चौरासी माहि ।
"रामप्रकाश" भव सिंधु में, पुण्य उदय जो थाहि ॥ ३५ ॥

"इति श्री मानव-जीवन-चेतावनि समाप्त"

"उपदेश का अंग"

दोहा छन्द

नजरी नजर निहाल है, सतगुरू उत्तमराम।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, परम सुखद विश्राम ॥ १ ॥
हरि हर शक्ति गणपति, सतगुरू परम दिनेश।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, नजरी नजर विशेष ॥ २ ॥
सतगुरू निज परब्रह्म है, हरि हर शक्ति गणेश।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, अघ तम काट दिनेश ॥ ३ ॥
हाथ हुमाउ पसाव है, नजरी नजरी निहाल।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, सतगुरू उत्तम दयाल ॥ ४ ॥
विविध नाम संसार में, मत मतान्तर माहि।
राम नाम ततसार है, बिना जपे फल नाहि ॥ ५ ॥
विविध नाम बहु रूप है, जपत संशय ना जाय।
राम नाम केवल जपो, निश्चय मुक्त समाय ॥ ६ ॥
सर्वनिधि में सार है, सकल सिद्धि का मूल।
सर्व ऋद्धि की साख में, एक नाम तत तूल ॥ ७ ॥
राम ओम सोहम् रटया, पाया पद विश्राम।
तन मन वाणी संयम से, लखिया चारों धाम ॥ ८ ॥
ओ३म् सोहम् सत राम को, रटिये प्रीत लगाय।
हरदम श्वास उश्वास रट, किया कर्म कट जाय ॥ ९ ॥

ओ३म् सोहम् श्री राम को, हरदम जप मन लाय।
इक्कीस हजार छः सौ जपो, सहज मुक्ति हो जाय ॥ १० ॥
ओ३म् ररंकार ध्वनि, सोहम्कार तत पाय।
"रामप्रकाश" रटिये सदा, सहजे मुक्त समाय ॥ ११ ॥
ओ३म् सोहम् स्वासा जपो, श्री राम मन लाय।
हरदम जपिये हेत से, सहज परम पद पाय ॥ १२ ॥
ओ३म् श्वासा मन सोहम् सो, वाणी राम गुण गाय।
तन मन वाणी निर्दोष हो, "रामप्रकाश" पद पाय ॥ १३ ॥
जप मन रॉ रामाय नमः, बीज मंत्र चित लाय।
चारों ठाम युक्ति लखो, चार पदार्थ पाय ॥ १४ ॥

अनुप्रस्थ सोरठा

दो जग में जगदीश, रूपयो है या रामजी।
दोरा दर्शन दीश, शुकदेवा संसार में ॥ १५ ॥
मूँछ नाक की मोड़, कभी लड़ाई ना करो।
सत की रहवे सोड़, शुकदेवा संसार में ॥ १६ ॥
दीपक दरसे दोय, रवि चन्द सा जोर का।
बाट न तेल बटोय, शुकदेवा संसार में ॥ १७ ॥
नीति नर को नाक, बिना नाक नर बाहिरा।
धार रहया कई धाक, शुकदेवा संसार में ॥ १८ ॥
साच सदा सुख सान, कईक नर करड़ा घणा।
सांच तणा निशान, शुकदेवा संसार में ॥ १९ ॥

परमार्थ की प्रीत, पाले पूरा पुरूष पण।
नुगुरां बिगाड़ी नीति, शुकदेवा संसार में॥ २० ॥
दोय मुखी कह दाद, दुष्ट फिरे नर दोगला।
बिगड़े कर कर बाद, शुकदेवा संसार में॥ २१ ॥

दोहा छन्द

मिनख मिनख जग मोकला, मिनखों तणो सुकाल।
जिण मिनखों में मिनखपणो, उणरो बड़ो दुःकाल॥ २२ ॥
महंत महंत जग मोकला, महन्तों तणों सुकाल।
जिण महंतों में महन्तपण, उण रो बड़ो दुःकाल॥ २३ ॥
संत संत जग मोकला, सन्तों तणो सुकाल।
जिण संतों में संतपण, उण रो बड़ो दुःकाल॥ २४ ॥
वैद्य वैद्य जग मोकला, वैद्यों तणों सुकाल।
जिण वैद्यों में वैद्य पण, उण रो बड़ो दुःकाल॥ २५ ॥
भेषी भेषी जग मोकला, भेषी तणो सुकाल।
जिण भेषी में भेषपण, उण रो बड़ो दुःकाल॥ २६ ॥
सांगी सांगी जग मोकला, सांगी तणो सुकाल।
जिण सांगी में सांगपण, उण रो बड़ो अकाल॥ २७ ॥
साधु साधु जग मोकला, साधों तणो सुकाल।
जिण साधु में साधुपण, उण रो बड़ो दुःकाल॥ २८ ॥
मन्दिर मन्दिर जग मोकला, मन्दिरों तणो सुकाल।
जिण मन्दिर में मन्दिर पण, उण रो बड़ो अकाल॥ २९ ॥

देव देव जग मोकला, देवों तणो सुकाल।
जिन देवों में देवपण, उण रो बड़ो अकाल ॥ ३० ॥
गुरू गुरू जग मोकला, गुरूवों तणो सुकाल।
जिण गुरू जनों में गुरूपण, उनको बड़ो अकाल ॥ ३१ ॥
पिता पिता जग मोकला, पिता तणो सुकाल।
जिस पिता में पितापणों, उन को बड़ो अकाल ॥ ३२ ॥
पुत्र पुत्र जग मोकला, पुत्रों तणो सुकाल।
जिण पुत्रों में पुत्रपण, उन को बड़ो दुष्काल ॥ ३३ ॥
भूत भूत जग मोकला, भूतों तणो सुकाल।
जिन भूतों में भूतपण, उन को बड़ो दुःकाल ॥ ३४ ॥
आचार्ज जग मोकला, आचार्जों तणो सुकाल।
जिण आचार्जों लखणपण, उन को बड़ो अकाल ॥ ३५ ॥
भगवाँ धारी जग मोकला, भगवों तणो सुकाल।
जिण भगवों में देवपण, उन को बड़ो दुष्काल ॥ ३६ ॥
कारीगर जग मोकला, करीगरों बड़ो सुकाल।
जिण कारीगर में चेतपण, उनको बड़ो अकाल ॥ ३७ ॥
मिस्त्री है जग मोकला, मिस्त्रियों बड़ो सुकाल।
जिण मिस्त्री में मिस्त्रीपण, उन को बड़ो अकाल ॥ ३८ ॥

कुण्डलियां छन्द

कौन जानता दाँतड़ो, छोटो सो वह गाम।
सन्तदास जी तप कियो, प्रकट कियो सतनाम ॥

प्रकट कियो सतनाम, वैष्णव धाम प्रकटायो।
सन्त शाखाओं को मूल, गुरू संत धाम बसायो॥
कृपाराम जी नियम से, निश्चय कीन्हौ भौन।
"रामप्रकाश" नमामि है, जाणे दानतड़ो कौन॥ ३९॥
छोटो सो वह दान्तड़ो, कौन जाणतो गाम।
सन्तदास कृपा भयो, सन्त गुरू जन धाम॥
सन्त गुरू जन धाम, वैरागी वैष्णव जानो।
रामस्नेही शाख को, मूलधाम कर मानो॥
रेण और शाहपुरा को, एक मात्र विश्राम।
"रामप्रकाश" वैष्णव नमो, बड़ो दान्तड़ो गाम॥ ४०॥
सन्तदास महाराज की, बड़ी पोल गुरू धाम।
रामानन्द गुरू धर्म को, प्रकटयो पूरण काम॥
प्रकटयो पूरण काम, वैष्णव भक्ति की धारा।
कई सन्त मत पंथ प्रकटे, हुआ सब न्यारा न्यारा॥
अग्रद्वार शाखा तणो, हुओ परम सुखवास।
"रामप्रकाश" है परम गुरू, नमो नमो सन्तदास॥ ४१॥
दर्शन कियो न दान्तड़ो, भाव सहित कर प्रीत।
नाम सुण्या या ना सुण्यो, लखी न गुरू की रीत॥
लखी न गुरू की रीत, परम्परा वो ही माने।
वैष्णव धर्म जाण्यो नहीं, नियम पंथ उलटा ताने॥

रामस्नेही ना रह्यो, कहीं को करयो न चाव।
"रामप्रकाश" संत होय के, रख्यो भोजन से भाव ॥ ४२ ॥
कैसा वह संत साधवा, बाना धारया भेष।
कई पन्थ डोलत फिरे, श्रध्दा नाही रेश॥
श्रध्दा नाही रेश, नाम दान्तड़ा को लेवे।
फूल्या फिरे मन में घणा, परम्परा वो ही केवे॥
शिव-शीतला वाहन मिले, लखे ना रीति नीत।
"रामप्रकाश" वह साधवा, कैसा बण्या वह मीत ॥ ४३ ॥
दो हजार पच्चीस में, गया दान्तड़ा धाम।
दर्शन किया गुरू धाम का, पूरण भया सब काम॥
पूरण भया सब काम, संतदास तपस्थली राजे।
गद्दी पर रामदयाल जी, स्वामी आप विराजे॥
वैरागी हरिराम का, गुरू पीढि गुरू ईश।
"रामप्रकाश" दर्शन किया, प्रथम संवत् पच्चीस ॥ ४४ ॥
रामस्नेही सन्त हो, मुण्डित भया अवधूत।
निर्गुण उपासक हो रहया, भेद भाव का भूत॥
भेद भाव का भूत, वाणी पाठ नित ही करे।
रामद्वारा राम का, परम सिद्धान्त दूरा धरे॥
हरि भजे हरि का रहे, याकी परख न काम।
"रामप्रकाश" अजाति हो, साधु भजे नित राम ॥ ४५ ॥

महन्त बने मोटा मता, माया पोटली साथ।
मोटी बातों घर किया, रहया सिद्धान्त न हाथ॥
रहया सिद्धान्त न हाथ, गुरू मर्यादा सब छोड़ी।
आप बड़ा आप ही गुरू, परम्परा शाखा तोड़ी॥
भजन गाय वक्ता महा, पांच सात संग सन्त।
"रामप्रकाश" साची कथे, मगता भया सो महन्त॥ ४६ ॥

महन्त होय महता फिरे, ममता हमता संग।
त्वंता तन लागी महा, लगो न भक्ति रंग॥
लगो न भक्ति रंग, सीख ली बातों मोटी।
भेंट काज अड़ता घणा, भावना मन में खोटी॥
साधु रीति मर्य्याद तज, गुरू धाम तज दूर।
"रामप्रकाश" साची कथे, यह महन्त भया मजबूर॥ ४७ ॥

महन्त होय माता भया, जहाँ तहाँ करता झोड़।
लाग भाग लेता फिरे, चन्दे चिट्ठे की जोड़॥
चन्दे चिट्ठे की जोड़, जात जमात के पीछे।
वाणी सुधरी नाहिं, मूरख ज्यों बोली अछे॥
माया जोड़ ब्याजी करे, अच्छा लगे ना सन्त।
"रामप्रकाश" साची कथे, मन में राजी महन्त॥ ४८ ॥

महन्त होय माता फिरे, पहन गैरूँआ लाल।
मोटा तन फूल्या रहे, मोटी पाग मलाल॥

कवित छन्द

यति बन्द तुक बन्दी, छन्द बन्द गण बन्दी।
अर्थ बन्द गति बन्दी, वाणी नित कहिये॥
यति भंग तुक भंग, छन्द भंग गण भंग।
अर्थ भंग गति भंग, वाणी नहिं लहिये॥
होय अलंकार हीन, होय व्यवहार क्षीन।
होय जो आचार हीन, वाणी नहीं गहिये॥
उद्देशय परीक्षा खोय, राम के प्रकाश धोय।
लक्षणा विहीन होय, वाणी नहीं चहिये॥ १ ॥
व्यर्थ प्रलाप भरी, कटुता रू द्वेष तरी।
हीन अर्थ यति धरी, वाणी कहा काम की॥
साधना विहीन कार, दम्भ भरी वर्णकार।
व्यर्थ अलाप मार, वाणी है अलाम की॥
कृतघ्नी गुणहीन, पाखण्ड की मार लीन।
भेष-जग कृति पीन, वाणी है हराम की॥
लक्षणा परीक्षा ग्रन्थि, उद्देश्य न होय सन्थि।
संत "रामप्रकाश" सो, वाणी केवल नाम की॥ २ ॥

इति श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर (प्रथम भाग) समाप्त

ॐ

श्री हरि गुरू राम सच्चिदानन्दायनम:

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज "वैरागी" कृत

उत्तमराम भजन प्रकाश में प्रकाशित

(पाँच भजन क्रमांक ६५ से ६९ तथा १८४ एवं २४९)

विपर्यय भजनों का सरलार्थ

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशचार्य जी महाराज कृत

तत्वार्थ दर्शिनी टीका

श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर

(द्वितीय भाग)

उत्तम उलट बोध

भजन (१) राग छन्द भैरवी पद ६५

अमृत वचन सुखदाय के, निज अर्थ करो हरि जन है ।

जो आध्यात्मिक वचन सुख देने वाला, अमरत्व प्रदान करने वाला है । वह वाक्य निज अर्थ (तत्व चिंतन) करो । प्रभु के भक्तों को सम्बोधन वाक्य है । हे हरिजन बन्धु ! अमर वाक्य का अर्थ करो ।

हरिजन हरि का रूप है, जग में लियो अवतार ।

पर कारज बानो धरयो, अधमी जीव उधार ॥

अर्थ = विवेक, विचार, चिंतन करो ।

मृगे जाय सिंह को खाधो,

विवेक रूप मृगा (हरिण) ने जाकर अभिमान (अहंकार) रूप हिंसक वृति रूप सिंहनी के पति को खाया। साधना काल में विवेक द्वारा अहंकार का लय हो गया और

सिंह उलटकर मृगो खाधो,

उस अहंकार रूप सिंह ने पुन: विवेक का ग्रहण किया तब इस साधना के सिद्धि रूप तत्व क्रिया का ज्ञान ग्रहण रूप अमोलख (अनमोल) रत्न की प्राप्ति-प्राप्त किया।

लाधो = मिला, लब्ध हुआ

ताके बीच अमोलख लाधो।

विवेक रूप मृग और अहंकार रूपी शुद्ध सिंह के आपसी संघर्ष के बीच ज्ञान रूप अनमोल रत्न की प्राप्ति हुई।

गुरू से बेमुख थाय के,

गुण रूप त्रिगुणात्मक भाव के गुरूत्व भार से विमुख होकर

निज प्रेम से पीयो बमन है ॥ १ ॥

स्व आत्म रूप आत्माभिमुख निज प्रेम द्वारा मोह परित्यक्त अपने स्वरूप को पुन: प्राप्त करना ही वमन पीना है अथवा ऋषि विदुष गण द्वारा शब्द रूप वमन-बोध को धारण किया। तब

निज गूँगो अर्थ करे अफूठो,

गुण का कथन करने वाली वाणी की सभ्यता रहित अन्तर्मुखी गूँगा ही संसार से अफूठो = विमुख होकर अर्थ = विवेकत्व का चिंतन-मनन करने लगा।

बादल ऊपर पर्वत बूठो ।

अन्तःकरण रूपी बादल के ऊपर सतगुरू शब्द रूप पर्वत से ज्ञानामृत शब्द की छींटे डालते हुए वर्षा ।

बूठो = वर्षा करने की क्रिया

लागी छाँट राम से रूठो,

सतगुरू मुख से महावाक्य ज्ञान वर्षा के शब्द रूप छींट लगने से रमणीय संसार = परिवार रूप राम से अथवा मोह रूप स्थूल ममत्व राम से उपराम हुआ हि रूठना है ।

रूठो = रूसना, ऐसे संसार से उपराम हुआ और

नुगरे से प्रीत लगाय के,

निराकार निर्गुण = गुणातीत, परमात्मा से प्रीत लगाई ।

निज दुर्जन भयो सजन है ॥ २ ॥

अपना मन जो संसार के विषय-विकार रूप मण्डली के साथ अपना दुःर्जन दुष्टता के व्यवहार को करने वाला दुर्जन था वही मन अब आत्मकल्याण कारी साधना में लगकर सज्जन (संत जन = भक्त) का व्यवहार करने लग गया है ।

बिन पुरूषार्थ भगनी मारी,

बिन पुरूषार्थ = संकल्प विकल्प रहित होकर बुद्धि रूप भगनी = बहिन को जगत संस्कार हीन करना ही बहिन को मारना है ।

मीठी तज कर खाधी खारी,

जगत विषय रूप शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्धादि मीठा मोह रूप पदार्थ तज = त्याग कर उपरामता युक्त परम तिव्रवैराग मय वृति रूप खारी खाधी अर्थात् कड़वाहट को धारण की ।

निज नारी तज कीनी यारी,

अपनी जग संस्कार जनितबुद्धि रूप अपनी स्त्री को त्याग कर विद्वान परम हंस ज्ञानी जनों की मतियों = बुद्धियों के चरित बोध को धारण करना ही कीनी = की गई यारी = परनारी संगत है।

निज जत मत धर्म संभाय के,

अपनी शील संयम धर्म की मति को धारण करके अपने आतम संयम रूप जत-मत के धर्म का संभाया है।

संत बैठो उत्तर गगन है ॥ ३ ॥

संशय से तरने वाला संत निश्चय रूप गगन = आकाश की ऊँचाई पर बैठा है। जन्म मरण रूप पृथ्वी नीचता का त्याग करके उपरामता रूप गगन पर बैठना है।

"उत्तमराम" कहै उलटी वाणी, अर्थ करे संत सुलटी जाणी।

संसार की शैली से उलट कर विपर्यय की वाणी उत्तमराम = कविता करने वाले उत्तम = श्रेष्ठ, राम = पुरुष कहते है, जिस को अर्थ करके = चिन्तन करने वाले संशय रहित संत सुलटी = सीधी जाण समझ लेते हैं।

मिट जावे सब खैंचा ताणी,

कर्म जाल सहित वारम्बार भवसागर के आवागमन रूप जन्म-मरण की सारी = सभी खैंचा ताणी मिट जावे = दूर हो जाती है।

निज घर दियो लुटाय के, सुख थाट आनन्द घर बन है ॥ ४ ॥

अपने पूर्व जन्मों के संस्कार रूप सामग्री को रखने वाली सृष्टि के गुणात्मक तत्वों को बांट देना ही निज घर को लुटाना है सो घर लुटा कर स्वयं द्रष्टा होकर अब परमानन्द रूप सुख के सर्व ठाठ = सामग्री साधन सहित हो जाने से चाहे घर में रहो या वनवास में अर्थात् जहाँ तहाँ

कहीं रहो वहीं आनन्द ही आनन्द है। क्लेश रूप असत संसार का अभाव हो गया।

"इति प्रथम भजन समाप्त"

भजन (२) राग छन्द भैरवी पद ६६

गूँगा कहै समझाय के,

चार प्रकार के गूँगों में से ज्ञान रूप वाणी का संयम धारण करने वाले वाणी रूप परा, पश्यन्ति, मध्यमादि समस्त क्रियाओं से रहित होकर आत्म-परमात्म तत्व की बात निर्वाणी चिंतन को समता द्रष्टि से समझा कर द्रष्टान्त-सिद्धान्त युक्ति-प्रमाण सहित करके कहता है।

निज बहेरा सुने भिन्न भिन्न है ॥ टेर ॥

संसार की बात नहीं सुनने वाला उपराम वृति वाला बहरा (ज्ञानी = गूंगा) ही उपयुक्त गूँगे = ज्ञानी की समझ को सारी विभिन्न युक्तियों को श्रवण = सरव = सुनना, अण = मनन करना ही श्रवण = सुनना है।

इन्द्र के सिर वज्र लागो,

अज्ञान रूप इन्द्र के अहंकार रूप सिर = शीश के उपर ज्ञान रूप वज्र का प्रहार लगा,

इन्द्र नास वज्र फिर भागो,

तब अज्ञान = इन्द्र का नास हो गया और वज्र = ब्रह्म ज्ञान फिर अपने आप में लय हो गया यही वज्र फिर भागो = टूट गया। ज्ञान का अहंकार भी लय हो गया।

वस्त्र त्याग शृँगारे नागो,

आवरण अनेक = असत्वापादक, अभाना पादक, शब्दावरण, शुक्ष्मावरण कारण रूप अज्ञानावरणादि शक्ति रूपी वस्त्रों को त्याग करके निर्गुण निराकार रूप नागा का सत्यादि विशेषण के अलङ्कारो से सृष्टि समुभ्दव का मूल

अचल अखण्ड अनन्त अजर अमर अविनाशी आदि के श्रृँगार से आत्मानुभाव को अलंकृत किया।

भूषण बिन हरणाय के,

त्रिगुण मय सृष्टि के भौतिक पदार्थों के भूषण रहित प्रपंच विहीन होना ही भूषण बिना होकर प्रसन्नता प्राप्त करता है।

निज बेमुख लखे गुरू गम है ॥ १ ॥

निज = अपनी अहंता से विमुख होने वाला ही बेमुख इस गुरू गम = रहस्य की रमझ को लखे = जान सकता है।

अपने घर को आग लगावे,

अपना घर अहंता, ममता, त्वंता रूप अज्ञानावृत त्रिगुण रूप संसृति को ज्ञानाग्नि द्वारा जलावे अथवा अन्तःकरण चतुष्टय, इन्द्रियदश, त्रय शरीर, पंच कोशादि का निर्णय करके सब को ज्ञानाग्नि लगावे या ज्ञान की आग = अग्नि में लगा कर जला देवे।

माता पिता का खोज गमावे,

ममता रूप माता और अज्ञान रूप पिता का अस्तित्व मिटा कर खोज = चिन्हत्व निशान भी गमावे = मिटा देवे।

व्योम अहार कर भूख हटावे,

व्योम = आकाश के समान सर्वत्र व्यापक ब्रह्म का स्वानुभव करना ही व्योम का अहार है। ऐसे ब्रह्मत्व के निष्ठानुभव द्वारा जिज्ञासावृति मुमुक्षुता की भूख = उत्कण्ठित आसा की निवृति करना ही हटावे है।

अग्नि से प्यास मिटाय के,

ज्ञान रूप अग्नि से मोक्ष-पिपासा का निवारण करे।

सत मुक्ति मिले उसी दम है ॥ २ ॥

ऐसे करने से सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य सर्ष्टिया की मुक्तियाँ से अतीत सत मुक्ति = जीवन मुक्ति उसी दम = स्वास भर के क्षण मे प्राप्त हो जाती है ।

शीश काट कर अमृत पीना,

अहंकार रूप सीस को काट कर अपने तन-मनादि अस्तित्व रहित होकर सतगुरू द्वारा प्रदत्त शब्दामृत पात्र मे श्रद्धा स्वाद के अनुगमन से पीना = पीया ।

प्राण बिना जुगो जुग जीना ।

जीवन रहित = जीवन मृत होना ही प्राण बिना है अर्थात्

जीवत मूआ मुक्ति में माले, ताका वचन युगो युग चाले ।

ऐसे जीवन्मुक्ति प्राप्त ज्ञानी युगो तक यश कीर्ति द्वारा सदैव ब्रह्म के सामीप्य वास को प्राप्त करना ही जीना है ।

अग्नि कुण्ड में हृदय भीना,

विरहाग्नि से पूरिंत हृदय कुण्ड = अंतःकरण शीतलता द्वारा भीग गया अर्थात् भगवद् भक्ति में तर हो गया । संसार से उपराम होकर भक्ति रस में सराबोर = शान्त हो गया ।

बिन मुख अमृत पायके,

स्थूल देहाभिमान रहित होना ही बिना मुख होकर सतगुरू मुख से महावाक्य शब्दामृत पाय = पाकर (पीकर) के

निज नास भयो तुम हम है ॥ ३ ॥

अपने द्वन्दात्मक तुम ईशत्व, हम = जीवत्व रूप हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु, मैं-तू आदि समस्त द्वन्द का समूल अज्ञान सहित नाश ही निज नास हो गया ।

"उत्तमराम" कहै उलटी बूट्टी,

उत्तम-श्रेष्ठ, राम-संत ऐसे उत्तमराम जी कहते हैं कि यह सांसारिक द्रष्टि से उलटी = विपरीत = विपर्यय बूटी = वाणी रूप जड़ी है ।

उलटी बूटी आप अफूट्ठी,

यह विपर्यय वाणी ही अपने आप से अफूटी = विपरीत है । जीवत्मा = संसार रूप से अफूटी = ब्रह्माभिमुख प्रपंच रहित है ।

आप अखूटी जग से रूट्ठी,

अखूट = जो कभी नास गति को नहीं पाती वह वृति जगत से रूठी = जग से विपरीत = उलटी होकर तदाकार अनन्त = अन्तरहित, अखूटी अक्षय हो गई ।

बूटी गई घर खाय के,

वह सतगुरू की वाणी रूप जड़ी ही प्रपंच रूप अज्ञाना-वृत अहंभाव के घर को खाय = नास करके रह गई ।

सत समझ बूटी गुरू गम है ॥ ४ ॥

वह गुरू की गम = रमझ ही बूटी है, यह सत्य समझो ।

"इति दूसरा भजन समाप्त"

भजन (३) राग छन्द भैरवी पद ६७

उलट भेद सुखदाय के,

संसार से उलट = विपरीत भेद जम्य रहस्य ही सुख देने वाला है ।

यथा — साधु तो भल समझिया, जग को दीनी पूठ ।
पीछे ही पछुतावता, पहले बैठा रूठ ॥ १ ॥

निज उलटे समझ अरथ है ॥ टेर ॥

जैसा कथन हुआ है उस से विपरीत उलटे ही निज अर्थ = रहस्य को समझो ।

मुख बिन गूँगा राग करावे,

वाणी रहित द्वेतात्मक द्वन्द हीन ज्ञान मौन साधक गूँगा = ज्ञानी अपने स्वरूप में राग = प्रीति करके राग = अपने आनन्द का अलाप, सत्य,शिवो३ हं, सुन्दरम, अचल अखण्ड निजानंद आदि विशेषणों की रागिनी गाता है ।

बहरा सुण सुण प्रीत लगावे,

श्रवणेन्द्रिय रहित, बहिरंग प्रपंच की शक्ति हीन ज्ञानी = बहरा बारम्बार चिन्तन रूप सुन सुन कर प्रीति = प्रभु अनुराग करे और

कर बिन टूँटा ताल बजावे,

स्थूल क्रिया रूप कर्म करने की सकाम प्रवृति विहीन अर्थात् कर बिन = खूँखा, लूला (टूँटा) निष्काम ज्ञानी अपने अह्लाद की ताल चित रूप ढफली का बाजा सुनता है ।

पग बिन पंगु नचाय के,

कर्म रहित (सकाम क्रिया हीन) पंगुला कर्म रूप पाँव के बिना (निष्काम) होकर अपने परमानन्द क्षेत्र में नृत्य अर्थात् ज्ञान के प्रांगण में कर्म पंगु, सुमति पंगु एवं ज्ञान पंगु (संयम लीन) अपने स्वरूप में नाचता है ।

निज अंधा देखे निरत है ॥ १ ॥

चर्म द्रष्टि एवं दिव्य द्रष्टि आदि द्रश्य-प्रपंच द्रष्टी हीन अथवा अपने स्वरूप से विमुख था वही अब अपने शान्त स्वरूप को देखने लगा ।

निरत = देखने की क्रिया (देखना)

अनन्त नार संग पल में भोगी,

पूर्व-भूतकाल या वर्तमान के अनन्त विद्वान ज्ञानी, योगी, विदुष- मनीषी जनों की बोद्ध जन्य वृतियों का अनुगमन (अनुशीलन) किया अथवा अनन्त वृतियों का संयम करके एक ही क्षण में आत्म-संयम काल में आत्मानुभव का उपभोग किया।

सो अवधूत मस्त धन योगी,

वही

अ = आशा रहित,

व = वासना हीन,

धू = धृति धारक,

त = तत्व चिंतन करने वाला,

अवधूत सन्त, मस्ताना योगी, धन्यवाद का पात्र है।

जाको परखे सिर बिन रोगी,

वही कोई अहंकार रूप सिर रहित विरह रोगी होगा ।उस योगी को परखने वाला।

अंग बिन भेष बनाय के,

त्रय शरीर रहित अपने आत्म विशेषण रूप का चिंतन रूपी भेष बना कर

निज घर बिन फेरी फिरत है ॥ २ ॥

घर = प्रपंच रहित विश्व में व्यापक होकर अथवा एक स्थान के देश-काल वस्तुहीन से सर्वत्र अबाध गति से रहता है।

गुरू कृपा से बेमुख थाया,

सतगुरू कृपा से प्रपंच रूप जगत से विमुख हुआ और

निज नारी तज नारी लाया,

अपनी बुद्धि रूप स्त्री से न्यारा होकर उसको तज = त्याग कर सतगुरू महापुरूषों की बुद्धि = मति-गति को लाया = धारण किया ।

अमृत तज हलाहल पाया,

पंच विषय रूप मीठे = अमृत का त्याग कर वैराग्य वृति से उपरामता की कटुता को प्राप्त किया ।

अमर भया विष खाय के,

ऐसी विषमता के विष को खाय = हजम, क्षय करके जीवन्मुक्त हो गया और अमरत्व तत्व को प्राप्त किया ।

भव सागर सीर तरत है ॥ ३ ॥

ऐसा साधु पुरूष ही भव = जन्म-मृत्यु होने की , सागर = अपार धाराओं की, अथाह वृति मय सीर = तरंगो को पार करता है ।

"उत्तमराम" हिम्मत बिन पटकी,

उत्तम = श्रेष्ठ राम में रमने वाला संत ही निष्कामता रूप हिम्मत रहित होकर वासना वृति रूप मटकी को पटकता है वही काम किया ।

नभ लागो जब फूटी मटकी,

ज्ञान के लक्ष्य ब्रह्मत्व के व्याप्य भाव का आकाश का ज्ञान उदय होते ही वासना रूप मटकी फूट गई ।

मटकी उछल अकासे अटकी,

वह वासना वृति संसार से उपराम उछल कर ब्रह्म रूप व्यापकत्व में अकटी = लग गई ।

मटकी व्योम मिलाय के,

वह वृति रूप मटकी ब्रह्मत्व रूप आकाश में मिल कर लय हो गई ।

फिर पाछी नाहिं खिरत है ॥ ४ ॥

जो अब वह फिर पुनः संसार के पतन भाव को प्राप्त नहीं होगी ।

"इति श्री तीसरा भजन समाप्त"

भजन (४) छन्द भैरवी पद ६८

उलट भेद गम पाय के,

प्रपंच द्रष्टि से संसार भाव के उलटे भेद की गम को पाकर के

निज मड़े से काल डरत है ॥ टेर ॥

जीवन्मुक्त ज्ञानी जन ही निज मुर्दा है जिस से काल, यम-मृत्यु (समय) भी डरता है ।

अनड़ उड पाताल छिपायो,

नोट— अनड़ नामक एक पक्षी विशाल अति ऊँचाई पर आकाश में रहने का शब्द प्रमाण मिलता है ।

मन रूप अनड़ सकल मनोर्थ रूप आकाश से उतर कर सतगुरू देव के चरण कमल रूप पाताल में आकर शब्द की ओट में छुप गया । तब—

शैष भुजंग धरणी पर आयो,

लोक-परलोक के भोग वृति की दिवजिह्वा धारी काम रूप सर्प अनन्त वासनाओं की सहस्त्रों विषेली धारणाओं को लेकर धैर्य रूप धरणी पर आकर ठहर गया अर्थात् शील ब्रह्मचर्य = संयम को धारण किया ।

बैठो भुजंग गरूड़ को खायो,

काम रूप भुजंग = विषधर शीलता रूप अंग में बैठ कर क्रोध रूप गरूड़ को क्षमा द्वारा खा गया ।

कृष्ण आप पछुताय के,

कृष्ण = श्याम, काला-मन (संसारी सम्बन्ध वाला) रूपी सर्प पछुता कर रह गया।

पुण्डरीक डरे विचरत है ॥ १ ॥

पुण्डरीक = श्वेत रंग का साँप (सकाम मन), और पुण्डरीक-शुद्ध (श्वेत) मन रूपी सर्प भी अपने विलय होने के भय से उपासना-मार्ग के ज्ञान क्षेत्र में विचरने लगा।

दूध बिलोयो दही जमायो,

विवेक रूप दूध को विलोयो = विचार मन्थन करके वैराग्य रूप दही को जमाया = धारण किया।

माखन राख शैल को चायो,

ज्ञान रूप मख्खन को रख कर शैल = निश्चय अर्थात् चायो = चाह से, धारण किया।

उर अन्दर जब आनन्द आयो,

उपयक्त साधना द्वारा हृदय में आनन्द का अनुभव आगमन हुआ, तब

वचन बिना सुख पाय के।

मन-वाणी रहित अवाच्य सुख को प्राप्त किया। इसके परिणाम स्वरूप

फिर फेरा नहीं फिरत है ॥ २ ॥

अब पुनरागमन रूप चौरासी चक्र = फेरा नहीं फिरना है।

तलपा तज शूली पर आयो,

संसार सुख रूप तलपा = का त्याग करके तितिक्षार्चित ज्ञान रूप शूली पर आया अर्थात् ज्ञान की धारणा को प्राप्त किया।

यथा — ज्ञान कि पन्थ कृपाण की धारा ।
परत खगेस लगे नहीं वारा ॥

सूता शूली पर आनन्द थायो,

उस ज्ञान की द्रढता पर रहना ही शूली पर शयन है । जिस से अब आनन्द की प्राप्ति हुई ।

दुःख दोष को मूल मिटायो,

त्रिविध ताप रूप समस्त दुःख और षट् विकार रूप दोषों का मूल = अज्ञान को मिटाया = निवृत किया ।

सूली पर सेज बिछाय के,

ज्ञान रूप तप, ज्ञानरक्षा जन्य तितिक्षा सूली पर सेज = ब्रह्मनिष्ठा कर के रहा ।

अब नहीं कोई चुबे चिरत है ॥ ३ ॥

अब त्रिविध ताप, द्वन्दमय हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु, संकल्प-विकल्प आदि अनेक त्रिगुण मय चुबे = सूल नहीं लगते है ।

याने — सर्व दुःखन की निवृति,
परमानन्द की प्राप्ति-हुई ।

"उत्तमराम" गिरा बिन गायो,

श्री उत्तमराम (ज्ञानी सन्त) ने वाणी रहित होकर चित के चिन्तन में गाया विसंवादाभाव को प्राप्त किया और

अमृत तज हलाहल खायो,

संसार के पंच विषय रूप मीठे लगने वाले अमृत को त्याग कर के उपरामता के तिव्र वैराग्य = हलाहल को खाया ।

अजर अमर तभी हम थायो,

तब— "मैं" स्वयं स्वरूप का निश्चय कर के अजर = जन्म रहित, अजर = वृद्धत्व रहित और अमर = मृत्यु रहित थायो = हो गया।

साची बात सुणाय के, अग्नि में शौर ठरत है ॥ ४ ॥

यह सच्ची बात सुणाई कि - विरहाग्नि की ज्ञान ज्वाला रूप अग्नि में प्रपंच रूप शौर = फटाका के साथ त्रिगुण (जगत सहित) द्रश्य, ठरत = ठण्डा (शीतल) शान्त हो गया है।

"इति श्री चौथा भजन समाप्त"

भजन (५) राग छन्द भैरवी पद ६९

बैठा जल बिच आय के,

ज्ञान रूप जल के बीच आकर बैठा = अन्तरंग निश्चय प्राप्त किया। तब

अंग अंग में उदय अगन है ॥ टेर ॥

१- प्रति अंग (स्थूल) बहिरंग विरक्त चिह्न (वैराग्य के प्रतीक(१) अंग), २- प्रति शूक्ष्म अन्तःकरण, इन्द्रियादि आध्यात्म अधिदेव रूप (२) अंग में विरहाग्नि का उदय = संचार हो गया।

तिलों बीच में घाणी पीली,

विविध शास्त्रीय सार्थक सत शब्द महावाक्य रूप तिलों में संसार के व्यवहार को मन्थन करने में घूमने वाली भ्रमित बुद्धि रूप घाणी का अवलोकनपेलित किया अर्थात् बुद्धि को सत्शब्दों में विवेचित वैदिक अर्थ में लगाया।

अग्नि बीच में बाड़ी लीली,

वैराग्य रूप विरहाग्नि में भक्ति जन्य साधना की बाड़ी = सतसंग बगीची हरी-भरी रहने लगी, अथवा विरह में सतसंग, स्वाध्यांय, आत्मचिन्तन की बाड़ी-हरियाली है।

बजर बीच में जागा ढीली,

सच्चिदानन्द घन = ठसाठस परिपूर्ण ब्रह्म रूप वज्र के बीच में ढीली = पोल रूप स्थान में अनन्त ब्रह्मण्ड समा रहा हैं। यह रहस्य —

गुरू बिना गम पाय के,

त्रिगुण-अक्षर रूप गुरूके बिना अर्थात् त्रिगुण रहित गुणातीत का लक्ष्य प्राप्त किया।

लखे कोई बिना लगन है ॥ १ ॥

इसे संसार रूप प्रपंच की प्रीति रहित मायिक लगन के बिना कोई

विरले पुरूष ही जान सकते हैं।

लाखों में लाधे नहीं, करोड़ों में कोय।
अरब खरब करो एकठा, तभी एक या दोय ॥

लोह बीच में अग्नि तपाया,

कठिन हठयोग, मन्त्रयोग, राजयोग रूप लोहे के बीच में विरह अग्नि का लययोग जनक ताप तपा, क्योंकि —

ता अग्नि में शौर छुपाया,

उसी विरहाग्नि में ब्रह्मात्म ज्ञान रूप शौर = वैराग्य विहित

शौर = जोरों की आवाज देने वाला हल्ला देने वाला बारूद = ज्ञान का धमाका

छुपा हुआ गोपनीय (गुप्त) है।

उसी शौर में पाणी आया,

उसी ब्रह्मात्म वैराग्य ज्ञान रूप शौर = बारूद में शीतलता = स्थिरता रूप शीतलता का पाणी प्राप्त हुआ।

सोई पाणी सुखदाय के,

वही सीतलता का परमार्थ पाणी (जल) सुख देने वाला है।

कोई मुख बिन पीवे साजन है ॥ २ ॥

जिसको कोई विरला सज्जन (सत-भक्त, सन्त) जन ही जीव मुख, माया मुख, मन-मुख के विना गुरूमुखी पीवे-धारण कर सकता है।

जल सागर में अग्नि बाली,

(१) ब्रह्म रूप अथाह जल सागर के बीच त्रय ताप की ज्वाला = अग्नि जल रही है।

(२) अन्तःकरण रूप जल सागर में साधना काल में विरहाग्नि जलाई।

ता अग्नि में फूली डाली,

(१) उस त्रिताप की अग्नि में अविद्या रूप डाली फूल कर ससृटति रूप संसार का पसारा किया।

(२) उस विरहाग्नि में भक्ति की हरियाली डाली (वृक्ष की टहनी) फलित हुई।

उस डाली में ऊगा हाली,

(१) अविद्या रूप डाली में ज्ञान रूप हाली = जल्दी जल्दी उत्पन्न हुआ।

(२) भक्ति रूपा डाली में ज्ञान रूप किसान = हाली उत्पन्न हुआ।

हाली गयो हल खाय के,

(१) वह ज्ञान अज्ञान को खा गया।

(२) वह ज्ञान रूप हाली अज्ञान रूप हल = पृथ्वी जोतने वाला यंत्र याने सृष्टि के उत्पादक अज्ञान को खा गया = याने अज्ञान को नास कर दिया ।

सुख रूपी सदा मगन है ॥ ३ ॥

(१) वह हाली- ज्ञान सदा सुख स्वरूप है ।

(२) वह ज्ञान धारक (ज्ञानी) सदा सुखरूप आनन्दातिरेक मगन है ।

"उत्तमराम" कहै बाणी उलटी, समझवान संत समझे सुलटी ।

ऐसी संसार की व्यवहारिक भाव से उलटी भाषा की विपर्यय वाणी श्रैष्ठ-संत (उत्तमराम जी महाराज) कहते है जिस को समझवान = ब्रह्मज्ञान की बुद्धि को धारण करने वाले, संशय से तरने वाले सन्त आध्यात्मिक रूप से अर्थ करके सुलटी = सीधी जानते है ।

ज्ञान दुवारे सहजे पलटी, है ज्यों अर्थ समझाय के ।

ज्ञान मार्ग से सहजतया पलटी = बदलती है उसे जैसा का तैसा यथार्थ अर्थ समझाया गया है ।

सहज सहज सब को कहै, सहज न चीन्है कोय ।
पाँचो राखे पसरती, सहज कहावे सोय ॥ १ ॥

निज ज्ञानी लखे भिन्न भिन्न है ॥ ४ ॥

जिसको निज ज्ञानी = आत्मज्ञानी (ब्रह्मज्ञानी) एक एक शब्दार्थ भाव को अलग अलग सत्य रूप से जानते है ।

"इति श्री पाँचवा भजन समाप्त"

भजन (६) राग सारंग धुन आशा १८४

मड़े काल को खाया, गुरू जी !

मड़े = मुर्दे ने, काल = यम-मृत्यु ।

जीवन्मुक्त ज्ञानी रूप मुर्दे ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, यही काल को खाया।

आत्मनिष्ठ जिज्ञासु शिष्य अपना आश्चर्य सतगुरू जी ! के प्रति सम्बोधन करके सुनाता है।

यह गम गूँगे गाया ॥ टेर ॥

जीवन्मुक्त ज्ञानी ने यम को जीत लिया, यह गम = रहस्य भौतिक

मुख = जिभ्या रहित, वाणी के बिना ज्ञानमय मूक भाव के ज्ञानी रूप गूँगे ने लक्षणों से वरिष्ठ = पदार्था भाविनी, तुरिय अवस्था द्वारा दरशाया = गाया है।

बेटी निज माता को मारी,

बुद्धि रूप बेटी ने ममता रूप माता को भक्तिमय साधना द्वारा मारी = विनास (संयम) किया।

बैटे बाप को खाया।

मन रूप पुत्र ने मोह (अज्ञान) रूप पिता को खाया = ज्ञान प्राप्त करके मन को बदल दिया अर्थात् अज्ञान की निवृति की।

सकल कुटुम्ब संहार कियो जब,

काम, क्रोध, लोभ, मोहादि सकल स्थूल विकार रूप कुटुम्व = परिवार का संहार = नास किया तब

ससुर का खोज गमाया ॥ १ ॥

भ्रम रूप ससुर की संकल्प-विकल्प रूप वृतियों (पुत्रियों) से विवाहित मन ने भ्रम समूल खोज अर्थात् कई प्रकार के नाम, जाति, कुल, वंश, गौत्र, गाँव, धनादि द्रश्य व्यवहार स्थूल-शूक्ष्म भ्रम का खोज = निशान भी गमाया = खो दिया।

सूम होय के अनन्त उधरिया,

मन-इन्द्रियों को विषय-साधन बर्ताव रूप दान देना बन्द करके शम-दम क्रिया द्वारा शील (ब्रह्मचर्य) धारण करके (सूम होकर के) कई महापुरूष साधकों ने उद्धार पाया और

दाता नर्क सिधाया ।

उन मन-इन्द्रियों को इच्छानुसार भोग-प्रवृतियाँ देने वाले भोगी-संसारी दातार बारम्बार जन्म-मरण रूप नर्क यातना में गये है ।

माता मार पिता को मारे,

नोट — शूक्ष्म-स्थूल कारण सहित समस्त सृष्टि-शरीर द्रश्य की उत्पति का कारण अविद्या एवं अज्ञान है ।उस

ममता (अविद्या) रूप माता को मार कर मोह (अज्ञान) रूप पिता को नाश करे ।

सो भले सन्त कहाया ॥ २ ॥

सो = वही सन्त = संशय से तरने वाले ज्ञानी जन, भले = अच्छे कहलाये है ।

तीनों नारी तुरन्त संहारी,

प्रिय, मोद, प्रमोद वृति रूप तीनों नारी

(१) सुरति = श्रवण शक्ति (२) निरति = चक्षु शक्ति (३) स्मृति = बुद्धि की बोध शक्ति अर्थात् तीनों का संयम करके साधना द्वारा अपने स्वरूप में लय करना ही उनका त्वरित संहार है । अथवा अहंता, ममता, त्वंता तीनों नारी का नास किया ।

Scanned by CamScanner

द्विज का शीश उड़ाया ।

ज्ञान प्राप्त होने पर बोद्ध का शूक्ष्म अस्तित्व रूप द्विज अर्थात् शुद्ध मन का अहंत्व रूप शीश उडाया, अस्तित्व भान मिटाया ।

पापी एक परम पद पावे,

पीछे लिखा इतने परिवार का संहारक पापी = एक जीवात्मा अपने परम स्वरूप ज्ञान की ब्रह्मत्व स्थिति रूप पद को प्राप्त करता है । और —

पर तिरिया घर लाया ॥ ३ ॥

ज्ञानीजन विदुष मनीषी जनों की बुद्धि परक युक्तियों रूप परतिरिया (पर नारी) को अपने अन्तःकरण रूप घर में लाया = धारण करली ।

राजा को अब मार मनायो,

मन रूप राजा के स्वभाव का परिवर्तन करना ही उसे मार = मनाना है । ऐसा करके

चाकर राज कराया ।

चित रूप चाकर का चेत-चेता रूप चेतन, ज्ञान राज्य करने लगा ।

गाँव भाँभी को गाँव से निकालयो,

शरीर रूप गाँव की बेगार करने वाला अन्तःकरण रूप भाम्भी को बाहर किया अर्थात् मैं स्वयं स्वरूप द्रष्टा होकर उनको अस्तित्व हीन करना ही गाँव से निकालना है ।

भाम्भ = बैगार करना

नगरी में सुख थाया ॥ ४ ॥

सर्व गुण-धर्म प्रक्रिया शरीर अवस्था कोषादि का द्रष्टा होने पर अब त्रिताप के संकट से दूर हुआ और परम सुख

का अनुभव हुआ तब शरीर गत आधि, व्याधि, उपाधि से उपराम = हो गया ।

इतना मारया पाप नहिं लागा, अन्त मुक्त पद पाया ।

उपयुक्त कथन हुए इतने परिजन को मारने पर पाप नहीं लगा अपितु प्रारब्ध निःशेष होने पर अन्त में मुक्त पद = आवागमन रहित परमानन्द परमात्म सान्निध्य का सामीप्य भाव एकत्व प्राप्त किया ।

"उत्तमराम" अवधूत वैरागी, बून्द में सिंधु समाया ॥ ४ ॥

उत्तमराम जी कहते हैं कि — ऐसे श्रेष्ठ संशय से तरने वाले महापुरूष जो आशा-वासना रहित तत्व चिन्तन करने वाले वीतरागी ज्ञानी की आत्मा में ही परमात्म ब्रह्म बोध हो गया यही बून्द = आत्मा में सिन्धु = ब्रह्म समाया = प्राप्त करना है ।

"इति श्री छठा भजन समाप्त"

भजन (७) राग प्रभाती पद २५९

याका अर्थ करो भाई साधो, धन सन्तो धनकारा वे ॥ टेर ॥

यह भजन कर्म योग के भावार्थ का है सो इस प्रकार समझें कि — हे साधना करने वाले साधो भाईयों ! याका = इस भजन (पद) का अर्थ = भाव करो = समझो ।

धन्य है सन्त वार वार धन्य है, वर्तमान और भविष्य में भी धन्य है ।

दोय पुरूष पलक में पलटया,

(१) चन्द्र स्वर (२) सूर्य स्वर रूप दो पुरूष षट् श्वासा की एक पल की एक ही क्षण में बदलाया और

वाकी भई इक नारी वे ॥

वाकी = उस के बदलने से उसकी एक नारी = सुषुमणा, नारी = नाड़ी, भई = चलने लगी ।

नारी पलट के नर भयो है,

सुषुमणा का साधन करने पर वह नारी = नाडी बदल कर ध्यान रूप पुरूष = नर हो गया।

नर जाई फिर नारी वे ॥ १ ॥

उस ध्यान रूप नर = पुरूष द्वारा फिर नारी (स्त्री) = शान्ति की उत्पति = प्राप्ति हुई।

बिन नैनों इक नगर देखिया,

ध्यान काल में अन्तर्हित निरत वृति के चॉचरी मुद्रा साधन से ज्योति, भ्रमरगुफा तथा आगे गगन मण्डल रूप एक नगर का दर्शन किया।

महिमा नगर की भारी वे।

उस गगन मण्डल नगर की महिमा = उपमा महान है।

कर बिन बाजा मधुरा बाजे,

वहाँ पर बिना हाथों की क्रिया से दश प्रकार के मधुर ध्वनि की धीमी गति से घंटा, नाद, बांसुरी, ताल, मृदंग, वीणा, झालर, शहनाई, शंख, झिनझिना आदि दश प्रकार के विभिन्न बाजे बजते है।अगोचरी मुद्रा साधन द्वारा वह सुने जाते हैं।

राग छतीसौं न्यारी वे ॥ २ ॥

और वहाँ विविध छः राग सहित तीस रागनियों का संगीत होता है।

नोट — छः राग, छतीसों रागनियों, दश नाड़ी, दश बाजों के नाम - **विश्वकर्मा कला दर्शन** (भाग ३) नामक हमारे ग्रन्थ में देखें।

बिन घन-बादल बून्दों छिटकी,

वहाँ पर बिना मेघ के गरजन तथा बिना बादल के शान्त जन्य बून्दें बरसती है।

मेघ = गरजने वाला, बादल = बरसने वाला।

वर्षे अमृत धारी वे ॥

मुर्ध्दनी स्थान में उन्मुनी मुद्रा द्वारा प्राप्त होने वाले अमृत की धारा भी वहीं से उत्सृजित होती है।

गुरू का प्यारा उत्तम जिज्ञासी, पीवे संत सचियारी वे ॥ ३ ॥

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा सहित साधन करने वाला उत्तम जिज्ञासु साधक सतगुरू की युक्ति से गुरू का प्यारा = भक्त ही सांच को धारण करने वाला वह अमृत पीता है।

नोट — योग साधना के लिये "योग प्रदीप" (पतंजली) अथवा **"उत्तम बाल योग रत्नावलि"** (उत्तम प्रकाशन) को पढ़ें।

देही बिना वहाँ देव बिराजे,

वहाँ उपयुक्त दशवाँ द्वार में शरीर के आकार से रहित शुक्ष्म रूप परम चेतना परमात्म-ईश्वर देव विराजमान है।

वासे लगी है यारी वे ॥

उसी चेतन पुरूष देवता से हमारी यारी = प्रीति लगी है।

"उत्तमराम" कहै सुणजों सन्तों,

स्वामी उत्तमराम जी महाराज का कथन है कि — श्रेष्ठ साधक पुरूष (साधु) ऐसा कहते है सो हे सन्तों संशय रहित होकर श्रद्धा-विश्वास सहित सुणजो = श्रवण करना।

मैं वाकी बलिहारी वे ॥ ४ ॥

मैं उसी सन्तों अथवा उन परम पुरूष देव (ईश्वर) के लिये अपने समस्त बल को न्योछावर करके बल हारता हूँ। तनबल, मनबल, धन बल, जन बल, बाहूबल, सैन्य बल,

कुल-कुटुम्ब बल इत्यादि सभी बल को हारने का अर्थ बलिहारी जाना है ।

दोहा

सिद्ध साधक ज्ञानी सती, दानी कवि अनेक ।
गूढार्थ विपर्यय लखे, रामप्रकाश विवेक ॥ १ ॥
गूढार्थ सन्त मति गति, अटपट है विपरीत ।
झटपट लखता जो करे, रामप्रकाश मन जीत ॥ २ ॥

कवित-छन्द

योगी को प्रमोदे नट, भक्त को प्रमोदे भट ।
ज्ञानी को प्रमोदे जट, विपरीत सार है ॥
सन्त को प्रमोदे दंभी, धर्मी को अधर्मी जैसे ।
सती को प्रमोदे तैसे, व्यभिचारी नार है ॥
धनी को निर्धनी जैसे, दानी को कंजूस जैसे ।
सदाचारी सुने तैसे, व्यशनी के विचार है ॥
ऐसे कलिमा ही आज, भेषधारी देखियत ।
साची बात कौन सुने ? कलि के आचार है ॥ ३ ॥
सूर को पंतंग जैसे, सत्यता को कूर जैसे ।
कायर कहत तैसे, वीर को गुँजार से ॥
जाट को प्रमोदे भाट, दरिद्री के आगे थाट ।
कपूत कहत जैसे, सपूत को वार से ॥
साधु को प्रमोदे साद, मजीर तन्दूर वादी ।
गाय को प्रमोदे जैसे, भैंस व्यवहार से ॥
ऐसे कलि मांहि आज, भेषधारी देखियत ।
साची बात कौन सुने, कलि के आचार से ॥ ४ ॥

श्री हरि गुरू राम सच्चिदानन्दायनमः

देदीप्यमान इतिहास सूर्य के १४५ वर्ष पूर्व हुए
ब्रह्मवेता श्री राम सतगुरू के शिष्य

श्री संत हरिसिंह जी महाराज कृत

उत्तम ज्ञान कटारी प्रारम्भ

श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर (भाग-२)

दोहा छन्द

वृत्ति व्याप्ति एकाग्र चित्त, यही हमारो ध्यान ।
ब्रह्म रूप गुरू राम को, नमस्कार सोई मान ॥ १ ॥
परम गुरू श्रीराम के, चरणे राखूं ध्यान ।
प्रस्तावी में कहत हूँ, ग्रन्थ कटारी ज्ञान ॥ २ ॥

इदव छन्द

लोह कटारी सबै कोऊ बाँधत, ज्ञान कटारी सु दुर्लभ भाई ।
लोह कटारी जु खाय मरे पुनि, सो अवतार धरे भव माँई ॥
ज्ञान कटारी को खावत हैं सन्त, ब्रह्म स्वरूप अखण्ड हो जाई ।
फेर कबुहूँ जन्मे न मरे, हरिसिंह नहीं कछु ताप रहाई ॥ ३ ॥

मनोहर छन्द

ज्ञान को प्रकाश सो तो, हीरा मणि रत्न जैसो ।
ताको अंधकार कहै, पामर ठहराय के ॥

ऐसो ही अन्याय करे, ताही से चौरासी फिरे।
बेर बेर कहा कहो, तोहि समझाय के॥
धिक्क तेरो जीवन है, मिथ्या नर देह धरी।
मरे क्यों न मूढ़ तॅू, कटारी पैट खायके॥
हूँ तो हरिसिंह सुख, दुःखहू ते न्यारो खाय।
ज्ञान की कटारी सत, गुरू गम पायके॥४॥
हीरा मणि रत्न सोतो, जड़हि प्रकाश आप।
आप को न जाने तासु, जानो एक देसी है॥
ज्ञान तो स्वयं प्रकाश, आपको भी जाने पुनि।
चिदानन्द एक रस, शुद्ध सर्व देशी है॥
जान तू स्वरूप तेरो, अस्ति भांति प्रिय ऐसो।
दुःख रूप मानि रह्यो, तेरी मति कैसी है॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह को तू माने मूढ़।
मेरो कह्यो माने तो, कटारी खाय जैसी है॥५॥
भक्ति सो न जाने प्रभु, न्यारो करि माने ऐसा।
होत है हरि को द्रोही, फेर चित्त चाय के॥
भक्ति अरू ज्ञान इक, भिन्न हि न जानो कोउ।
एकता है भक्ति कृष्ण, कही गीता गाय के॥
लोक हू रिझावे, राधा-कृष्ण को विहार गावे।
निन्दा में अस्तुति माने, मन में सराय के॥

कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारि पैट खाय के॥६॥
अज अविनाशी एक, अखण्ड अपार प्रभु।
ताको तो कहत झूंठे, हाथ को बनाय के॥
जगत के मात तात, ताकि तो उघारी बात।
केते हो तू नाचे कृष्ण, गोपी बनि आयके॥
अजन्मा को जन्म जाने, वेद की न बात माने।
ताते जात काल ही के, मुख में चबाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥७॥
आप होय जीव पापी, व्यभिचारी भक्ति करे।
कहै प्रभु पाऊगों मैं, वैकुण्ठ हूँ जाय के॥
कोउ तो कहत मोक्ष-मोक्ष हुं शिला के मांहि।
कोउ तो कहत, गौ लोंक महुं धाय के॥
देश काल वस्तु परिच्छेद से रहित प्रभु।
तको कहै एक देशी, मन में फुलाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥८॥
करि सत संग सुधा, रस क्यों न पीवे तूँ तो।
होत है बहुत राजी, विषय लपटाय के॥

बांधे टेढ़ी पाग पैरे, धोती सो किनारीदार।
अंग पर ओढ़ि लेत, दुपट्टो रंगाय के॥
बोले मीठी बात कहै, बहुत सिहानों सत।
संग में न आवे कभी, लोक में लजाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पैट खाय के॥ ९ ॥
ज्ञान की कटारी कसि, बांध तेरी कमर से।
जाय सतगुरू पास, लीजिये सजाय के॥
शुद्ध ही विचार करि, मार काम क्रोध हि को।
म्यान से निकालि लेउ, हाथ में हलाय के॥
कर याकी चोट आर-पार, हि निकासी तेरो।
जान तू स्वरूप जीव, भाव को मिटाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥ १० ॥
दुर्लभ ते देह धरि, कहा ते कमाइ करि।
भूल्यो निजानन्द हरि, देह बुद्धि लाय के।
जन्त्र मन्त्र साधे भूत-प्रेत हि को बान्धे तासें।
काया क्रम बान्धे "देह-भाव दे जलाय के"॥
बेर बेर नाहि नर, देह तोको आवे ऐसो।
मुक्ति को दुवार देत, धूलि में मिलाय के॥

कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥११॥
जप रे अजपा जाप, सोई है तू आपो आप।
निश्चय करि मान ध्यान, बैठ जा लगाय के॥
देह बुद्धि टारि रूप-आपको सम्भारि काम।
क्रोध लोभ मोह याको, दीजिये भंजाय के॥
शुद्ध तू स्वयं प्रकाश, छोड़ दे विरानी आस।
होत क्यूं हैरान मूढ़, मिथ्या में गंठाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥१२॥
शुद्ध हि विचार सो फोलाद की कटारी करि।
गुरू जु लुहार पास, लीजिये घड़ाय के॥
घड़ि भले घाट याको, अग्नि मांहि ताति करि।
प्रेम रूपी पानी वाको, दीजिये चढ़ाय के॥
नाम रूप रहित सु, कटारी दुरुस करि।
शुद्ध बुद्धि म्यान तामें, राखिये दृढ़ाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पैट खाय के॥१३॥
करि चारों धाम सबै, तीरथ में घूम्यो अरू।
भयो है पवित्र गंगा, गोमती नहाय के॥

कीनो हठ जोग तासें, जायगो क्या रोग मूढ़ ।
इच्छा स्वर्गादि भोग, बैठो क्या कमाय के ॥
तासें तेरो जनम रू, मरण जु नहीं छूटे ।
तूतो निजानन्द घन, उलट समाय के ॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि ।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के ॥ १४ ॥
खीर नीर एक जानि, दूध सो तो डारि दीनों ।
कियो न विचार बैठो, पानी को जमाय के ॥
तासे तो तू सार क्या, निकासेगौ मथन करि ।
आप भूलि और हि को, भुलावे भरमाय के ॥
मुख से कहत एक, आतमा सकल मांहि ।
देखि परदोष चित्त, तेरे में रमाय के ॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि ।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के ॥ १५ ॥
आप जो कहत बात, ज्ञान की बनाय करि ।
मन में रहत राजी, लोक में पुजाय के ॥
कहै बात और कोऊ, ज्ञान किसी को तब ।
जाने मेरो मान गयो, मरे यों मुर्झाय के ॥
जाने एक मैं हि होतो, द्वैत भाव छूटि जाय ।
अन्दर की आग तेरी, बैठ तू बुझाय के ॥

कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥ १६ ॥
देह अभिमानी क्या, बिलोवे बैठो पानी बात।
काहु की न मानी तू तो, बोलत चगाय के॥
आप को अधिक जानि,और की तों हंसि करे।
काहु सें मरत सोते, साँप को जगाय के॥
बहुत कमायो धन, पेट में न खायो पर-।
तिय सों लुभायो कुल, बैठो है डुबाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥ १७ ॥
बजावे मृदंग ताल, खासा गावे आप ख्याल।
रहे आठोयाम रंग-राग में भिजाय के॥
आप की सराहे बात, और की न भावे देखो।
आपको अधिक मानि, मूँछ मुरड़ाय के॥
हरि के न गावे गुण, विषै बात भावे मुख।
ज्ञान की तो बात सुनि, ऊठत खिजाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खाय के॥ १८ ॥
हंस ही कहावे अरू, लच्छन तो काग ही के।
बोलत गुमान भरी, मुख मुस्काय के॥

हंस सो तो मोती चुगे, मांस को खावत काग।
बैठे छोटे देश पर, फिर हि फिराय के॥
ऐसे खल लोक सोई, सारहि को त्याग करि।
वस्तु जो असार ताको, राखत गृहाय के॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ १९ ॥
कहावे कपूर देन, हींग की तो वास नाही।
नाम धनपाल धरे, भीख मांगे खायके॥
पढ़यो हैं वेदान्त कछु, बोलवे को सीख्यों तब।
वाद हि विवाद करे, युगति लगायके॥
पोपट ज्यों बोले हदे, ग्रंथि सो न खोले, सारी।
सार ही को लेता नहिं, रह्यो है ठगायके॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २० ॥
बनिज को आयो कहां, हासिल कमायों धन।
गांठ को गमायो भयो, भिखारी लुटायके॥
सीख्यों चारों वेद बहु भेद, ताको जानो नहि।
फिरत हो योंही खाली, बोझ को उठायके॥
धन ही अखूट तेरे, हाथ सों गमाय करि।
आप खूटी और को तू, देत हो खुटायके॥

कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २१॥
सतगुरू देव ब्रह्म-वेता के शरण जाय।
चौरासी के फंद तोको, देवेंगे छुड़ायके॥
कौन हूँ मैं, कांसे आयो, करि ले विचार ऐसो।
देह रूप होइ रह्यो, देह में जुड़ायके॥
देह को प्रकाश तीन-काल में न होइ देह।
काहे को तू बंध फिरे, छूट जा तुड़ायके॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २२॥
बाहिर से वृत्ति तेरी, खेंचि कर भीतर को।
सोहं सोहं जाप सदा, रह्यो है जपायके॥
आंब को उखांड़ि पेड़-बबूल को बीज बोवे।
ताको तू करत बाड़, चन्दन कटायके॥
हीरा सो तो मूठि भरि, फेंकि देत द्वार बारि।
जूति को जतन करि, राखित छुपायके॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २३॥
तू तो चिदानन्द घन, आतमा अखंड ताको।
जीव जानि देवे भव-सिंधु में डुबायके॥

नाहि तीन देह तेरे, स्थूल अरु सूक्ष्म ज्यों।
कारण को साक्षी होइ, दीजिये उड़ायके॥
काज न अकाज कछु, कियो न विचार, घर।
बार तजि जाइ बैठो, मुंड हूँ मुडायके॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २४॥
जाति कुल वरण को, तज्यो अभिमान मात।
तातहि को नाम सो तो, दीनो है भुलायके॥
और हि चढ़ायो रंग, बाढ़यो अभिमान देखो।
काढ़ि के बिलाड़ी बैठो, ऊंठहि घुसायके॥
लोक में पुजावे आप, गुरू हि कहावे मन।
बहुत फुलावे देखो, पँच में पुछायके॥
कहै हरिसिंह मिथ्या, देह में अध्यास करि।
मरे क्यों न मूढ़ तू, कटारी पेट खायके॥ २५॥

सवैया छन्द

दुर्लभ देह धरी सो खरी, तबही सतसंग तैं नाहि कियो।
विषै भोग को भाव करी कपटी, भवसागर पूर में जात बह्यो॥
तू तो पुत्र पशु धन धाम दारा सब, मेरो हि मेरो करि मोहि रह्यो।
हरिसिंह के शुद्ध विचार बिना ऐसो, मूढ़ को मालिक होइ रह्यो। २६।
सुखी होय दुःख दूर तेरो, सत संग में जा मेरो मान कह्यो।
तू तो भुलिगयो इक भक्ति सबै, ब्रह्मज्ञान पदारथ क्यों न गह्यो॥

तुच्छ भोगा नि काज उपाय अनेक, करी शठ संगति आयु बह्यो ।
हरिसिंह के शुद्ध विचार बिना ऐसो, मूढ़ को मालिक होइ रह्यो ॥ २७ ॥

मनोहर छन्द

करत गुमान एक, देह अभिमान ऐसो ।
आप माहि आपौ आप, फूल्यो ही फिरत है ॥
नाहि वपु तीन तेरे, चेतन स्वरूप शुद्ध ।
गीता गुरू वेद वाक्य, साख जो भरत है ॥
सार रु असार हि को, करिले विचार आप ।
देह को हुं मानि मूढ़, काहे को मरत है ॥
जानो हरिसिंह सत-गुरू गम भयो तब ।
चौरासी के फंद हूँ में, कभी न परत है ॥ २८ ॥

दोहा छन्द

हर्ष शोक मन को गयो, शांत भयो है चित्त ।
सतगुरू राम प्रसाद ते, जान्यो नित्य अनित्य ॥ २९ ॥
नित्यानित्य विवेक से, भई अविद्या नाश ।
हर्ष शोक ते रहित जो, सोई ब्रह्म प्रकाश ॥ ३० ॥
आप प्रकाश अखंड हो, सत चित आनन्द रूप ।
हरिसिंह मन ते परे, सोहं ब्रह्म अनूप ॥ ३१ ॥
ज्ञान कटारी ग्रन्थ यह, सूक्ष्म कह्यो जु भाय ।
शुद्ध मुमुक्षू पर सदा, अज्ञ तज्ञ पर नाय ॥ ३२ ॥
उन्नीस सौ छः में वरष, भयो सम्पूर्ण जान ।
मृगसिर मास रु शुक्ल तिथि, नवमी अरू भृगु मान ॥ ३३ ॥

उत्तम ज्ञान कटारी ग्रन्थ सम्पूर्ण

॥इति श्री रामप्रकाश शब्द सुधाकर (द्वितीय भाग) समाप्त ॥

जन्य बोध सिद्ध ग्रन्थ है। जिसका भारत प्रसिद्ध रामानन्दाचार्य पीठ श्रीमठ (काशी) प्रतिष्ठान जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री स्वामी राम-नरेशाचार्य जी महाराज (मुख्य अतिथि) द्वारा श्री अग्रद्वार पीठाचार्य स्वामीराघवाचार्य जी महाराज (वेदान्ताचार्य) की अध्यक्षता में हजारों सतसंग प्रेमी जिज्ञासुओं की समुपस्थिति में वि० सं० २०४७ ज्येष्ठ शुक्ला १० गंगादशमी (गुरु दीक्षा पर्वोत्सव) के पावन अवसर पर सफल विमोचन हुआ। ग्लेज कागज २०X३०/८ की साईज में ६५० पृष्ठों २५० फोटो ब्लॉक ऐवँ कागज छपाई आदि लागत मात्र मूल्य ।

सन्तदास अनुभव विलास (गुरु स्मृति पाठ)

यह काव्य ग्रन्थ श्री रामनन्दीय अग्रद्वारस्थ श्री वैष्णव निर्गुण धारा की विशाल रामस्नेही-परम्परा के उद्गम गुरु धाम (दांतड़ा) के वैरागी भारतीय सन्त परम्परा के प्रकाशमान उज्वल नक्षत्र आचार्य सर्व श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज "गूदड़" द्वारा रचित हैं। इसमें निर्गुण श्री राम-उपासना मयी भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, पाखण्ड, चेतावनी सहित राष्ट्रीय स्तर से सन्त सिद्धान्त मयी विशिष्ठाऽद्वैत कथन करते हुऐ १५६० दोहादि छन्दों में ५७ विषयाङ्गों सहित विविध उपदेश साग्रमी संकलित है। रामानन्दाचार्य श्री स्वामी रामनरेशाचार्यजी महाराज की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश राज्यपाल डॉ. सत्यनारायण रेड्डी द्वारा श्री आद्यरामानन्दा-आर्य की ६९१ वीं जयन्ति पर दिनांङ्क ५ जनवरी १९९१ को काशी नगर में सफल विमोचन हुआ था।

अचलोत्तम गुरू ज्ञान गीता (भाषानुवाद)

इसमें महेश्वर पार्वती के संवाद में गुरु महत्व, गुरु शब्दार्थ, अचल-उत्तम राम गुरु स्वरुप ज्ञान प्रसाद का श्लोकानुवाद करके

सरल भाषा में गुरु तत्व-सगुण-निगुण विवेचन कहा है।

अन्त्येष्ठि संस्कार दर्पण (शवयात्रा)

इसमें चार सर्गाध्याय कथन करके रोगी की रूग्णावस्था में सेवा, प्राण-त्याग विधि, अन्त्येष्ठ दाह सस्कार, अग्नि प्रदीप्न, अस्थि प्रक्षालन, मृतक दशाह्वन क्रिया आदि हिन्दू सस्कार सनातन नीति का कथन है।

रामप्रकाश भजन माला

इसमें आध्यात्मिक विषय पर अनेक राग रागनियों मे बने भक्ति, ज्ञान, नीति विवेचन विषय के कुल 117 भजन है।

सत्यवादी वीर तेजपाल

इसमें राजस्थान के प्रसिद्ध वीर तेजाजी के अपूर्व सम्पूर्ण जीवन चरित्र को विस्तार से सरल भाषा में लिखा है। जिसके अन्त में लोक गीत भी दिये हैं।

रामदेव ब्रह्मपुराण

रामदेवजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र सायर मेघवाल के घर जन्म से लेकर समाधि तक एवं उनकी अनूठी सिद्धियों का सरस भाषा में वर्णन है।

गोरख बोध वाणी संग्रह (दो सौ वर्ष पुरानी)

इसमें मच्छन्द्रनाथजी और गोरखनाथजी का प्रश्नोत्तर श्री दत्तात्रय स्वामी एवं गोरख संवाद प्राचीन छन्दों का सरलानुवाद सरल भाषा-टीका में किया गया है, अन्त में कई भजन भी दिये हैं।

देवीदान कल्पतरू अर्थात् सुगम उपचार दर्शन

इसमें कई प्रकार की जड़ी-बूटियों, को आयुर्वेदिक दवाओं के परीक्षित नुस्खे सैकड़ों रोगों के अनेक घरेलू उपचार जो आज से

सतर वर्ष पहले प्रसिद्ध महात्मा देवीदानजी द्वारा संकलित एक "देवीदान अनुभव प्रकाश" पुस्तक छपा था जिसे पूर्ण रूप से अकारादि क्रम से संशोधित, संकलित एवं परिवर्द्धित करके नये अर्थानुकूल नाम से छपा कर तैयार करवाया गया है।

श्री तिलक दर्शन (तीन भाग)

इस पुस्तक के प्रथम भाग में साधु-धर्मात्मा ललाट आदि में तिलक क्यों लगाते हैं? यह क्यों जरूरी है? इसका महात्म क्या है? इसका विस्तार सुलभ धर्म-सम्प्रदाय सिद्धान्त सहित पहिचान व्यवहारिक साधना के प्रतीक सामाजिक मान्यता में धर्म शास्त्रों का सटीक प्रमाणित उत्तर दिया है। दूसरे भाग में हिन्दू-समाज के सङ्गठन सूत्र हेतु जाति शब्द क्या है? यह होना या नहीं होना? वर्ण और जाति मे अन्तर तथा जातीय भेद-भाव अश्पृश्यता विदारक सनातन धर्म शास्त्रों की तार्किक बात कविता में लिखी गई है जो समाज सुधारकों के लिये आज आवश्यक सामग्री है। तीसरे भाग में कई राग-रागनियों में विभिन्न संगीत मय भजन लिखे हैं।

अन्त में उत्तम प्रकाशन की प्रसिद्ध पुस्तकों का सूचिपत्र दिया है

उम्मेद आनन्द बोध प्रकाश (द्वितीयावृति)

यह पुस्तक श्री बनानाथजी महाराज के परम शिष्य श्री स्वामी उम्मेदरामजी महाराज कृत रचना-भजन हैं, जो संवत् १९९१ में प्रथमावृति छपी थी। सुदुर्लभ द्वितीय संस्करण की कुछ प्रतियां पड़ी है पाठक मंगवा कर लाभ उठाएं।

विशेष सूचना-

उत्तम आश्रम द्वारा सम्पादित अन्य बाहरी सन्तों की विभिन्न पुस्तकें जैसे-संत रणछोरामजी, सन्त दुर्बलदासजी, संत लहरीरामजी, संत मलूकादासजी, संत किशोरदासजी 'सूफी', भक्त बीजाराम वेदांती

संत खेतारामजी, संत भूमारामजी, संत शंकररामजी, संत चन्दन-शाहजी, संत कबीररामजी, संत छोगारामजी एवं सूरजरामजी, संत नवलरामजी, संत चन्द्रारामजी, संत भवानीरामजी, संत निर्मलपुरी जी, इत्यादि सन्तों के रचना ग्रन्थ भी मंगवाकर पढ़ने का लाभ उठावें।

सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)

यह पुस्तक स्वामी अचलरामजी द्वारा संकलित एवं स्वामी अचलनारायणजी द्वारा सम्पादित का परिवर्तित तथा परिवर्द्धित संशोधित दुर्लभ संस्करण है जो वर्षों से अप्राप्य था। इसमें अनेक रोगों के लक्षण एवं विभिन्न प्रकार, उनकी देख-भाल, बचने के उपाय, निदान-पथ्यापथ्य सहित अनेक तरह के इलाज विविध यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र सहित देशी जड़ी-बूटियों का विवरण देकर मनुष्य के स्वास्थ्य को सबल-आरोग्य बनाने के उपाय लिखे हैं।

सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)

यह पुस्तक उपयुक्त श्री स्वामी अचलरामजी द्वारा संकलित एवं स्वामी अचलनारायणजी द्वारा सम्पादन का परिवर्तित तथा परि-वर्द्धित संशोधित दुर्लभ संस्करण है। इसमें स्त्री पुरुषों के अनेक गुप्त/प्रकट समस्त रोगों के लक्षण, पथ्यापथ्य सहित अनेक इलाज लिखे हैं। साथ ही नशा-रोग, अनिद्रा, चर्मरोग, बालकों के रोग, विषघात इत्यादि में काम आने की अतीव सुगम चिकित्सा का कथन है

नीति दर्शन - इन्दव छन्द

गंग सरित लखे, तुलसी वृक्ष, कपि समान लखे हनुमाना।
संत की जात, लखे गुरू मानव, राम हि नाम को मंत्र बखाना॥
सलिल कहै चरणामृत को अरु, गुरू प्रसाद को झूंठ न जाना।
"मुक्त विदेह" मन देख विचार ही, यह जग जान हूँ नर्क निशाना॥ १॥
नृप को न्याय रु नीति मलीन ही, द्विजाहि तोष विषय निज बाला।
गृही न संत की सेव करे अरु, भूत भजे तज देव दयाला॥
मंत्री को द्रोहरु गुरू को निन्दक, रति विषय मति कोक विचाला।
"मुक्त विदेह" मन देख विचार के, यह षट् जान हूँ कर्म चाण्डाला॥ २॥
षट् चार अट्ठारह नवो मथि के, सब संतन कीन जु एक मता।
गुरू ज्ञान बिना थिति होत नहिं, नभ भूतल ज्यों बबुरा के पता॥
भगवत बिना जग जीव भ्रमे, जित जात जिते तित खात खता।
"मुक्त विदेह" मन देख विचार के, राम रता सोई पार गता॥ ३॥
संत को भूषण शान्ति सदा चित, वीर को भूषण तेग प्रहारा।
मूरख भूषण मौन धरे मुख, बुद्धि को भूषण बोद्ध विचारा॥
भूप को भूषण नीति भलि कहे, भामिनाी भूषण लाज संभारा।
"मुक्त विदेह" मन देख विचार के, दान दया सु जीवों हितकारा॥ ४॥
सब वेद पुराण को भेद कहूँ, यह मुक्त विदेह का झूलना जी।
धन जोभन रंग पतंग जिसो यक, फोकट देख न फूलना जी॥
गुरू संत अनंत की सेव कीजे जग, भामिनी देख न भूलना जी।
और बघोरक छोड़ सभी हरि, नाम हीरा मुख बोलना जी॥ ५॥

छप्पय छन्द

रति मराल, मधु रसवार, संगम वनराय हि छाने।
देख कबूतर काम, पंख पत्रि घर आने॥
चन्दन जाय पनंग, स्वाति ऋतु सीप सहोरे।
अजा बहै ना कूप, रूख रहे ना कर जोरे॥
आदम सुना परख जो मनख, श्वान व्रत दिन ठानिये।
जन "रज्जब" मनुषा देह धिक, आतमराम न जानिये॥ ६॥

उत्तम आश्रम का प्रसिद्ध उत्तम साहित्य

१. हरिसागर (स्वामी हरिराम जी वैरागी कृत)
२. वाणी प्रकाश (छः संतों की बाणी)
३. अचलराम भजन प्रकाश (४२५ भजन, सैलाणी)
४. उमाराम अनुभव प्रकाश (संशोधित संस्करण)
५. उत्तमराम भजन प्रकाश (ग्लेज कागज)द्वितीयावृत्ति
६. अवधूत ज्ञान चिंतामणि (झूलना, इन्दव, दोहा, चौपाई)
७. पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन) शोड्रष कर्म सचित्र विधि
८. भारतीय समाज दर्शन (वर्ण व्यवस्था का प्रचीन रूप)
९. नशा खंडन दर्पण (२५ नशों की त्याग विधि, इतिहास)
१०. विंश्वकर्मा कला दर्शन (कला, मुहुर्त, पूजन अनुच्छेद) तीन भाग में
११. रामप्रकाश शब्दावली, (प्रश्नोत्तर भजन एवं वेदांत पदार्थ)
१२. रामप्रकाश शब्द सुधाकर (७ द्वीप ४६ खण्ड, गर्भचेतावनी)
१३. रामप्रकाश भजनमाला (११७ भजन विविध रागों में)
१४. राम रक्षा अनुष्ठान संग्रह (२१ रक्षाऐं साधन विधि)
१५. गुढार्थ भजन मंजरी (१०८ दोहा सटिप्पणी)
१६. अचलोतम गुरूज्ञान गीता (सरल भाषानुवाद, बड़े अक्षर)
१७. अन्त्येष्ठि संस्कार दर्पण (शव यात्रा) चार सर्ग में दिधि)
१८. गौरख बोध वाणी (संग्रह प्रश्नोत्तर, टीका सहित)
१९. देवीदान-सुगम उपचार दर्शन, औषधि कल्पतरू
२०. रत्नमाल चिंतामणि (प्रथम भाग) प्रश्नोत्तर उपदेश दोहा
२१. रामायण मन्त्र उपासना (रामायण की सिद्ध चौपाईयां)
२२. एक लाख वर्ष का पत्राकार कैलेण्डर (ई. सन् मास ता.)
२३. उत्तमबाल योग रत्नावली (कर्म, स्वर, ज्योतिषयोग)
२४. तिलक प्रबोध दर्शन) (तीन भाग)
२५. आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र सम्प्रदाय शोध)
२६. श्री संतदास अनुभव विलास (दान्तड़ा पीठ)
२७. उत्तमराम अनुभव प्रकाश (३२१ भजन)

पता :— उत्तम आश्रम, कागामार्ग, जोधपुर ३४२००६

अधिकृत विक्रेता

अपने शहर के प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता से खरीदें ।